

मैथिली साहित्य • आलोचना • अनुसन्धान

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

कविता, काव्यालोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्श



गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादन : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • २०२६

मैथिली साहित्य • आलोचना • अनुसन्धान

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

कविता, काव्यालोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्श

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादन : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

संस्करण : २०२६ • पुस्तकाकार आकार : ६ × ९ इंच

अनुक्रमणिका

विषयविन्यास आ अध्याय-आरम्भक पृष्ठ

भूमिका	4
१ अग्नि-शिखा : कविताक अग्नि आ जनप्रतिरोध	5
२ अथातो काव्य जिज्ञासा : कविता आ समकालीन समाज	39
३ प्रथम पुरुष : काव्यालोचनाक नूतन प्रतिमान	75
४ नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान	88
५ प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति	123
समेकित उपसंहार	148
विस्तृत सन्दर्भ-ग्रन्थावली	149

भूमिका

वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्यक एकटा मुख्य विशेषता ई अछि जे ओ मैथिलीक रचनात्मक भाषाकें जनजीवनक अस्थिरता, सामाजिक प्रश्न आ आलोचनात्मक विवेकसँ जोड़ैत छथि। हुनक कवितामे मिथिला स्मृतिक स्थिर भूगोल नहि, भूख, श्रम, भाषिक अधिकार, नगर-विस्थापन आ नागरिक असहमतिक जीवित परिवेश अछि। हुनक आलोचनात्मक गद्यमे परम्परा, आधुनिकता, सौन्दर्यशास्त्र आ साहित्यक सामाजिक दायित्वक प्रश्न पुनः-पुनः उभरैत अछि।

एहि पोथीक पहिल दू अध्याय ‘अग्नि-शिखा’ आ ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’क कविताकें स्वतंत्र रूपसँ पढ़ैत अछि। पहिल संग्रहमे जन-संघर्ष आ भाषा-अस्मिताक उग्र स्वर देखल जाइत अछि, जखन कि दोसरमे पर्यावरण, विकासक विडम्बना, बजार, लोकतन्त्र आ काव्य-वस्तुकरणक बहुविध प्रश्न विस्तार पबैत अछि। कविता-पाठक विविधता बचबैत दुनू संग्रहक पारस्परिक सम्बन्ध बूझब एहि अध्ययनक आधारभूत उद्देश्य अछि।

तेसर अध्याय ‘प्रथम पुरुष’क माध्यमँ आलोचनाक आत्मपरीक्षण करैत अछि। रामकाव्य, बिम्ब-विधान, परम्परा-प्रयोग आ समकालीन कविताक विवेचनमे मल्लिक विचारक प्रमाण, भाषाक संवेदना आ रूपगत विवेककें महत्त्व दैत छथि। चारिम अध्याय ‘नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान’मे पाठ आ प्रदर्शन, लोककला आ रंगसंस्था, रंगभाषा आ सामाजिक स्मृतिक सम्बन्ध खोजैत अछि। पाँचम अध्याय विद्यापतिक प्रेम आ सौन्दर्यपर लिखल विस्तृत आलोचनात्मक कृतिक नौ अध्यायकें विषयवार एकत्र करैत अछि।

एहि पाँच ग्रन्थक सहअध्ययनसँ एकटा व्यापक सूत्र स्पष्ट होइत अछि : मल्लिकक साहित्य-चिन्तनमे रचनात्मक स्वतन्त्रता आ ऐतिहासिक उत्तरदायित्व एक-दोसरक विरोधी नहि। काव्यक ऊष्मा जखन लोकजीवनसँ जुड़ैत अछि, तखन ओकर रूप, वक्ता, प्रतीक, व्यंग्य आ काव्यभाषाक सूक्ष्म परीक्षण सेहो आवश्यक होइत अछि। एहिना आलोचनाक विश्वसनीयता ओहने ठाम दृढ़ होइत अछि जतय प्रशंसा आ प्रश्न, परम्परा आ नवता, सांस्कृतिक आत्मीयता आ तर्कसंगत असहमति संग-संग रहैत अछि।

अध्याय १ • वीरेन्द्र मल्लिक साहित्य

अग्नि-शिखा

५५ कविताक क्रमबद्ध विवेचन • जनजीवन, भाषा-अस्मिता, शिल्प आ राजनीतिक व्यंग्य

‘अग्नि-शिखा’क कविता-क्रममे ५० प्रविष्टि अछि, मुदा पाँच संयुक्त प्रविष्टिमे दू-दू पृथक कविता अबैत अछि। एही कारण ५५ स्वतंत्र रचनाक विवेचन आवश्यक होइत अछि।

पद्धति चारि स्तरपर आधारित अछि : (क) मूल पाठक निकट-पठन, जाहिमे कथ्य, पात्र, बिम्ब, पुनरावृत्ति आ काव्य-वक्ता पर ध्यान अछि; (ख) राजनीतिक-आर्थिक आ सांस्कृतिक प्रसंगक आन्तरिक अध्ययन; (ग) लोकप्रयोग, मिथक, अंग्रेजी-हिन्दी मिश्रित शब्द आ कथन-शैलीक विश्लेषण; आ (घ) नैतिक-आलोचनात्मक परीक्षण, जाहिमे कविक जनपक्षधरता संग अतिरंजना, हिंसात्मक वाणी आ स्त्री-चित्रणक प्रश्न सेहो परखल गेल अछि।

कविताक ‘हम’, ‘अहाँ’, ‘ओ’ वा ऐतिहासिक व्यक्तिक उल्लेखकें हमेशा कविक आत्मकथा वा पुष्ट ऐतिहासिक तथ्य मानब त्रुटिपूर्ण होएत। कविता एकटा सृजनात्मक भाषिक दस्तावेज अछि। ओकर राजनीति, व्यंग्य आ अनुभवक महत्त्व बुझबाक लेल मूल कथन आ स्वतन्त्र इतिहास-सत्यापनक बीच भेद रखल गेल अछि।

२. सम्पूर्ण संग्रहक प्रमुख वैचारिक-विमर्श

२.१ अग्निक बहुअर्थी प्रतीक

‘अग्नि-शिखा’क नाम समूचा संग्रहकें प्रतीकात्मक एकता प्रदान करैत अछि। ‘शहरसँ गाम धरि’मे आगि प्रचण्ड विद्रोहक आकांक्षा अछि; ‘साँझ’मे ओहि आगिक रङ झीलमे प्रेम-पत्र लिखैत अछि; ‘नक्सलाइट’मे सूर्यक लाल प्रकाश संघर्षक चेतावनी अछि; शीर्षक-कवितामे

अग्नि सामाजिक शल्य-चिकित्सा आ प्रकाशक ऊर्जा बनैत अछि। एकरे परिणामस्वरूप आगि केवल संहारक शक्ति नहि, स्मृति, पुनर्जागरण, परीक्षण आ सर्जनाक संभावना सेहो अछि।

एहि प्रतीकक सन्निकट आओर एकटा श्रेणी अछि—धीपल लोह, लाल किरिन, जलैत चूल्हि, बम, बरूद, प्रक्षेपास्त्र आ विद्युत। कवि आधुनिक तकनीकक शब्दसँ पुरातन अग्नि-कल्पनाकेँ बदलैत छथि। फलस्वरूप जन-क्रांतिक दृश्य आ दैनिक रोटीक आगि लगातार एक-दोसरमे रूपान्तरित होइत अछि।

२.२ भाषा-अस्मिता : अधिकार आ आत्मालोचना

‘एक डिब्बा क्रांति’, ‘माइ डियर इन्दिरा’, ‘मैथिली आन्दोलन’, ‘नपुंसक नेताक नाम’ आ ‘चिट्ठीक उतारा’मे मैथिली अधिकारक प्रश्न बारम्बार अबैत अछि। मातृभाषाक शिक्षण, संवैधानिक पहचान, साहित्यिक प्रकाशन आ स्वनामक सम्मान—ई चारिटा समस्या एक दोसरसँ अलग नहि। कवि भाषा खातिर मात्र भावुक जयघोष स्वीकार नहि करैत छथि; ओ आन्दोलनक असफलता, नेतृत्वक सुविधाभोगिता आ अपन समाजक निष्क्रियतापर सेहो प्रहार करैत छथि।

‘माइ डियर इन्दिरा’ आ ‘एक डिब्बा क्रांति’मे अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ सम्मिलित करबाक माँग एकर रचनाकालीन राजनीतिक प्रसंग थिक। बाह्य संवैधानिक तथ्य अनुसार मैथिलीकेँ २००३क ९२म संविधान संशोधन द्वारा सम्मिलित कएल गेल, जकर प्रकाशन ८ जनवरी २००४क राजपत्रमे भेल छल। एहि प्रमाणसँ पुरान माँगक ऐतिहासिक सन्दर्भ स्पष्ट होइत अछि, मुदा एहि संग्रहक प्रत्येक कविताक रचनातिथि आपसँ समान छल, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत।

२.३ भूख, श्रम आ आर्थिक असमानता

‘विद्युत-चाप’क कृषि-कर्ज, फीस आ मातृभाषाक पोथीक अभाव; ‘स्वाधीनताक आँगनमे’क मजदूर आ छात्र; ‘मुक्ति-संघर्ष’क दबायल जन; ‘समानधर्माक नाम’क सर्वहारा; आ ‘मुक्त भेल बजार’क मजदूर आ बाजार—ई समूचा श्रम-यथार्थ संग्रहमे एक दृढ़ सूत्र

अछि। कविक जनकवितामे वर्ग-संबन्ध केवल अमूर्त नारा नहि, राशन-पाँति, कागज-पेन्सिल, गहना बन्धक रखब, मटिया तेल आ खेतीक असफलताक दृश्यसँ बनैत अछि।

आर्थिक शोषणक समांतर सांस्कृतिक शोषण चलैत अछि। जे जनभाषा बोलैत अछि, ओकरा शिक्षा, सम्मान आ प्रकाशन नहि भेटब; जे ग्रामीण श्रम करैत अछि, ओकर उत्पादन आ प्रतिफल मध्य दूरी रहब—ई दुनू विषमता संग्रहमे एके प्रकारक अन्याय मानल गेल अछि।

२.४ लोकतंत्रक विकृति आ राजनीतिक व्यंग्य

कविता-संग्रहमे कुरसी, नेता, मंत्री, मुखिया, पंचायत, पुलिस, अफसर, अदालत आ सांसदक चित्र असाधारण रूपेँ बारम्बार अबैत अछि। ‘शून्य काल’मे फाइल आ फीता, ‘यमराजक विदेश-यात्रा’मे यमपुरी, ‘गिरगिट’मे बदलैत रङ, ‘गिद्ध’मे मृतदेहभक्षी लोभ आ ‘कैंसर’मे रोगग्रस्त सामाजिक देह—ई सभ सत्ताक भिन्न रूपक अछि। प्रशासन आ राजनीति नागरिकक सेवा करबाक बदला स्वतःरक्षणक यंत्र बनि जाए, से मुख्य चिन्ता अछि।

एहि राजनीतिक दृष्टिमे एकटा महत्त्वपूर्ण अन्तर्विरोध अछि : जनतांत्रिक अधिकारक माँग बहुधा संघर्षक सैन्य शब्दावलीमे व्यक्त भेल अछि। रचनाक मूल्यांकन करैत कविक शोषण-विरोधी अभिप्राय आ काव्यभाषाक उग्र प्रयोगकेँ अलग-अलग जाँचबाक आवश्यकता अछि।

२.५ मिथिला, नगर आ सामाजिक भूगोल

कवि मिथिलाकेँ एकटा बन्द सांस्कृतिक स्मारक नहि मानैत छथि। ‘ओकर गाम : ओकर शहर’मे राँटी, मंगरौनी, पिलखवार, मधुबनी, दरभंगा, जनकपुर, पटना, कलकत्ता आ दोसर स्थलनामक उल्लेखसँ स्थानक व्यापक नेटवर्क बनैत अछि। ‘अपन लोकवेदक नाम’मे माटि-पानिक सुगन्धि संग सामन्ती संरचना, गरीबी, लोक-जीविका आ लोकक पीड़ा जुड़ल अछि। मिथिला कविक दृष्टिमे गौरवक स्थिर वस्तु नहि, निरन्तर प्रश्नक अधीन सामाजिक धरातल अछि।

शहर-संबद्ध प्रतीक—ट्राम, बस-स्टॉप, होटल, जेल, कार्यालय, सिनेमा, मॉल—ग्रामीण शब्दसामग्री—पोखरि, रोहु-भाकुर, मडुआ, गाछी, खेत, बँसबिट्टी—क संग टकराइत अछि। ई टकराहट मैथिल आधुनिकताक अनुभवकेँ केवल आयातित रूप नहि रहने दैत अछि।

२.६ पुराण, धर्म आ सांस्कृतिक आत्मपरीक्षण

कवितामे रामायण-महाभारतक अनेक पात्र राजनीतिक रूपक बनैत छथि। सीता-सरस्वतीक बारम्बार अपमान, रावणक छद्म-राजनीति, सुरसाक बेरोजगारी, कुंभकर्णक निद्रा, द्रोणाचार्यक संस्थागत अन्याय, एकलव्यक संघर्ष, चक्रव्यूहक अवरोध आ यमराजक अनुपस्थिति—ई सभ पुराणक कथाकेँ समकालीन असमानताक भाषा बनबैत अछि।

धर्मपर कविक कटाक्ष प्रायः ताहि ठाम तीव्र अछि जतय अनुष्ठानकेँ सामाजिक दायित्वक विकल्प मानि लेल जाइत अछि। ‘कीर्तन’, ‘पूजा-गृह’ आ ‘चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः’मे धार्मिक शब्दक व्यंग्यात्मक प्रयोगक लक्ष्य आस्था स्वतः नहि, पाखण्ड आ स्वार्थसँ आच्छन्न सार्वजनिक आचरण अछि।

२.७ स्त्री-प्रतीक आ स्त्रीक अनुपस्थित स्वर

‘मैथिल ललना’मे परम्परा आ महानगरक दृश्य, ‘साँझ’मे प्रतीक्षा, ‘मिनि गर्ल’मे देहक नाप, ‘अग्नि-शिखा’मे माय-बहीन-पत्नी-प्रेयसीक चिन्ता, ‘छापामार युद्ध’मे नारीजागृति आ ‘गुजरातनामा’मे हिंसाग्रस्त स्त्री—एकरे प्रकारेँ स्त्री अनेक भूमिकामे प्रकट छथि। ई व्यापकता साहित्यिक दृष्टिँ ध्यानयोग्य अछि।

तथापि आलोचनाक प्रश्न अछि जे कतेक ठाम स्त्री अपन भाषा मे बजैत छथि आ कतेक ठाम कविक राजनीतिक तर्कक प्रतीक मात्र बनि जाइत छथि। ‘मिनि गर्ल’ आ ‘पूजा-गृह’क देह-विम्ब पाठककेँ आत्मालोचनक अवसर दैत अछि। संग्रहक जनपक्षधरता केँ स्त्रीक स्वतन्त्र अनुभवक प्रश्नसँ जोड़ि पढ़ब जरूरी अछि।

२.८ रचनाकार, साहित्यिक संस्था आ प्रतिरोधक सौन्दर्य

संग्रहक विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे कवि राजनीति पर लिखबा संग स्वयं कवि, बुद्धिजीवी, आलोचक, पुरस्कार-समिति आ प्रकाशन-संस्थानक जाँच करैत छथि। ‘चारि लाख बानरक बीच’मे सांस्कृतिक आयोजन, ‘हे हमर अग्रज’मे पुरान नेतृत्व, ‘चिढ़ीक उतारा’मे पुस्तक-प्रकाशन आ ‘कविताया: प्रतिवादम्’ तथा ‘कविताश्री पाटलिपुत्रम्’मे कविताक भूमिका पर सीधा विमर्श अछि।

एहि अर्थमे कविता केवल बाहरी व्यवस्था-विरोध नहि, साहित्यिक क्षेत्रक आत्मसमीक्षा सेहो अछि। कविक आग्रह स्पष्ट अछि—साहित्यकें जन-जीवनक दुःख आ संघर्षसँ सम्बन्ध बनौने रहबाक चाही। मुदा साहित्यक राजनीतिक उपयोगिताक अतिरिक्त ओकर आन्तरिक सौन्दर्य, विरोधाभास आ बहुअर्थता बचेबाक आवश्यकता सेहो एहि पाठसँ स्पष्ट होइत अछि।

२.९ समयक विस्तार : आरम्भिक जनांदोलनसँ भूमण्डलीकरण धरि

पाठमे इन्दिरा-संबद्ध राजनीतिक भाषण, बंगलादेश, अष्टम अनुसूचीमे प्रवेशक माँग, नक्सलाइट, चारा-हवाला घोटाला, वैश्वीकरण, गुजरातक हिंसा आ ‘बिग बजार’—ई सभ अलग-अलग काल-संकेत अछि। ताहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक विषय-विस्तार अनेक ऐतिहासिक स्तरक बीच फैलल अछि। किताबक निश्चित प्रकाशनकाल वा हर कविताक वर्ष बिना प्रामाणिक प्रकाशन-जानकारी लिखब उचित नहि।

बाजारवादी युगक कविता सभ पुरान अन्यायकें समाप्त भेल नहि मानैत, अपितु परिवर्तनशील रूपमे पुनः उपस्थित देखैत अछि। ‘मुक्त भेल बजार’क अन्तिम प्रश्न संग्रहक आरम्भिक विद्रोहक ऊर्जा संग जुड़ि कऽ तर्काधारित संघर्षक नव सम्भावना खोलैत अछि।

३. भाषा, काव्यशिल्प आ सौन्दर्यबोध

३.१ लोकशब्द आ बहुभाषिक बनावट

संग्रहमे मैथिलीक लोकप्रयुक्त क्रिया-रूप, देसी वस्तुनाम, गारि, अपभ्रंश, मिथक, ग्रामीण श्रमक शब्दावली संग ट्राम, फ्रिज, प्रेस्टिज कुकर, लेटर बॉक्स, ब्लड बैंक, अल्ट्रा वायलेट रेज, प्रक्षेपास्त्र, हाईब्रिड, मॉल आदि आधुनिक पद संग-संग भेटैत अछि। ई मिश्रणक कारण सामाजिक जीवनक विविध स्तर एके भाषिक सतहपर आबि जाइत अछि। हिन्दी, अंग्रेजी आ संस्कृत-सूत्रक सीमित उपस्थितिकेँ मैथिली आवाजक भीतर काव्यात्मक रणनीति मानल जा सकैछ; ई शोध स्वयं मैथिली गद्यभाषामे प्रस्तुत अछि।

३.२ मुक्तछन्द, कोलाज आ नाटकीय वक्तव्य

बेसिभाग कविता मुक्तछन्दमे अछि; कतहु प्रश्नक झड़ी, कतहु लम्बा अनुच्छेद, कतहु मात्र दू-तीन पाँती, कतहु एक-एक शब्द अलग पाँतीमे। ‘विष्णुर्योनिम्’क दृश्यविन्यास, ‘कविताश्री पाटलिपुत्रम्’क पूर्णविराम-प्रयोग, ‘साँझ’क लयबद्ध लघुचित्र आ ‘चारि लाख बानरक बीच’क नाटकीयता एहि विविधताक दृष्टान्त अछि। छन्दबद्ध गानक अभावक अर्थ लयक अभाव नहि: सम्बोधन आ पुनरुक्ति संघर्षक अलग मौखिक लय रचैत अछि।

३.३ बिम्बक प्रमुख परिवार

आगि-प्रकाश, रोग-शरीर, जानवर-भीड़, घर-देवाल, खेत-भूख, युद्ध-अस्त्र, नगर-मंच आ धर्म-अनुष्ठान—ई आठ प्रतीकपरिवार लगभग पूरा संग्रहमे पुनः-पुनः सक्रिय होइत अछि। ‘गिद्ध’ आ ‘कैंसर’मे मृत्युक दाह; ‘नव घर उठे’ आ ‘घून लागल वटवृक्ष’मे संरचनाक क्षय; ‘साँझ’ आ ‘अग्नि-शिखा’मे प्रकाशक रूपान्तर—एहि सम्बन्धसभकेँ पढ़लासँ संग्रहक आन्तरिक संगठन अधिक स्पष्ट होइत अछि।

३.४ व्यंग्यक तीक्ष्णता आ अर्थक जोखिम

गदहा, कुकुर, बानर, सियार, साँप, गिरगिट, गिद्ध आदिक बिम्ब सत्ताधारी वर्गक विवेचनमे अत्यन्त कड़क अछि। एहन व्यंग्य लोकपाठक लेल त्वरित भावानुभूति दैत अछि, मुदा कखनहुँ मानवीय व्यवहारक जटिलताकेँ एक जानवर-प्रकारमे समेटि देबाक जोखिम सेहो अछि। रचनाक मौलिकता आ सीमा दूनूक सही समझ एहि द्वन्द्वसँ बनैत अछि।

४. कविता-वार विशद विवेचन : सभ ५५ स्वतंत्र पाठ

निम्नलिखित क्रम मूल पोथीक वास्तविक मुद्रित पृष्ठ-क्रमक अनुसरण करैत अछि। प्रत्येक टिप्पणीमे पहिने कथ्य आ सन्दर्भ, तकर बाद शिल्प, प्रतीक वा आलोचनात्मक अर्थक विचार देल गेल अछि। कोष्ठकक पृष्ठ मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ थिक।

१. शहरसँ गाम धरि (पृ. ९-११)

संग्रहक आरम्भमे कवि अपनाकेँ ‘बताह’ बनि नगरसँ गाम धरि पसरैत आगिक रूपमे कल्पना करैत छथि। ई पागलपन निष्क्रियताक प्रतिरोधक नाम थिक। शहरी लुटेरा, गामक सूदखोर महाजन, भ्रष्ट नेता, बैमान मुखिया आ शिक्षा-संस्थाक विफलता एके सामाजिक संकटमे जुटि जाइत अछि। सीता, सरस्वती, रावण, कोशी, कमला आ बलानक उल्लेखसँ मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोल राजनीतिक भाषा बनैत अछि। कविक रोष कोनो एकटा व्यक्तिपर नहि, शोषणक समूचा जालपर केन्द्रित अछि।

प्रारम्भ आ अन्तमे आगि बनि पसरबाक कथनक पुनरावृत्ति कविताकेँ वृत्ताकार बनबैत अछि। नदीक पानि अन्तिम आशा आ अनियंत्रित प्रतिरोध दुनूक प्रतीक बनैत अछि। ‘जन-क्रांति’क कामना स्पष्ट अछि, मुदा आगि-संबद्ध अतिशयोक्ति आ युद्धक बिम्बकेँ काव्यात्मक आह्वानक रूपमे बुझबाक चाही, ऐतिहासिक घटनाक शाब्दिक भविष्यवाणी मानि नहि।

२. एक बुढ़ी मासु (पृ. १२-१३)

एहि कवितामे सरकारी आश्वासन, पदवी आ कुरसीकेँ ‘एक बुढ़ी मासु’क प्रलोभन बना कऽ देखाओल गेल अछि। लोक आ संगठन एहि छोट लाभ पर टूटि पड़ैत अछि आ अपनहि वर्गसँ लड़बाक क्रममे सामूहिक अधिकार बिसरि जाइत अछि। विषधर साँप, कुकुर आ हड्डीक बिम्ब निर्बल जनसमुदाय आ सत्ताक असमान सम्बन्धकेँ उघारैत अछि। कविक तीख आक्षेप नेता, छात्र, बुद्धिजीवी आ राजनीतिक कार्यकर्ता सभक दिशि समान रूपेँ गेल अछि।

‘गीता’, ‘कामसूत्र’ आ ‘विद्यापति पदावली’क उल्लेख एतय ग्रन्थ-विरोध नहि, सन्दर्भसँ काटल आत्मतुष्ट पाठनपर व्यंग्य अछि। मातृभाषा आ मायकेँ स्वीकार नहि करबाक चित्र सांस्कृतिक आत्मविस्मृतिक चरम रूप अछि। प्रश्नवाचक आ अपमानबोधक वाक्य पाठककेँ आत्मालोचन दिस धकेलैत अछि।

३. एक डिब्बा क्रांति (पृ. १४-१५)

कवि शासनक बलप्रधान यथार्थकेँ उद्घाटित करैत कवि-लेखक, छात्र आ आम जनता सँ प्रश्न पुछैत छथि। अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ स्थान देबाक माँग, मातृभाषामे पढ़बाक अधिकार आ जातिक नामपर भोट दऽ कऽ अयोग्य प्रतिनिधि जितेबाक प्रवृत्ति कविता मध्य मुख्य विषय अछि। शब्द, कलम आ जनबलक बीच राजनीतिक प्रभावक सम्बन्धक पड़ताल कएल गेल अछि। ‘डिब्बा’ नाम राजनीतिक क्रांतिक पैकेटबद्ध, खोखल आ प्रदर्शनकारी स्वरूपपर सेहो संकेत करैत अछि।

पुनरावृत्त सूत्र ‘बल जकर लाठीमे’ आदि लोकप्रचलित कहावतक व्यंग्यात्मक परिवर्तन अछि। कठोर ललकारक अन्तर्गत कवि आन्दोलनक वास्तविक तैयारी आ आत्मसंयमक प्रश्न उठबैत छथि। आक्रोशक स्वरक संग भाषिक अधिकारक ठोस माँग एकर विशेषता अछि।

४. हे हमर अग्रज शान्त भऽ जाउ (पृ. १६-१७)

ई रचना पीढ़ीगत संघर्षक सीधा वक्तव्य अछि। कवि अपन ‘अग्रज’ पीढ़ीकेँ सुविधाभोगी, पदलोभी, आत्मसंतुष्ट आ मातृभाषाक प्रति उदासीन कहि संबोधित करैत छथि। डिबरी, तेल,

सलाइक काठी, क्लर्क, पीउन, सभा, ताश आ चौपड़क विवरण जीवनक तुच्छ दिनचर्या आ अपूर्ण सार्वजनिक उत्तरदायित्वकें सोझाँ अनैत अछि। मुख्य आग्रह अछि जे पुरान नेतृत्व नव पीढ़ीक मार्गमे अवरोध बनि नहि ठाढ़ होअए।

आदेशात्मक शीर्षकमे सतही विनय अछि, भीतर तीक्ष्ण व्यंग्य। ‘शान्त भऽ जाउ’ मृत्यु-कामना नहि, सार्वजनिक नेतृत्व छोड़ि नवतुरियाकें काम करबाक अवसर देबाक राजनीतिक आग्रह अछि। छोट-छोट लोकजीवनक उपमान आ प्रश्नवाचक आवेग कविताकें भाषणात्मक होइतहुँ जीवंत बनबैत अछि।

५. बंगाल बन्द (पृ. १८-१९)

‘बन्द’क अवसरपर कलकत्ताक शहरी जीवन भय, गोली, बम, गिरफ्तारी आ प्रशासनिक दमनक आच्छादनमे अछि। अलीपुर जेल, नक्सलाइटक नामपर युवा रक्तक उल्लेख आ पी.डी. एक्टक चर्चा एकटा विशेष राजनीतिक वातावरणक पाठ-संकेत अछि। एहि त्रासक बीच कलुआ चमार आ चतुरा चमाइनक घरेलू संवाद आम जनक जिएबाक व्यावहारिक चिन्ता उभारैत अछि। फलतः सार्वजनिक ‘बन्द’ आ निजी भूख-भयक बीच दूरी बनैत अछि।

सर्द लाश सन शहर आ दैनिक बोलचालक हिन्दी-मिश्रित संवाद एक-दोसरक विरोधी लय रचैत अछि। कवि केवल नारा नहि दैत छथि; लोकजीवनक हास्य, असहायता आ विरोधाभासकें एक दृश्य-कवितामे समेटैत छथि।

६. साँझ (पृ. २०)

ई लघुकविता संग्रहक तीक्ष्ण राजनीतिक स्वरक बीच एकटा सौन्दर्य-बिन्दु अछि। झीलक जलपर सूरजक लालिमा मानू आगिसँ लिखल कोनो नाम अछि, आ साँझ मानू लेटर-बॉक्समे राखल मिलनक चिट्ठी। एहि दृश्यमे प्रकृति आ शहरी संचारक वस्तु सहजहि एक भऽ जाइत अछि। प्रकाशक क्षयकें कवि वियोग नहि, पुनर्मिलनक प्रतीक्षा बना दैत छथि।

मात्र किछु पाँतीमे प्रतीक, दृश्यात्मकता आ मानवीकरणक संयमित प्रयोग भेल अछि। ‘आगि’ एतय विनाशक नहि, प्रेमिल आलोकक संकेत अछि; इएह शब्दक अर्थविस्तार बुझब संग्रहक समग्र पाठ लेल आवश्यक अछि।

७. मैथिल ललना (पृ. २०)

चौरंगीमे देखाओल मैथिल स्त्रीक काजर, सेनुर, ओरहुल-सन रंगल ठोर, ललका छोटक साड़ी आ चप्पल-विहीन पएर कविताक दृश्य रचैत अछि। महानगरक आधुनिक सड़क आ मिथिलाक पारम्परिक वस्त्र-विन्यासक भेंटमे पहचानक द्वन्द्व उपस्थित अछि। स्त्रीकें केवल ‘पिछड़ल’ वा ‘आधुनिक’ कोनो एक श्रेणीमे रखब एकर पाठकें संकीर्ण करब।

ई शब्दचित्र बहुत लघु अछि; वर्णनात्मक अन्तःदृष्टिक अतिरिक्त स्त्रीक अपन स्वर अनुपस्थित अछि। तें स्त्री-अध्ययनमे ई सीमा विचारणीय अछि। रंग आ भेषक संयोजन एकर संक्षिप्त दृश्यात्मक शक्ति अछि।

८. साँप (पृ. २१)

निर्जन, निस्तब्ध दिवसकें कवि सड़कपर पड़ल मृत साँपक रूपमे देखैत छथि। लोक निज घरक कारागारमे बंद अछि; शोर नहि, संग्राम नहि। बाह्य शान्तिक भीतर भय आ जीवित सामाजिक चेतनाक अभाव एहिमे व्यक्त भेल अछि। साँप साधारणतया संकट वा विषक प्रतीक मानल जाइत अछि, मुदा एतय ओकर मृत रूप सार्वजनिक निष्क्रियताक द्योतक बनैत अछि।

उपमानक उलट प्रयोग कविता कें तीक्ष्ण बनबैत अछि। स्तब्ध दिन, घर-कारागार आ अनमोन सड़कक तीन बिम्ब मिलि राजनीतिक कायरताक दृश्य रचैत अछि। एकर मौन, संग्रहक अनेक उग्र कविताक विपरीत, स्वयं एकटा प्रतिरोधी कथन बनैत अछि।

९. मास्टर साहेब (पृ. २१)

ई लघु व्यंग्य शिक्षकक बदलैत भाषा, परिधान आ घरे-घरे घूमबाक व्यवहारक आधारपर बनल अछि। मुँहमे पान, हाथमे घड़ी, कखन अंग्रेजी कखन हिन्दी, कखन पारम्परिक धोती

कखन पैट—एहि विवरणसँ पेशागत अस्थिरता आ बाह्य प्रदर्शन चित्रित अछि। शिक्षकक ज्ञानक चर्चा नहि, हुनक सामाजिक छविक अभिनय कविताक लक्ष्य अछि।

अन्तिम कुकुर-उपमा अपमानक मार्मिक तीक्ष्णता बढ़बैत अछि, मुदा एहन सामान्यीकरण सभ शिक्षकपर लागू करब उचित नहि। सामाजिक प्रकारक व्यंग्यक रूपमे पढ़ला पर कविता अधिक सार्थक अछि।

१०. मैथिली आन्दोलन (पृ. २२)

भाषा-अधिकारक आन्दोलनकेँ बच्चाक फुरस भऽ गेल बम-पटाखासँ तुलना कएल गेल अछि। जनताक जागरणक अपेक्षामे बारम्बार प्रतीक्षा आ निष्क्रियता कविताक मुख्य व्यंग्य अछि। संघर्षक नामपर प्रतीकात्मक आयोजन तऽ होइत अछि, मुदा ओकर परिणाम नहि निकलैत—कवि एहि अन्तरकेँ प्रश्नांकित करैत छथि।

साधारण घरायसी पटाखाक बिम्ब राजनीतिक दावाक खोखलापन तत्काल देखबैत अछि। अतिलघु आकार व्यंग्यक तेज धार बढ़बैत अछि। संग्रहक आन आन्दोलनधर्मी कविताक संग पढ़ला पर ई रचना स्वपक्षीय आत्मालोचन सेहो थिक।

११. मिनि गर्ल (पृ. २२)

‘मिनि गर्ल’मे पारदर्शी कपड़ा, देह-यष्टि आ नाप-जोखक संख्याक माध्यमसँ शहरी फैशनक एकटा तीक्ष्ण दृश्य देल गेल अछि। स्त्रीक देहकेँ मापमे बदलि देबाक उपभोक्तावादी दृष्टि एतय स्पष्ट देखाइत अछि। मुदा कविताक कथन स्वयं एहन वस्तुकरणक आलोचना करैत अछि कि ओकर पुनरुत्पादन, से प्रश्न खुलल रहैत अछि।

सूची-जकाँ छोट पदावली, संख्यात्मक संकेत आ देह-संबन्धी विवरण एकर प्रयोगधर्मी विन्यास अछि। स्त्रीक व्यक्तित्वक अनुपस्थिति एकटा महत्वपूर्ण आलोचनात्मक सीमा मानल जाएबाक चाही।

१२. माइ डियर इन्दिरा (पृ. २३-२४)

शीर्षकमे अंग्रेजी संबोधनक संग भारतीय सत्ताकें प्रत्यक्ष पत्र-जकाँ पुकारल गेल अछि। भाषाकें अष्टम अनुसूचीमे स्थान देबाक माँग, आश्वासनक अस्वीकृति आ मैथिलीभाषी जनताक आत्मसम्मान कविता मध्य केन्द्रित अछि। कमला-बलान आ कोशीक गर्जना, मिथिलाक भौगोलिक विस्तारक नाम आ लव-कुशक स्मृति एक आन्दोलित सांस्कृतिक समुदायक चित्र बनबैत अछि।

‘आगि’, ‘दमकल’, ‘धीपल लोह’ आ ‘ललकार’क अनुक्रम भावनाक तीव्रता बढ़बैत अछि। शीर्षकक आत्मीयता आ कविताक कड़ा राजनैतिक स्वरक विरोधाभास महत्त्वपूर्ण अछि। कविता कें तत्कालीन माँगक काव्यात्मक दस्तावेजक रूपमे पढ़ब, मुदा ओकर रचनातिथि बिना प्रमाण निश्चित नहि करब।

१३. स्वाधीनताक आँगनमे (पृ. २५-२६)

स्वाधीन देशक आँगनमे ठाढ़ छात्र, मजदूर आ किसान वास्तविक स्वतंत्रतासँ वंचित छथि। छात्र बेरोजगारी, परीक्षा-अव्यवस्था आ अश्रुगैस देखैत अछि; किसान रौदी-बाढ़, अनुदानक विडम्बना, राशनक पाँति आ भूखसँ जूझैत अछि। ‘जय जवान जय किसान’ सन सार्वजनिक नाराक सोझाँ जीवनक यथार्थ राखि कवि औपचारिक स्वाधीनता आ सामाजिक स्वराजक अन्तर उघारैत छथि।

एके वाक्यांशक पुनरावृत्ति विभिन्न सामाजिक पात्रकें जोड़ैत अछि। रामायणक सुरसा आ विकास-योजनाक ‘प्रयोगशाला’क संगति मिथक तथा आधुनिक राज्यभाषाक आलोचनात्मक सम्मिलन अछि। ई कविताक स्वर व्यक्तिगत रोषसँ बढ़ि वर्गीय साझा अनुभवधरि पहुँचैत अछि।

१४. कीर्तन (पृ. २७-२८)

कीर्तनक धार्मिक-सांस्कृतिक रूपकें कवि राज्य, सभा, कार्यालय आ नेताक सार्वजनिक प्रदर्शनक रूपक बना दैत छथि। हड़ताल, छुट्टी, बीयर, शरीरक बाजारू सजावट, अष्टयाम आ मंचक आयोजनक बीच प्रजातंत्रक वास्तविक दायित्व ओझराएल अछि। धार्मिक शब्दसामग्री

एतय आस्था पर सार्वभौम आक्रमण नहि; पाखण्डी आयोजन द्वारा राजनीति आ समाजकें सुन्न बनएबाक विरोधी व्यंग्यक उपकरण अछि।

कोलाहल, दृश्य-परिवर्तन आ सूचीबद्ध उपमान कविताकें भीड़युक्त रंगमंच बना दैत अछि। अश्लीलता आ अनुष्ठानक टकराहटसँ सभ्यताक दिखावा प्रश्नांकित होइत अछि। अति-सघन बिम्बावली कतहु अर्थकें जटिल बनबैत अछि; तथापि ई जटिलता कविक विखण्डित समय-बोधसँ जुड़ल अछि।

१५. कैसर (पृ. २९-३०)

‘कैसर’ रोगकें सामाजिक देहक भीतर फैलैत निष्क्रियता, स्वार्थ आ संस्था-विघटनक रूपक बना दैत अछि। शिक्षक, डॉक्टर, राजनीतिज्ञ, मंत्री आ बुद्धिजीवी अपन-अपन दायित्वसँ हटि गेल छथि। कोर्ट-कचहरी, कुरसी, चुनाव, राशन, विदेशी ऋण आ मूल्यवृद्धि जनजीवनक अनेक रोग-जकाँ उपस्थित अछि। व्यक्तिक रोग नहि, कर्तव्यत्यागी समाजक कुप्रवृत्ति कविताक असली विषय अछि।

विरामहीन प्रश्नावली आ चिकित्सकीय शब्दसामग्री बहुस्तरीय संकटक अनुभूति उत्पन्न करैत अछि। ई कविता सामाजिक रोगक निदानक आवश्यकता पर बल दैत अछि, मुदा इलाजक स्पष्ट संस्थागत रूपरेखा नहि दैत अछि—ई ओकर घोषणात्मक शैलीक स्वाभाविक सीमा अछि।

१६. पूजा-गृह (पृ. ३१-३२)

पूजा-गृहमे भग्न मूर्ति, अगरबत्ती, अश्रुगैस, लाल फीता आ चुनावक सामान एके दृश्य-विधानमे उपस्थित अछि। धर्मस्थल आ प्रशासनिक दफ्तरक वस्तुसभकें एकत्र कए कवि बतबैत छथि जे मनुष्यता, चेतना आ न्याय कतेक खण्डित भऽ गेल अछि। शिल्पगत रूपें टूटल अङ्ग, सर्वनाम आ शारीरिक प्रतीक सामाजिक विघटनक दृष्यात्मक पाठ बनबैत अछि।

वस्तुसभक असामान्य संयोजन अतियथार्थवादी कोलाज-जकाँ प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। स्त्री-देहक प्रतिमासभक उपस्थितिपर आलोचनात्मक दृष्टि आवश्यक अछि; एतय शक्तिसंरचनाक वस्तुकरण देखाओल गेल होइ, अथवा काव्यभाषा स्वयं ओकर पुनरावृत्ति करैत होइ—दुनू सम्भावना परखल जा सकैछ।

१७. चारि लाख बानरक बीच (पृ. ३३-३४)

सांस्कृतिक सभागारक भीतर चन्दा, स्वागत, भाषण, मंच-व्यवस्था, अभिनेताक प्रतीक्षा आ दर्शकक लिप्साकेँ कवि बानरक समूहक रूपमे चित्रित करैत छथि। सभागार साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिष्ठानक उपहासपूर्ण प्रतिरूप बनि उठैत अछि। कार्यक्रमक मूल उद्देश्य बिसरि व्यवस्थापकक प्रदर्शन, हल्ला आ स्त्री-देहक उत्सुकतापूर्ण चर्चा प्रधान भऽ जाइत अछि।

‘बानर’, ‘हनुमान’, ‘टाइम बम’ आ ‘प्रेसर कुकर’क टकराव लोकउपमा तथा आधुनिक उपकरणक व्यंग्यकारी मेल अछि। संख्या अतिशयोक्तिक उपकरण अछि; एकरा तथ्यात्मक दर्शक-गणना मानब उचित नहि। एकर कटाक्ष साहित्यिक सभासभक आन्तरिक विडम्बनापर अछि।

१८. अपन लोकवेदक नाम (पृ. ३५-३९)

ई विस्तृत कविता संग्रहक आत्मालोचनात्मक केन्द्रसभमे एक अछि। कवि स्वयंकेँ ‘पापी’ कहि अपन माटि-पानि, लोकवेद, मजदूर, गरीब किसान, शहरी श्रमिक आ वंचित जनक दुख उजागर करबाक दायित्व स्वीकार करैत छथि। विद्यापतिक नाम, सीता, आयाची, मण्डन आदिक गौरवक प्रतिमाक आड़मे आजुक अशिक्षा, मातृभाषाक अवहेलना आ सामाजिक असमानता नुकाएबाक प्रवृत्तिक विरोध करैत छथि। पुरान सांस्कृतिक स्मृति आ वर्तमान अभावक बीच स्थायी तनाव उपस्थित अछि।

बारम्बार अपनाकेँ दोषी कहब आत्मव्यंग्य आ नैतिक प्रतिरोधक दूहरी युक्ति अछि। ‘लोकवेद’ संग्रहमे मात्र लोकसंस्कृति नहि, जीबैत जनसमुदायक सामाजिक ज्ञान, श्रम आ अधिकारक व्यापक संज्ञा बनि उठैत अछि। एतय कविक लोकपक्षधरता सर्वाधिक प्रत्यक्ष अछि।

१९. नक्सलाइट (पृ. ४०-४१)

प्रातःक लाल सूर्य, मिसाइल, बम आ संघर्षक बिम्बसँ शुरू भऽ कविता पलायनवादी मनोदशा दिस घुरि जाइत अछि। काशीवास, घाट, पूजा आ शहरी शोषणक दृश्य केवल धार्मिक-नगरीक वर्णन नहि, चेतनासँ पलायन करैत मनुक्खक दृष्टान्त अछि। ‘नक्सलाइट’ शीर्षक सशस्त्र उथल-पुथल आ ओकर प्रति सामाजिक प्रतिक्रियाक कठिन प्रश्न उपस्थित करैत अछि।

स्वप्न, हिंसात्मक प्रतीक, शहरी देह-व्यापार आ आत्मविस्मृतिक टुकड़ा-टुकड़ा दृश्य पाठकें बेचैन बनबैत अछि। कवि हिंसाक समाचारक संग वर्गीय असमानता आ राजनीतिक निष्क्रियताक छिपल सम्बन्ध देखबैत छथि; एकरा सरल राजनीतिक घोषणा-मात्र बना देब उचित नहि।

२०. विद्युत-चाप (पृ. ४२-४४)

भूखक समुद्र, खेतीक संकट, कर्ज, स्कूलक फीस, मातृभाषाक पोथीक अभाव आ बेरोजगारी कविताक आधार अछि। समृद्ध खानपानक पारम्परिक स्मृतिक सोझाँ आजुक दरिद्र गृहस्थक कठोर जीवन राखल गेल अछि। ट्रैक्टर, पम्पिंग सेट, विटामिन, ब्लड बैंक आदि आधुनिक शब्द कृषि-सामाजिक यथार्थसँ जोडैत अछि। पूजा-पाठ मात्रसँ भूख, रोग आ आर्थिक संकट नहि मेटत—कवि कर्मशील परिवर्तनक आवश्यकता प्रतिपादित करैत छथि।

शीर्षकक ‘चाप’ दबाव, ऊर्जाक असन्तुलन आ अचानक झटकाक अर्थ उत्पन्न करैत अछि। लगातार ‘कहिया धरि’क प्रश्न व्यवस्था बदलबाक कालसापेक्ष माँग बनि उठैत अछि। एहि कवितामे श्रम, स्वास्थ्य, शिक्षा आ भाषा परस्पर जोड़ल जन-अधिकार अछि।

२१. छापामार युद्ध (पृ. ४५-४७)

ई कविता नवयुगक निर्माताकें सम्बोधित दीर्घ आह्वान अछि। बाढ़ि, रौंदी, दरिद्रता, पीयर पड़ल धिया, बेरोजगार पुत्र आ वृद्ध माता-पिताक चित्रसँ व्यवस्था-विरोधक आधार बनैत अछि। नवताक चाहना संग स्त्रीक सार्वजनिक सक्रियता आ ‘नारी जागृति’क प्रसंग अबैत

अछि। कवि अन्याय सहन करबाक दीर्घ परम्पराकेँ बदलावक बाधा मानैत छथि, आ राजनीतिक संघर्षक भाषा अत्यन्त उग्र बना दैत छथि।

‘आउ’क लगातार पुनरावृत्ति गीतात्मक आवाहनक लय रचैत अछि। कवितामे शस्त्र, रण-नीति आ छापामार युद्धक पद काव्यिक राजनीतिक आग्रहक अंश अछि; आलोचनामे एहिसँ जुड़ल मानवीय क्षति, अहिंसात्मक लोकतांत्रिक सम्भावना आ भाषाक अतिशयोक्ति सेहो विचारणीय अछि। ई आक्रोशकेँ ऐतिहासिक सामाजिक दस्तावेजक रूपमे पढ़बाक चाही।

२२. शून्य काल (पृ. ४८–४९)

‘शून्य काल’ निर्णयहीन वर्तमानक कविता अछि। कवि कवि, इतिहासकार, बुद्धिजीवी, नेता आ मंत्री सभक निष्क्रियता वा अवसरवादसँ विचलित छथि। कार्यालयक फाइल, सरकारी फीता, घूस, चकबन्दी, मन्त्रीक शीशमहल आ लोकक बन्हकी राखल थारी एके व्यवस्थाक अनेक रूप अछि। लोकतंत्रक प्रक्रियामे सामान्य जनक दैनंदिन अपमान एहि समयकेँ ‘शून्य’ बनबैत अछि।

अनेक प्रश्नवाचक संबोधनसँ कवि नेतृत्वक अभाव उजागर करैत छथि। कविता समस्या-सूची बनैत अछि, मुदा एही सूचीमे स्थानीय प्रशासनसँ राष्ट्रीय शासनधरि शोषणक तंत्र स्पष्ट होइत अछि। ‘शून्य’ समयक अर्थ निष्क्रिय निर्वात नहि, निर्णायक कार्यक प्रतीक्षा अछि।

२३. नव घर उठे : पुरान घर खसे (पृ. ५०–५६)

संग्रहक सभसँ विस्तृत आ घोषणात्मक रचनासभमे ई प्रमुख अछि। ‘घर’ केवल मकान नहि, सामाजिक व्यवस्था, जातीय संस्कार, परम्परागत सत्ता आ मानसिक जड़ताक रूपक अछि। पुरान संरचनाकेँ खसाएब आ नव आधारपर निर्माण करब—दूनू कर्म एक संग अपेक्षित अछि। मिथिलाक गौरव-गरिमा स्वीकार करैत कवि ओकर दरिद्रता, अशिक्षा, चापलूसी आ संस्थागत निर्बलताक निदान खोजैत छथि। पितृपुरुषक नामक मात्र उच्चारणक बदला वर्तमानक ठोस जिम्मेदारीपर बल अछि।

एकल शब्दक पाँती, अचानक विराम, प्रश्न, आदेश आ श्रेणीबद्ध उच्चारणसँ कविता आंदोलनकारी घोषणापत्रक रूप ग्रहण करैत अछि। ‘नव घर’क विचार रचनात्मक अछि, यद्यपि कतिपय पाँतीक रणप्रधान भाषाक लोकतांत्रिक अर्थ पर आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि। कविताक मूल सामर्थ्य पुरातन प्रतिष्ठाक बजाय सामाजिक पुनर्निर्माणकें मूल्य मानब अछि।

२४. एक आओर नर्कमे धकेलल जएबाक नाटक (पृ. ५७-५८)

सीढ़ी उतरैत रहितहुँ नर्कक अन्त नहि भेटब—ई आरम्भिक बिम्ब असफल परिवर्तनक चक्र देखबैत अछि। एकटा व्यक्ति वा दलक स्थानपर दोसर आबैत अछि, मुदा व्यवस्था सामान्य जनकें पुनः पीसैत अछि। कवि विजयोल्लासक बीच शोक, विष आ अन्धकारक प्रश्न पुछैत छथि। मातृभाषा आ मायकें मुक्त करबाक दायित्व व्यक्तिगत सुविधासँ बेसी महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि।

कविताक अन्तमे ‘ज्ञान नहि, नौकरी चाही’ आ ‘उपदेश नहि, काज चाही’क अभिमुखता अमूर्त विचारसँ ठोस आजीविका दिस घुसैत अछि। एहि कारण ई रचना नारा आ सामाजिक व्यवहारक बीचक अन्तर उजागर करैत अछि। ‘नर्क’क पुनरावृत्ति नियतिक नहि, बदलबाक योग्य व्यवस्थागत उत्पीड़नक अर्थ दैत अछि।

२५. किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत (पृ. ५९-६१)

कवि नवतुरिया रचनाकारकें यथास्थिति सँ भयभीत नहि होएबाक आग्रह करैत छथि। छलपूर्ण प्रशासक, अवसरवादी नेता, राजनीति आ ‘गरीबी हटएबाक’ खोखल घोषणा पर कटाक्ष अछि। ई कविता शब्द, भाषा आ रचनाकें संघर्षक साधन मानैत अछि; कविक दृष्टिमे प्रतिपक्षी शक्ति भेष बदलबाक कलामे पटु अछि, तें परिवर्तनकारीकें आत्मसतर्क रहबाक चाही।

‘सावधान’, ‘खबरदार’ आ ‘होशियार’ सन सम्बोधन राजनीतिक चेतावनीक लय रचैत अछि। गुलिवर आ पहाड़क आकारक बिम्ब अनुपातक उलटाव करैत अछि। एहि पाठक

भाषिक ‘हथियार’कें प्रतिरोधी लेखनक रूपकक रूपमे ग्रहण केलासँ साहित्यिक दायित्व प्रमुख रूपेँ उभरैत अछि।

२६. विष्णुर्योनिम् (पृ. ६२)

ई लघु प्रयोगधर्मी कविता परम्परागत वाक्य-विन्याससँ हटि देह, वस्त्र, निःश्वास, स्पर्श आ संवेदनाक अलग-अलग शब्दक क्रम प्रस्तुत करैत अछि। एकटा संगठित कथा वा उपदेशक बदला इन्द्रियानुभवक विखण्डित शब्दचित्र उपस्थित अछि। संस्कृताभास शीर्षक आ लोकप्रयुक्त देह-शब्दक दूरी पाठककें रीतिगत पवित्रता तथा भौतिक अनुभूतिक सम्बन्धपर सोचबाक अवसर दैत अछि।

एक-एक पदक स्वतन्त्र पाँती, खाली स्थान आ अर्थक असम्पूर्णता एकर शिल्पक मूल तत्त्व अछि। यौनिक अनुभूतिकें एकटा निश्चित नैतिक निर्णयमे बन्द करब पाठक व्यापक सम्भावनाक हानि होएत। मुद्रित पृष्ठक दृश्यविन्यास पढ़ब एतय विशेष आवश्यक अछि।

२७. युद्ध (पृ. ६३)

दू-चारि पाँतीक एहि कवितामे कवि गहीर विभाजन आ अधिकारक प्रश्नकें ‘युद्ध’क प्रतिमा द्वारा देखैत छथि। हमरा-हुनका बीच पैघ अन्तर आ खाधि सामान्य समन्वयसँ भराएब कठिन होइत देखाओल गेल अछि। छोट आकारक कारण प्रत्येक पद राजनीतिक निर्णयक भार वहैत अछि।

अधिकार, संघर्ष आ दूरीक रूपक अत्यन्त संक्षिप्त अछि। एतय ‘युद्ध’ सामाजिक टकरावक प्रतीक वा शाब्दिक संघर्ष—दूनू अर्थक सम्भावना रखैत अछि; आलोचनाक कार्य हिंसाक समर्थन मानि लेब नहि, वास्तविक असमानताक दाबकें विश्लेषित करब अछि।

२८. अपराजेय (पृ. ६३)

कवि भगवानकें सम्बोधित करैत अपन नझुकबाक संकल्प व्यक्त करैत छथि। आस्था, संशय आ आत्मसम्मानक टकराहट ई अल्पाक्षरी कविताक मूल विषय अछि। ईश्वरपर आश्रित होएबाक बदला वक्ता अपन निर्णय आ दृढ़ता पर भरोस करैत छथि।

दृढ़ देहभाषा—सीना तनल रहब—राजनीतिक संघर्षकेँ व्यक्तिगत नैतिक संकल्प बनबैत अछि। संग्रहक व्यापक विद्रोही शब्दावली एतय बहुत कम शब्दमे समाहित अछि।

२९. गतिशीलता (पृ. ६४)

ई छोट कविता अपन पहिचानक बदलैत प्रक्रियाकेँ स्वीकार करैत अछि। ‘आब हम ओ नहि रहलहुँ’क भाव जीवन, अनुभव आ विचारमे परिवर्तनक सूचक अछि। वक्ता अपन नव रूपक अंतिम निर्णय दोसर लोकपर छोड़ैत छथि।

आत्मपरिचयक अनिर्णीत अन्त पाठककेँ सक्रिय सहभागी बना दैत अछि। समूहक घोषणात्मक गीतसभक बीच ई आत्मनिरीक्षणक सूक्ष्म विराम अछि।

३०. वस्तुस्थिति (पृ. ६४)

मिथिलाक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्यकेँ सिंह, बाघ, कुरुर आ बानरक रूपक द्वारा देखाओल गेल अछि। वास्तविक सामर्थ्य दुर्लभ, छलपूर्ण अनुकरण सर्वत्र; मुदा कवि आशा नहि छोड़ैत छथि जे समय आबिते मुखौटा खसत आ वास्तविक शक्ति फेरि जागत।

पशु-रूपक लोकव्यंग्यकेँ सहज बनबैत अछि। ‘वस्तुस्थिति’ शीर्षकक अर्थ यथार्थक कथन अछि, मुदा अन्त आशावादी भविष्यदृष्टि स्थापित करैत अछि। एकर राजनीतिक अभिप्राय पशुसभक गुण-दोषसँ जोड़ल सांकेतिक संरचनामे निहित अछि।

३१. नपुंसक नेताक नाम (पृ. ६५-६६)

ई शीर्षक नेतृत्वक आत्मसमर्पणपर तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। कवि कहैत छथि जे मातृभाषाक लेल संघर्ष करैत शहादत देब वाला नेता अधिक सम्माननीय होइत, बजाय ओकर जे जातीय पहिचानकेँ निजी स्वार्थसँ बेचलनि। मर्दनसुमारीमे आन भाषाक नाम लिखाएब, गरीब लोकक पेटक मूल्यपर व्यक्तिगत लाभ उठाएब आ सांस्कृतिक अवमूल्यनक प्रसंग मुख्य आरोप छथि।

‘हम चाहैत छी’क आवर्तन वास्तविक मृत्यु-कामनाक बदला सार्वजनिक नैतिक जिम्मेदारीक चरम अतिशयोक्ति बनैत अछि। एहन आक्रामक वक्तव्यक शब्दार्थसँ अलग

ओकर व्यंग्यार्थ पर विचार आवश्यक अछि। कविता नेता आ लोकक बीच उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

३२. आइ (पृ. ६७-६८)

अतीत बाकसमे बन्द, वर्तमान सड़कपर छिड़िआयल आ भविष्य कुहेसमे लाल किरिन-जकाँ भटकैत—ई कालक तीन बिम्ब कविता केँ दिशा दैत अछि। शहरी आ ग्रामीण भूख, तिजोरीमे बन्द उजास, सरकारी नारा आ प्रशासनक चाटुकारिता समकालीन जीवनक द्वन्द्व बनैत अछि। लोक भोजनक बदला भाषण ‘खाइत’ अछि; मूल्यवृद्धि आ भ्रष्टाचार नागरिक अस्तित्वकेँ संकुचित करैत अछि।

मानवीकरण आ व्यंग्यात्मक रूपान्तरणक प्रयोग विशेष प्रभावी अछि। ‘आइ’ केवल कैलेंडरक दिन नहि, बीतल स्वाधीनता-स्वप्न आ अधूरा भविष्यक बीच अटकल पूरा समय अछि।

३३. अपराध (पृ. ६९-७०)

पुरान घर ढाहि नव सामाजिक मूल्यक स्थापना करब ‘अपराध’ कहल जाइत अछि—कवि एहि उलट न्यायकेँ चुनौती दैत छथि। परम्परागत आचार-संहिता, भाषिक प्रतिष्ठान आ स्वार्थी समीक्षक नव विचारकेँ दमन करैत अछि। नहि झुकबाक साहसक कारण कवि बारम्बार दण्डित होएबाक अनुभव करैत छथि, मुदा रक्तसँ नव बीज अंकुरित होएबाक बिम्ब परिवर्तनक अविनाशी सम्भावना रचैत अछि।

‘अपराध’ शीर्षक व्यंग्यात्मक उलटबाँसी अछि: वास्तविक अन्याय करनिहार प्रतिष्ठित आ ओकर आलोचक अभियुक्त। अलकतरासँ शब्द पोतब आ कएल गेल मृत्यु-दण्डक बिम्ब कलात्मक अभिव्यक्तिक दमनक रूपक अछि।

३४. गिद्ध (पृ. ७१-७२)

गिद्धक रूपक सत्ताक परजीवी स्वभावकेँ चित्रित करैत अछि। लोकक रक्त-मज्जाविहीन देहपर शोषकक भोजन, मूल्यवृद्धि, बाह्य सीमा-संकट आ भीतरी आतंक एके चित्रमे उपस्थित

अछि। कवि व्यवस्था द्वारा लोकक गरदनि दबाएबाक परिणामस्वरूप शब्दक बारूद बनि उठबाक सम्भावना देखैत छथि।

पाँखि, मुँह, रक्त आ अस्थिक देहप्रधान बिम्ब सामाजिक अपमानकें शारीरिक बनबैत अछि। बांग्लादेशक सन्दर्भ व्यापक उपमहाद्वीपीय राजनीतिक स्मृतिक साक्षी अछि, मुदा कविताक प्रत्येक रूपककें कोनो एक ऐतिहासिक घटना सँ एकरेखीय रूपें जोड़ब उचित नहि।

३५. मुक्ति-संघर्ष (पृ. ७३-७४)

पूर्वजक बनाओल ढहनाय लागल देवालक नीचाँ पिचायल जनसमुदाय कविताक केन्द्रीय बिम्ब अछि। साझा दुःखक सम्बोधनसँ आरम्भ कऽ कवि राजनीतिक दलाल, समझौतापरस्त वर्ग, भूख आ मुँहक आहार छिनबाक अन्यायपर प्रहार करैत छथि। ‘हमर कविता’ आ ‘हमर शब्द’क उपस्थितिसँ साहित्य समाजक पीड़ाकें मात्र लिखैत नहि, ओकर सक्रिय प्रतिवाद करबाक दायित्व स्वीकार करैत अछि।

देवाल, कील, हड्डी, इस्पाती फार आ आगिक बिम्ब दुःखक देहगत तीव्रता बढ़बैत अछि। अन्तमे गरीबीक चर्चा ‘फैशन’ बनि जाएबाक आलोचना साहित्यिक-राजनीतिक पाखण्डकें एक संग पहचानैत अछि।

३६. अग्नि-शिखा (पृ. ७५-७६)

शीर्षक-कविता सम्पूर्ण संग्रहक काव्यदृष्टिक संगम अछि। असंख्य छोट-छोट उजासक बीच एकटा अग्नि-शिखा ज्ञानक दम्भ, ईर्ष्या, स्वार्थ आ कुशासनकें चीरबाक शक्ति मानल गेल अछि। आधुनिक विज्ञानक ‘अल्ट्रा वायलेट रेज’, शल्य-चिकित्सा आ ‘ऑपरेशन-टेबल’क बिम्ब आगिक प्रचलित धार्मिक प्रतीककें नवा वैज्ञानिक रूप दैत अछि। पिता, माय, बहीन, प्रेयसी आ पत्नी सभक प्रतीक्षा संघर्षक घरेलू आ मानवीय मूल्य प्रकट करैत अछि।

सार्वजनिक मंच आ निजी शोकक पारस्परिक कटाव कविताक गहीर संवेदना अछि। अग्नि केवल विनाश नहि; रोगग्रस्त समाजक परीक्षण, मृतप्राय सम्बन्धक उष्मा आ आशाक किरण सेहो अछि। परिवारक आवाजसँ संघर्षकारी नायकक अमूर्त चित्र मानवीय बनैत अछि।

३७. ओकर गाम : ओकर शहर (पृ. ७७-७९)

ई कविता गामसँ शहरधरि भटकैत एक वंचित व्यक्तिक जीवनचरित रचैत अछि। मिथिलाक अनेक गाम, नगर आ महानगरक नाम क्रमसँ आबैत अछि; संगहि खेत, गाछी, पोखरि, पुस्तकालय, मोकदमा, छुआछूत, गरीबी, बेरोजगारी, शहरी शोषण आ पदलोलुपताक सूचि बनैत अछि। ई भूगोलक सूची केवल स्थानपरिचय नहि, श्रम आ अपमानक बिखरल अनुभवक नक्सा अछि।

लघु वाक्य आ विराम-बिन्दुक आवर्तन थाकल जीवनक छिन्नभिन्न गतिशीलता देखबैत अछि। गामकेँ निश्चल स्वर्ग वा शहरकेँ सम्पूर्ण नरक मानबाक बदला दुनू ठामक अलग-अलग कुरीति आ सम्भावना देखाओल गेल अछि। एहि कवितामे सामाजिक यथार्थ स्थान-नामक ठोस विवरणसँ प्रमाणिकता प्राप्त करैत अछि।

३८. समानधर्माक नाम (पृ. ८०-८२)

ई समान वैचारिक धरातलक लोककेँ सम्बोधित राजनीतिक आत्मपरीक्षण अछि। ‘टाइगर ब्राण्ड’क खोल, भाषण दैत सियार, आश्वासनक चक्करमे पड़ल जनसमुदाय आ सेठक तिजोरीसँ कवि सत्ताक छलावरण उघारैत छथि। लोकतंत्र, समाजवाद, न्याय आ गरीबी हटएबाक दावाक सोझाँ वास्तविक आर्थिक असमानता रखल गेल अछि। व्यक्ति ‘भोट’मे सिमटि जाएब नागरिक मर्यादाक संकटक मुख्य संकेत अछि।

सीधा सम्बोधन, प्रहारात्मक उपमा आ आर्थिक शब्दसंग्रह एकर प्रधान शिल्प अछि। ई पाठ आयातित विचारक सर्वथा अस्वीकार नहि, स्थानीय यथार्थ सँ कटि गेल सिद्धान्तक असारता पर प्रश्न करैत अछि।

३९. यमराजक विदेश-यात्रा (पृ. ८३-८५)

यमराजक अनुपस्थितिमे राज्य स्वयं ‘यमपुरी’ बनि गेल अछि—ई व्यंग्यात्मक कथाबीज कविता केँ संचालित करैत अछि। राजधानीक भीड़, सरकारी अधिकारी, सेठक तिजोरी, अकाल, अन्धकार, आतंक, छात्रक क्रोध आ न्यायव्यवस्थाक विफलता सामाजिक मृत्युक

દૃશ્ય બનબૈત અછિ। મિથકીય યમરાજક નામ આધુનિક શાસનક ક્રૂરતાકેં ચિહ્નિત કરૈત અછિ; યમરાજ છથિ બાહર, મુદા મૃત્યુ-તંત્ર ખીતર સક્રિય અછિ।

મિથકક રૂપાન્તરણ, વસ્તુક વિસ્તૃત વિન્યાસ આ સરકારી હાસ્યાસ્પદ આયોજનેક એકર વ્યંગ્યક પ્રમુખ સ્રોત અછિ। આધુનિક ઉપકરણ, આર્થિક સંસાધન આ પ્રાચીન કથા એકેસાંગ ઉપસ્થિત ભડ કડ વિચિત્ર રાજનીતિક યથાર્થ રચૈત અછિ।

૪૦. ગિરગિટ (પૃ. ૮૬-૮૯)

કવિ અવસરવાદી નેતાક રૂપ, ઝાણડા, દલ, પોશાક આ કથન બદલબાક પ્રવૃત્તિકેં ગિરગિટક બદલૈત રડસેં તુલના કરૈત છથિ। બાહ્ય શાલીનતા આ ખીતરક શોષણકારી પ્રવૃત્તિ બીચ તીક્ષ્ણ વિરોધ અછિ। પ્રશંસા, પુરસ્કાર, પદ, જનસેવા આ વિચારધારાક મુખૌટાસભસેં સાર્વજનિક વ્યક્તિ અપન સ્વાર્થકેં ઢાંપૈત અછિ। એહિમે નેતાક સંગ સાહિત્યિક પ્રતિષ્ઠાનક અવસરવાદ પર સેહો પ્રહાર અછિ।

પરિવર્તિત રંગક લમ્બી શૃંખલા વસ્તુતઃ ચરિત્રહીનતાક બહુરૂપિયા નાટ્ય અછિ। સૌન્દર્યપ્રસાધન, વિદેશી વસ્તુ આ ધાર્મિક-રાજનીતિક પ્રતીકસમૂહ મેલ કવિક ક્રીડાત્મક પરન્તુ કટુ ભાષા દેખબૈત અછિ। એહિ કવિતાક કેન્દ્ર ‘રૂપ બદલનાઈ’ નહિ, મૂલ્ય બદલિ સ્વાર્થ બચેનાઈ અછિ।

૪૧. ઘૂન લાગલ વટવૃક્ષ (પૃ. ૧૦-૧૪)

‘વટવૃક્ષ’ પુરાન વિશાલ વ્યવસ્થા, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ આ સામૂહિક આશ્રયક પરમ્પરાગત પ્રતીક અછિ। કવિ દેખબૈત છથિ જે ઓકર ખીતર ઘૂન લાગિ ગેલ અછિ: સુવિધાપરસ્તી, રિશ્વત, છદ્મ દેશભક્તિ, જાતિ-ગોત્રક સંરક્ષણ, પુરસ્કારક સિફારિશ આ જનક સ્વરક ઉપેક્ષા। કવિતા અનેક ચિહ્નિત ખણ્ડમે બઢૈત અછિ; ખણ્ડાન્તરમે સાર્વજનિક પાખણ્ડક અલગ-અલગ રૂપ ઉજાગર હોઈત અછિ। સામન્તી સ્મૃતિ આ આધુનિક સંસ્થાગત ભ્રષ્ટાચાર પરસ્પર સહાયક હોઈત દેખાઓલ ગેલ અછિ।

रोगग्रस्त वृक्षक रूपक दीर्घ कविता केँ एकसूत्रमे बान्हैत अछि। पुरस्कृत राजहंस, बाघक खोल, कंकालक जुलूस आ संसदक चित्र डर आ मान-प्रतिष्ठाक कृत्रिमताकेँ उघारैत अछि। ‘घून’ भीतरसँ चलैत क्षयक सूचक अछि—बाहरी भव्यतासँ जकरा नुकाएब सहज अछि।

४२. कलकत्ता आ राजकमल (पृ. ९५-१००)

राजकमल चौधरीकेँ केन्द्रमे राखि लिखल ई कविता संस्मरणात्मक श्रद्धाञ्जलि सँ आगाँ बढ़ि एक सर्जनशील विद्रोहीक व्यक्तित्वक पुनर्रचना करैत अछि। कवि राजकमलकेँ नवताक प्रवक्ता, व्यवस्थाक प्रतिपक्षी आ विश्वयुवा पीढ़ीक पक्षधर रूपमे देखैत छथि। कलकत्ताक ट्राम, कालीघाट, बेहाला, देहव्यापार, पूँजी आ शोषणक दृश्य हुनक संघर्षपूर्ण शहरी संसारक रूपमे अबैत अछि। मैथिली-हिन्दीक द्विभाषिक रचनाशीलता आ ‘कंकावती’क सन्दर्भ साहित्यिक अन्तरपाठ रचैत अछि।

कविताक राजकमल एक जीवनीक निर्विवाद तथ्यसमूह नहि, कविक मूल्यांकनसँ निर्मित रचनात्मक व्यक्तित्व अछि। एहि भेदकेँ ध्यानमे रखब शोधक लेल आवश्यक अछि। शहरी यथार्थ, काया आ आगिक घनीभूत भाषा स्वयं राजकमलक आधुनिकतावादी काव्य-जगतक संग संवाद करैत अछि।

४३. अहाँ सँ बहुत किछु कहबाक छल (पृ. १०१-१०२)

दिसम्बरक ठंढा साँझ, बस-स्टॉप, यात्रीक भीड़ आ ‘टू डाउन’क प्रतीक्षा पुरान परिचित मंजरी दासगुप्ताक स्मृति जगा दैत अछि। पूर्व-प्रेम, यौवनक समय, कार्यालयक फाइल, घरक दायित्व आ महँगाइ एकेसँग वर्तमानमे समाहित अछि। प्रेमक भूतकाल केवल मधुर संस्मरण नहि: ओकर मध्यवर्ती जीवन आर्थिक आ पारिवारिक बाध्यतासँ घेरल अछि।

शहरी स्थानक सटीक संकेत आ एक व्यक्तिक प्रत्यक्ष सम्बोधन संग्रहक सामान्यतः समूहकेँद्रित स्वरमे निजी सूक्ष्मता जोड़ैत अछि। समयक प्रवाह, बदलैत रूप-रंग आ स्मृति-संबद्ध दृश्य कविता केँ आत्मकथात्मक स्वर दैत अछि, मुदा ‘हम’केँ कविक जीवनक प्रमाण मानब आवश्यक नहि।

४४. कवितायाः प्रतिवादम् (पृ. १०३-१०४)

एहि कवितामे काव्यसृजनक सामाजिक उत्तरदायित्व मूल प्रश्न अछि। साम्प्रदायिक दंगा, जातिवाद, राजनीतिक हत्या, भूख, शोषण आ आर्थिक असमानताक बीच केवल स्तवन, शोकगीत वा प्रेमपत्र लिखि संतोष पएबाक आग्रहपर कवि आपत्ति करैत छथि। कविता केँ विरोधक नैतिक शक्तिक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि; साहित्यकारकेँ अपन पक्ष स्पष्ट करबाक माँग अछि।

संस्कृताभास शीर्षक आ सीधा ‘हे मीत’, ‘कॉमरेड’ सम्बोधन भाषिक स्तरपर द्वन्द्व रचैत अछि। अन्तक प्रश्न सभ—कविताक परिभाषा बदलय कि नहि, आत्मपरीक्षण करय कि नहि—एहि रचनाकेँ एकटा बन्द सिद्धान्त नहि, निरन्तर आलोचनात्मक संवाद बना दैत अछि।

४५. अस्ताचलगामी सूर्यकेँ प्रणाम (पृ. १०५-१०७)

डूबैत सूर्यक चित्र आ व्याप्त अन्हारक बीच कवि संघर्षरत उजासकेँ देखैत छथि। कालसमुद्रमे दीप-जकाँ चमकैत योद्धा, राति, गोली, बम, स्त्रीक आर्तनाद आ पुलिस-व्यवस्थाक निष्फलता समान दृश्यसमूह बनबैत अछि। सूर्य अस्त भऽ रहल अछि, तथापि संघर्ष समाप्त नहि; गाम, कसबा आ शहर भीतर आगि अझुओ धधकि रहल अछि।

प्रकृतिचित्रसँ राजनीतिक दृश्यक अचानक संक्रमण एकर मुख्य रचनाविधि अछि। प्रणाम समर्पणक नहि, निरन्तर संघर्षशील सूर्यक प्रति सम्मानक भाव अछि। कवि लोकक नायक-प्रतीक्षाक व्यर्थतापर प्रश्न करैत वर्तमानकेँ स्वयं जागबाक अवसर मानैत छथि।

४६. कविताश्री पाटलिपुत्रम् (पृ. १०८-१०९)

लोकतंत्रमे सरकारक विरोध करब अपराध घोषित होएबाक विडम्बना कविता केँ आरम्भ दैत अछि। कवि कविता आ विद्रोहक सम्बन्धकेँ तीक्ष्ण रूपेँ परखैत छथि: शब्द जखन जन-आन्दोलन, किसान-मजदूरक सक्रिय सहभागिता आ वास्तविक जीवनक संघर्षसँ कटि जाइत अछि तखन ओ प्रतिष्ठानक सजावट बनि जाइत अछि। ‘विद्रोह’ आ ‘विद्रोहाभास’क भेद ई रचनाक सैद्धान्तिक केन्द्र अछि।

पूर्णविरामक असामान्य बहुलता गद्य, घोषणापत्र आ कविता बीच सीमाकें जानि-बूझि धुँधला दैत अछि। खून, हँसू, छूरा, नारा आ फाइलक सूची सामाजिक वर्ग आ राजनीतिक शक्तिक मानचित्र बनैत अछि। कवि साहित्यिक राजनीतिक उपयोगितापर जोर दैत छथि, जकर संग कला-स्वायत्तताक प्रश्न सेहो आलोचनामे उठबाक चाही।

४७. चिड़ीक उतारा (पृ. ११०–११२)

मोहन भारद्वाजकें सम्बोधित ई पत्रात्मक कविता साहित्यिक प्रकाशन आ संस्था-व्यवस्थाक आलोचना अछि। नव लेखकक पोथी छापबाक मार्गमे सम्बन्धवाद, गोत्रवाद, पदाधिकार, पुरान विद्वानक प्रभुत्व आ सिफारिशी तंत्र बाधा बनैत अछि। कर्ण, दधीचि, एकलव्य, द्रोणाचार्य, अभिमन्यु आ चक्रव्यूहक मिथकीय दृष्टान्त नव पीढ़ीक संस्थागत संघर्षकें उजागर करैत अछि।

‘प्रिय भाइ’क आत्मीय शुरुआत आ अन्तिम संग्रामक भाषा बीच विकसित तनाव विशेष उल्लेखनीय अछि। परम्परागत महाभारतक पात्र आधुनिक प्रकाशन-तंत्रक सत्ता-संबन्धक रूपक बनैत अछि। ई कविता संग्रहक साहित्य-संस्थान विषयक आत्मालोचनाकें ठोस रूप दैत अछि।

४८. लोक सुनय लागल अछि आब (पृ. ११३–११४)

लोक आब भाषणक भाषा, शासकक मुस्की आ समाजवादक खोखल दावाकें पहचानए लागल अछि—कविताक मुख्य कथन ई अछि। युवा-रक्त, भूखक भट्टी, शतरंजक चाल आ श्मशानक रूपक शासकवर्गक दमनकारी रूप दिखबैत अछि। अन्तमे कवि अपराधी आ शोषकक नियन्त्रणमे रहल देशकें अपन देश मानबाक असहमति प्रकट करैत छथि।

‘आब’क आवृत्ति जनचेतनाक बदलैत क्षणकें चिह्नित करैत अछि। पदचाप सुनबाक बिम्ब नव सूर्यक आगमनक आशा उत्पन्न करैत अछि। ई कवितामे जनसमुदाय केवल पीड़ित नहि, सत्ता कें परखए लगल सक्रिय ऐतिहासिक कर्ता अछि।

४९. खबरदार (पृ. ११५)

वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण, विनाशकारी अस्त्र, आतंकवाद आ एककैसम शताब्दीक अस्थिरताक परिप्रेक्ष्यमे लिखल ई कविता सामूहिक सावधानीक आह्वान अछि। कथनक स्तरपर राष्ट्र-सुरक्षा, जनशक्ति पर भरोसा आ भेष बदलल विध्वंसकारी प्रवृत्ति सँ रक्षा प्रमुख अछि। कविक नजरि आब मिथिलाक निकटवर्ती प्रश्नसँ निकलि विश्व-व्यवस्थाक संकट धरि पहुँचैत अछि।

विस्फोटक शब्दसमूह आ तीव्र चेतावनी एहि कविताक गतिकेँ संचालित करैत अछि। सुरक्षा-चिन्ताक संग लोकाधारित निर्णयक आग्रह ओकर लोकतांत्रिक सम्भावना अछि। भय पैदा करबाक शब्दावली आ विवेकपूर्ण सावधानीक बीच संतुलन आलोचनात्मक रूपेँ जाँचबाक विषय अछि।

५०. सावधान (पृ. ११६)

ई कविता यथास्थिति, जी-हजुरी आ चापलूसीक विरुद्ध रचनाकारक संकल्प अछि। राजनीतिक डर वा सरकारी शक्तिक सोझाँ चुप रहने साहित्यक दायित्व पूरा नहि होइत। कवि रचनाकेँ प्रक्षेपास्त्र आ भाषाकेँ ब्रह्मास्त्र कहि शब्दक जाग्रतकारी सामर्थ्यक घोषणा करैत छथि।

‘नहि’क पुनरावृत्ति अस्वीकृतिक लय बनबैत अछि। वैचारिक रूपेँ ई पृष्ठ ५९क ‘किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत’सँ संवाद करैत अछि, मुदा शब्दशः ओकर पुनर्मुद्रण नहि: पछिला कवितामे बदलैत राजनीतिक सन्दर्भ आ ‘मानव-बम’क रूपक जुड़ैत अछि। एहि भेदकेँ पाठमे बचाएब आवश्यक अछि।

५१. होशियार (पृ. ११७)

अराजकता, घोटाला, आतंकी हिंसा, अपराधीकरण आ राज्यसत्ताक संरक्षणप्राप्त दुष्प्रवृत्ति एहि कविताक संकटसूची अछि। कवि देशक माटि-पानि आ लोकक अस्मिता दाँवपर लागल देखैत छथि। सुरक्षा केवल सीमापर नहि, राजनीति आ प्रशासनक नैतिक व्यवहारमे सेहो आवश्यक अछि।

शीर्षक स्वयं एकटा चेतावनीक शब्द। अन्तिम ‘सावधान, होशियार’क संयुक्त उच्चारण पिछला दू कविताकें लघु चेतावनी-त्रयी बनबैत अछि। एहि त्रयीमे प्रतिरोधी भाषा, सार्वजनिक सतर्कता आ नागरिक अधिकार परस्पर गुंफल अछि।

५२. देश-दर्शन : बीसम शताब्दीक सीमान्तपर (पृ. ११८-१२२)

ई दीर्घ कविता शताब्दी-अन्तक सामाजिक-राजनीतिक समग्र दृश्यक प्रयास अछि। चारा घोटाला, हवाला, सेंट किट्स, बाजारू माध्यम, उपभोक्तावादी अर्थनीति, इलेक्ट्रॉनिक विज्ञापन, जाति-धर्मक राजनीति आ पर्यावरण-संकट—एहि सभकें कवि एक व्यापक मूल्यविघटनक रूपमे जोड़ैत छथि। ‘एक मंचपर’ पश्चिमी लोकप्रिय संस्कृति आ भारतीय शास्त्रीय संगीतक उपस्थितिकें सांस्कृतिक मिश्रणक बिम्ब बनाओल गेल अछि।

समाचार-शैलीक विवरण, कथोपकथन आ आक्रोशपूर्ण उपमा रचनाकें समकालीन युग-आलेखक स्वर दैत अछि। सांस्कृतिक आदान-प्रदानकें केवल पतन मानबाक बजाय कविता जे आर्थिक असमानता, राजनीतिक अवसरवाद आ मीडियाक सम्मोहन देखबैत अछि ताहि कारणक पृथक विवेचन जरूरी अछि। ई बहुस्तरीय पाठक आलोचनात्मक मूल्यांकन अछि।

५३. गुजरातनामा (पृ. १२३-१२४)

‘गुजरातनामा’ साम्प्रदायिक हिंसाक विरुद्ध लिखल गहन प्रतिरोध-कविता अछि। कवि हिंसक भीड़क क्रूरता, स्त्री आ बच्चापर अत्याचार, प्रशासनिक निष्क्रियता आ राजनीतिक विजयोल्लासक अमानवीयता पर क्षोभ व्यक्त करैत छथि। ‘बड़ लाज लगैछ हमरा’क आत्मस्वीकृति पीड़ित लोकक संग समयपर नहि ठाढ़ भऽ सकबाक नैतिक अपराधबोध रूपमे अबैत अछि।

शीर्षक एकटा सार्वजनिक घटना-स्मृतिक काव्यात्मक साक्ष्य बनैत अछि; एहिमे वर्णित आरोपकें ऐतिहासिक निष्कर्षक रूपमे उद्धृत करबाक लेल स्वतंत्र दस्तावेजी सत्यापन जरूरी अछि। कविता कें सर्वप्रथम मानवीय करुणा आ साम्प्रदायिक हिंसा-विरोधक प्रत्यक्ष वक्तव्यक रूपमे पढ़बाक चाही।

५४. चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः (पृ. १२५-१३१)

संस्कृतसूत्ररूप शीर्षक आ वर्तमान धर्म-जाति-सम्प्रदाय आधारित वोट-राजनीतिक चित्र बीच कविता गहीर विरोध रचैत अछि। अपहरण, फिरौती, अपराधीकरण, पुलिस-व्यवस्थाक असफलता, धनबल, जातीय विखण्डन आ बौद्धिक मौनक विस्तृत चित्र देखाओल गेल अछि। धर्मक नामपर चलैत प्रपंचक सोझाँ वास्तविक नैतिक न्यायक प्रश्न प्रमुख होइत अछि। ‘लोकतंत्र’ कहाएतहुँ सर्वहारा जनक निःशब्द होएब कविक मूल चिन्ता अछि।

लम्बा बयान, समाचार-जकाँ विवरण, आक्रोशपूर्ण विशेषण आ विरोधाभासी दृश्य एकर रचनात्मक उपकरण अछि। शीर्षकक शास्त्रीय भाषा आधुनिक सत्ता-व्यवहारक नैतिक शून्यताकेँ परखबाक माप बनैत अछि। उद्धृत संस्कृतसूत्रक दार्शनिक मूल-प्रसंग आ एहि कविताक व्यंग्यार्थकेँ एक नहि मानबाक चाही।

५५. मुक्त भेल बजार (पृ. १३२-१३५)

संग्रहक अन्तिम कविता आर्थिक उदारीकरण आ बाजारवादक सामाजिक प्रभाव पर केन्द्रित अछि। टेलीविजन, फ्रिज, मॉल, बिग बजार, बहुराष्ट्रीय कम्पनी, विज्ञापन आ विदेशी मालक आकर्षणक मध्य देशी उद्योगक संकट, मजदूरक दुरवस्था, वर्गीय विषमता आ मध्यमवर्गक आकांक्षाक चित्र अछि। बजार ‘मुक्त’ होइतहुँ जनजीवन मुक्त नहि—शीर्षकक मुख्य विडम्बना ई अछि।

कवि खरीद-बिक्री, उपभोक्ता-लालसा आ मीडियाक प्रभावक संग जातीय-साम्प्रदायिक विखण्डनक सम्बन्ध देखैत छथि। अन्तिम प्रश्नसभ बाजारवादी व्यवस्थाक विकल्प, सामाजिक संघर्षशीलता आ तर्काधारित परिवर्तनक दिशि पाठककेँ भेजैत अछि। एहन आलोचनाक संग बाजारसँ उत्पन्न नवा अवसरक प्रश्न सेहो शोधक समीक्षात्मक बहसक अंश भऽ सकैत अछि; मूल पाठक पक्ष स्पष्ट रूपेँ शोषित जनसँ जुड़ल अछि।

५. समेकित आलोचनात्मक मूल्यांकन

५.१ संग्रहक विशिष्ट उपलब्धि

‘अग्नि-शिखा’क मूल सफलता ई अछि जे साहित्यिक भाषा समाजक वंचित जनक प्रश्नकें केंद्रमे रखैत अछि, आ कविता स्वयं अपन सांस्कृतिक समाजक पक्षपात, निष्क्रियता आ संस्थागत पाखण्डसँ मुठभेड़ करैत अछि। एहि संग्रहमे मैथिली भाषिक अधिकारक दस्तावेज, मिथिलाक भूगोलक जन-इतिहास, राजनीतिक व्यंग्यक प्रखर उदाहरण आ आधुनिक मुक्तछन्दक प्रयोगशाला—चारू रूपमे पढ़ल जा सकैछ।

५.२ अनुभव आ घोषणाक तनाव

कवितामे जखन रौदी, बाढ़ि, मडुआक रोटी, स्कूलक फीस, माँक प्रतीक्षा, बस-स्टॉप आ श्रमिकक देहक ठोस अनुभव उपस्थित अछि तखन पाठ विशेष घनत्व पबैत अछि। जखन एके पाँतीमे अनेक राजनीतिक नारा, अपमानजनक विशेषण वा हिंसात्मक प्रतीक जमा भऽ जाइत अछि तखन कतहु कविता घोषणामुखी भऽ पड़ैत अछि। तथापि ई द्वन्द्व कविक समयबोधक अभिन्न अंश अछि; एकरा नकारि देब नहि, तकर कार्य-कारण समझबाक चाही।

५.३ लोकपक्षधरता आ प्रतिनिधित्वक सीमा

कवि श्रमिक, स्त्री, किसान, छात्र आ वंचित लोकक पक्षमे स्पष्ट उभैत छथि। मुदा सभ पात्र समान रूपेँ अपन स्वरमे नहि बजैत छथि। स्त्रीक देह वा जाति-नामक व्यंग्यात्मक प्रयोग पर आलोचनात्मक जाँच जरूरी अछि जे शोषण-विरोधी भाषा स्वयं कतहु पुरान अपमानक पदावलीक पुनरुत्पादन तऽ नहि करैत। जनवादी साहित्यक गहीर मूल्यांकनमे ई प्रश्न उपेक्षित नहि रहबाक चाही।

५.४ इतिहासक संग पाठक सम्बन्ध

इन्दिराक नाम, संवैधानिक भाषा-आन्दोलन, नक्सलाइट, गुजरातक हिंसा, राजनीतिक घोटाला आ उदारीकरणक प्रसंग संग्रहक ऐतिहासिक महत्त्व बढ़बैत अछि। मुदा कविता

इतिहासक मौलिक अभिलेख नहि, इतिहासक अनुभवक कलात्मक पुनर्रचना अछि। घटनाक काल, विधिक स्थिति आ दावासभक सत्यापन लेल सरकारी अभिलेख, स्वतंत्र ऐतिहासिक दस्तावेज आ समकालीन समाचारक अलग अनुसंधान अपेक्षित होएत।

५.५ राजकमल-संवाद आ आधुनिक मैथिली कविता

‘कलकत्ता आ राजकमल’मे राजकमल चौधरीकेँ नवताक पक्षधर आ विद्रोहीक रूपमे प्रस्तुत करब साहित्यिक परम्पराक भीतर संवादक संकेत अछि। राजकमल पर बाह्य आधुनिकतावादी अध्ययन हुनकर बहुभाषिकता आ प्रयोगशीलताकेँ रेखांकित करैत अछि; मुदा ‘अग्नि-शिखा’क कविक राजकमल-विवेचनकेँ एहि अध्ययने स्वतः सिद्ध करैत अछि, एहन दावा नहि कएल जा सकैत अछि। प्राथमिक प्रमाण मल्लिकक अपन कविता थिक।

६. निष्कर्ष

‘अग्नि-शिखा’मे जनपक्षधर कविता मिथिलाक भाषा-आन्दोलन, राजनीतिक असंतोष, जाति-व्यवस्था, भूख, श्रम, स्त्री-अनुभव, सांस्कृतिक पाखण्ड आ बाजारवादी विषमताक एक व्यापक आलोचनात्मक प्रतिमान बनबैत अछि। कविक कविता निर्जीव प्रशंसा अथवा निष्क्रिय सांस्कृतिक गौरवक विरोधमे अछि। ओ अपन लोकवेदक पक्षधर छथि, मुदा ओकर भीतरक यथास्थितिपर सेहो प्रश्न उठबैत छथि। ई द्वंद्व एकर प्रमुख जीवन्तता अछि।

सभ ५५ कविताक पाठसँ स्पष्ट अछि जे एहि संग्रहमे ‘आगि’क वास्तविक अर्थ सदिखन रक्तपात नहि, प्रायः चेतनाक ऊष्मा, आत्मालोचन, अन्यायसँ असहमति आ नवजीवनक संभावना अछि। कविता जतय उपदेशात्मक वा कठोर होइत अछि, ओतहु ओकर मूल चिन्ता जनक मानवीय गरिमा अछि। एहि कारण पुस्तककेँ केवल राजनीतिक नाराक संकलन नहि, आधुनिक मैथिली कवितामे भाषा, सत्ता आ लोकजीवनक संग्रामक बहुआयामी साहित्यिक दस्तावेज मानि पढ़ल जाएबाक चाही।

परिशिष्ट : सम्पूर्ण ५५ कविता, मूल पृष्ठ आ अनुक्रमणिकाक क्रम

मूल 'कविता-क्रम'क ५० प्रविष्टिक अनुरूप क्रम देल गेल अछि। जाहि प्रविष्टिमे दू अलग कविता अछि, तकर संख्या एके मूल प्रविष्टि सँ जोड़ल गेल अछि। एतय अनुक्रमणिकाक संयुक्त शीर्षककेँ अलग-अलग कविता रूपमे देल गेल अछि।

मूल कविता-क्रमक प्रविष्टि ६ (साँझ/मैथिल ललना), ७ (साँप/मास्टर साहेब), ८ (मैथिली आन्दोलन/मिनि गर्ल), २४ (युद्ध/अपराजेय) आ २५ (गतिशीलता/वस्तुस्थिति)मे दू-दू स्वतंत्र कविता अछि।

कविता	मूल क्रम	नाम	पृष्ठ
1	1	शहरसँ गाम धरि	९-११
2	2	एक बुढ़ी मासु	१२-१३
3	3	एक डिब्बा क्रांति	१४-१५
4	4	हे हमर अग्रज शान्त भऽ जाउ	१६-१७
5	5	बंगाल बन्द	१८-१९
6	6	साँझ	२०
7	6	मैथिल ललना	२०
8	7	साँप	२१
9	7	मास्टर साहेब	२१
10	8	मैथिली आन्दोलन	२२
11	8	मिनि गर्ल	२२
12	9	माइ डियर इन्दिरा	२३-२४
13	10	स्वाधीनताक आँगनमे	२५-२६
14	11	कीर्तन	२७-२८

कविता	मूल क्रम	नाम	पृष्ठ
15	12	कैंसर	२९-३०
16	13	पूजा-गृह	३१-३२
17	14	चारि लाख बानरक बीच	३३-३४
18	15	अपन लोकवेदक नाम	३५-३९
19	16	नक्सलाइट	४०-४१
20	17	विद्युत-चाप	४२-४४
21	18	छापामार युद्ध	४५-४७
22	19	शून्य काल	४८-४९
23	20	नव घर उठे : पुरान घर खसे	५०-५६
24	21	एक आओर नर्कमे धकेलल जएबाक नाटक	५७-५८
25	22	किकिआइत कुकूरक प्रति बन्दूकसँ खेलाइत	५९-६१
26	23	विष्णुर्योनिम्	६२
27	24	युद्ध	६३
28	24	अपराजेय	६३
29	25	गतिशीलता	६४
30	25	वस्तुस्थिति	६४
31	26	नपुंसक नेताक नाम	६५-६६
32	27	आइ	६७-६८
33	28	अपराध	६९-७०
34	29	गिद्ध	७१-७२
35	30	मुक्ति-संघर्ष	७३-७४
36	31	अग्नि-शिखा	७५-७६

कविता	मूल क्रम	नाम	पृष्ठ
37	32	ओकर गाम : ओकर शहर	७७-७९
38	33	समानधर्माक नाम	८०-८२
39	34	यमराजक विदेश-यात्रा	८३-८५
40	35	गिरगिट	८६-८९
41	36	घून लागल वटवृक्ष	९०-९४
42	37	कलकत्ता आ राजकमल	९५-१००
43	38	अहाँ सँ बहुत किछु कहबाक छल	१०१-१०२
44	39	कविताया: प्रतिवादम्	१०३-१०४
45	40	अस्ताचलगामी सूर्यकेँ प्रणाम	१०५-१०७
46	41	कविताश्री पाटलिपुत्रम्	१०८-१०९
47	42	चिट्ठीक उतारा	११०-११२
48	43	लोक सुनय लागल अछि आब	११३-११४
49	44	खबरदार	११५
50	45	सावधान	११६
51	46	होशियार	११७
52	47	देश-दर्शन : बीसम शताब्दीक सीमान्तपर	११८-१२२
53	48	गुजरातनामा	१२३-१२४
54	49	चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः	१२५-१३१
55	50	मुक्त भेल बजार	१३२-१३५

अध्याय २ • वीरेन्द्र मल्लिक साहित्य

अथातो काव्य जिज्ञासा

४६ कविताक अध्ययन • प्रकृति, वैश्वीकरण, मातृभाषा आ कविताक आत्मविवेचन

मूल अनुक्रमणिकाक आधार पर पूर्ण कविता-सूची

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
1	अशोक वृक्ष	11	प्रकृति, दृश्य
2	बबूर गाछ	12	प्रकृति, जिजीविषा
3	श्यामा सुन्दरी	13	रेलगति, प्रकृति
4	आदिवा सीक घर	14	आदिवासी, घर
5	पटना सँ आयल अछि संवाद	15-17	सत्ता, संवाद
6	बारूदक ढेरी पर कविता	18-21	हिंसा, प्रतिरोध

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	क संग खेलाइ त		
	धन्य थिक		
7	ब्रह्माणी नदीक जल	22-26	नदी, पर्यावरण
8	एक टा छल गाम हमर	27-32	गाम, स्मृति
9	अबंड जकाँ बौआइ त	33-36	उत्सव, उपभोक्तावाद
10	मैथिली बरनी	37-39	क्षणचित्र, प्रकृति
11	महाना यकक अरण्य- यात्रा	40-43	राजनीति, पूँजी
12	शाइन इंडिया	44-46	विकासक व्यंग्य
13	शंकरा	47-48	धर्म, आचरण

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	चार्य		
14	आहि रे बा! आहि रे बा!!	49-50	लोकव्यंग्य
15	कर्मकां ड	51-52	धर्म, कर्म
16	कालच क्र	53-54	समय, विवेक
	अथातो		
17	काव्य जिज्ञा सा	55-57	कविता-दर्शन
18	हिसाब- किताब	58-60	विकास, जवाबदेही
	एलेक्श		
19	न! एलेक्श न!	61-62	चुनाव, नारा
	भाषा		
20	ठाढ़ बजार मे	63-64	भाषा, बजार
21	ओ करत	65-66	शासन, संसदीयता

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	मौज! ओ करत राज!!		
22	रेल! रेल!!	67-68	लोकतंत्र, प्रदर्शन
23	नेता- पुराण	69-70	व्यंग्य, नेता
24	कविता बिकबा लए तैयार	71-72	साहित्य, वस्तुकरण
25	एक पयर हो सदा माटि पर	73-74	माटि, आडम्बर
26	बीच सड़क पर	75	आम आदमी, भूख
27	डांस! डेमोक्रे सी डांस!	76	जनतंत्र, तमाशा
28	विकल्प	77-78	राजनीतिक

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
	नहि आर कोनो		विकल्प
29	आइ- क्यू	79	शिक्षा, समाज
30	पार्टनर	80	साझेदारी, सत्ता
31	अपन दुलरु आक नाम	81-82	वंशवाद, परिवार
32	इनटॉल रेंस	83-84	सहनशीलता, समाज
33	बुलेट बन्दूक	85	हिंसा, बंदूक
34	मातृभा षा	86	मातृभाषा, शिक्षा
35	किराया क मकान	87	जीवन, अनित्यता
36	बजार	88	बाजार, पूँजी
37	वैश्वीकर ण	89-91	भूमण्डलीकरण
38	युग- संदेश	92	युगचेतना, संघर्ष

क्र.	कविता	मूल पृष्ठ	प्रधान विषय
39	टा-टा! बाइ- बाइ!!	93-95	स्त्री, आधुनिकता
40	भोला बाबू	96-97	मैथिलीसेवा
41	कलम सिपाही : राजक मल	98	साहित्यिक स्मृति
42	वाक्- विमर्श	99-100	शब्द, साहित्य
43	अथ कविता उवाच	101-104	कविता, विश्व
44	घर- बाहर	105-107	घर-बाहर, राजनीति
45	जय हो मानव जातिक जय हो	108-109	मानवता, शान्ति
46	बन्न करू ड्रामा श्रीमान	110-111	नागरिक व्यंग्य

वीरेन्द्र मल्लिकक एहि संग्रहमे ४६ कविता अछि। कविता-दर-कविता व्याख्याक संग प्रकृति, सामाजिक प्रतिरोध, भाषिक अधिकार आ समकालीन सभ्यताक प्रश्न पर विचार कएल गेल अछि।

समग्र काव्य-संसारक प्रमुख प्रश्न

कविता, जीवन आ नैतिक प्रतिबद्धता

संग्रहक शीर्षक कविता ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे कविता केवल मनोरंजनक वस्तु वा अलंकारिक चमत्कार नहि, जीवनक लेल आवश्यक संवेदना अछि। खेत, मजदूर, न्याय, शब्द, भाषाक प्राण आ जनजीवनक अभाव कविता लेल वस्तु-क्षेत्र बनैत अछि। ‘कविता बिकबा लए तैयार’ एहि मूल्यबोधक उलट दृश्य अछि: कविता मालक रूपमे बिकबाक भय। ‘वाक्-विमर्श’ आ ‘अथ कविता उवाच’ लेखनक आत्मपरीक्षणक दोसर विस्तार अछि। एहि चारू रचनाकें संग पढ़लासँ कविक काव्य-दर्शन स्पष्ट होइत अछि—कविता सामाजिक असत्यक पर्दा हटाबय, मुदा स्वयं बाजारू प्रतिष्ठा वा केवल उपदेशमे विलीन नहि भऽ जाए।

जनतंत्र, सत्ता आ सार्वजनिक भाषाक विडम्बना

‘पटना सँ आयल अछि संवाद’, ‘एलेक्शन! एलेक्शन!’, ‘ओ करत मौज! ओ करत राज!!’, ‘रेल! रेल!!’, ‘नेता-पुराण’, ‘डांस! डेमोक्रेसी डांस!’, ‘विकल्प नहि आर कोनो’ आ ‘घर-बाहर’ सत्ता-संरचना, विज्ञापन, शासन, भ्रष्टाचार आ वंशवादी प्रवृत्तिक बारम्बार परीक्षण करैत अछि। एतय जनतंत्रक शब्द आ जनताक अनुभूति बीचक दूरी प्रमुख तनाव अछि। ध्वन्यात्मक शीर्षक, उद्गार, आवृत्ति आ प्रत्यक्ष सम्बोधन लोकसभाक भाषण, चुनावी नारा आ जनविमर्शक नाटकीयताकें कविताक रूपमे मोड़ैत अछि। मुदा शक्ति एकर सीधापनमे अछि तँ जोखिम सेहो एहिमे अछि: कतेको पाँति विचारक उद्धोष बनि जाइत अछि।

बजार, उपभोक्तावाद आ भूमण्डलीकरण

‘शाइन इंडिया’, ‘महानायकक अरण्य-यात्रा’, ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’, ‘कविता बिकबा लए तैयार’, ‘बजार’ आ ‘वैश्वीकरण’मे उपभोक्ता समाजक आलोचना केन्द्रीय अछि। विकासक चमकक पाछाँ असमानता, सांस्कृतिक वस्तुकरण, श्रमिकक असुरक्षा आ भाषाक उपयोगितावादी अवमूल्यन देखाओल गेल अछि। बाजारकें कवि मात्र खरीद-बिक्रीक स्थान नहि, एहन सामाजिक विवेक-विधान बुझैत छथि जतय मूल्यमापक मनुख नहि, मुनाफा बनि जाइत अछि। ‘शाइन इंडिया’क चमकीला शीर्षक आ कविता-श्रमक जमीन-सापेक्ष दृश्य बीचक टकराव एकर प्रभावकारी तकनीक अछि।

गाम, वन, नदी आ बदलैत पारिस्थितिकी

‘अशोक वृक्ष’, ‘बबूर गाछ’, ‘श्यामा सुन्दरी’, ‘आदिवासीक घर’, ‘धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल’, ‘एक टा छल गाम हमर’ आ ‘अबंड जकाँ बाँआइत’ प्रकृति-विषयक सामान्य सौन्दर्य वर्णनसँ आगाँ बढ़ैत अछि। कटैत गाछ, रेलक खिड़की, विस्थापित बसाहट, प्रदूषण, जंगलक उन्मूलन, नदीक स्मृति आ अराजक सामूहिक दृश्य मिलि एकटा बदलैत धरतीक दस्तावेज बनैत अछि। लघु दृश्य सँ आरम्भ भऽ किछु कविता सभ विस्तृत सामाजिक आख्यानक रूप लैत अछि। एहि विस्तारसँ प्राकृतिक छवि आ सत्ता-संरचनाक सम्बन्ध पढ़ल जा सकैत अछि।

भाषा, मातृभाषा आ सांस्कृतिक अस्मिता

‘मैथिली बरनी’, ‘मातृभाषा’, ‘भोला बाबू’ आ ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’ कहैत अछि जे भाषा केवल संचारक औजार नहि, पीढ़ीक स्मृति आ सामुदायिक आत्मसम्मानक स्थल अछि। अंग्रेजी प्रभुत्व, शिक्षा-नीति, प्रकाशन-प्रतिष्ठा आ भाषायी विकल्पक दबाव कविक चिन्ताक विषय अछि। ‘मैथिली बरनी’क लघु खण्ड सभ अलग-अलग दृश्यसँ प्रादेशिक जीवनबोध रचैत अछि। ‘भोला बाबू’मे व्यक्तित्वक माध्यमसँ मातृभाषाक जनजागरण चिन्हित होइत

अछि। एहि काव्य-दृष्टिमे मैथिलीप्रेम राजनीतिक अर्थ ग्रहण करैत अछि, केवल भावुक अनुराग नहि रहैत अछि।

वर्ग, जाति, आदिवासी आ वञ्चित मनुष्य

कवि सामाजिक असमानताकेँ सूक्ष्म निजी पीड़ा आ संरचनात्मक अन्यायक दुनू स्तर पर पढ़बाक आग्रह करैत छथि। ‘आदिवासीक घर’मे प्राकृतिक परिवेश आ अभावक सह-अस्तित्व अछि; ‘बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत’मे वर्ग-चेतना, हिंसा, विस्थापन आ प्रतिरोधक जटिल सम्बन्ध भेटैत अछि। ‘विकल्प नहि आर कोनो’ भूख आ राजनीतिक निष्क्रियताक असह्य परिणाम देखबैत अछि। जँ कवि वञ्चितक पक्षमे बाजैत छथि तँ आलोचककेँ ई सेहो देखबाक चाही जे अनेक स्थाने वञ्चित पात्र स्वयं विस्तृत आवाज नहि पाबि, कविक नैतिक वक्तव्यक अन्तर्गत उपस्थित छथि। एहन प्रश्न कविता-संग्रहक महत्त्व घटबैत नहि, ओकर पाठकेँ आर जिम्मेवार बनबैत अछि।

धर्म, कर्मकाण्ड आ नैतिक विवेक

‘शंकराचार्य’, ‘कर्मकाण्ड’, ‘कालचक्र’ आ ‘आहि रे बा! आहि रे बा!!’मे धर्मसँ अधिक धार्मिक सत्ता, दम्भ, ढोंग आ नैतिक पतनक आलोचना अछि। कवि कर्म आ आचरणक सम्बन्ध खोजैत छथि। ‘कर्मकाण्ड’मे उच्च मानदण्डक अभाव, शिक्षा आ उद्योगक नामपर विसंगति देखाओल गेल अछि; ‘कालचक्र’मे समयक रेखीय प्रगतिवाद पर अविश्वास अछि। एहि पाठमे विश्वासक समस्त रूपक निषेध देखब अनुचित होयत; मूल निशाना धार्मिक प्रतीकक राजनीतिक दुरुपयोग आ मनुष्यक प्रति असंवेदनशीलता अछि।

स्त्री-अनुभव आ सामाजिक विषमता

‘टा-टा! बाड़-बाड़!!’मे आधुनिकता, देह, शिक्षा, स्त्री-सम्मान आ पितृसत्तात्मक दृष्टिक टकराव अछि। ‘धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल’क जीवंत नदी-कल्पना आ ‘बन्न करू ड्रामा श्रीमान’क स्त्री-असमानताविरोधी हस्तक्षेप विषयकेँ आर फैलाबैत अछि। कविक संवेदना

स्त्रीक सम्मानक पक्षमे अछि, मुदा किछु प्रस्तुति स्त्रीकें स्वतन्त्र कथावाचकक बदला सामाजिक विमर्शक प्रतीक बना सकैत अछि—ई आलोचनात्मक सावधानी अपरिहार्य अछि।

साहित्यिक स्मृति आ जनकवि-परम्परा

‘कलम सिपाही : राजकमल’, ‘भोला बाबू’, ‘वाक्-विमर्श’ आ शीर्षक कविता साहित्यिक परम्परा-सँ कविक आत्मसंवाद रचैत अछि। राजकमलक रचनाशीलता, भोला बाबूक भाषिक योगदान, पूर्ववर्ती कविताक स्मृति आ समकालीन कविक संकट मिलि आलोचनाक केन्द्र बनैत अछि। शास्त्रीय संकेत ‘अथातो’ आ आधुनिक बोलचालक मिश्रण एहि काव्य-संसारक अपन रूप अछि। कवि काव्य-शिल्पकें मानवता आ सामाजिक न्यायसँ अलग कए नहि देखैत छथि।

भाषा-शिल्प : आह्वान, पुनरावृत्ति आ बहुस्तरीय शब्दावली

संग्रहमे मैथिली मूल व्याकरण आ लोक-स्वरक संग संस्कृतनिष्ठ पदावली, हिन्दी सँ आएल राजनीतिक शब्द, अंग्रेजी-प्रेरित शीर्षक (‘आइ-क्यू’, ‘शाइन इंडिया’, ‘इनटॉलरेंस’, ‘डांस! डेमोक्रेसी डांस!’) आ आधुनिक तकनीकी-सामाजिक शब्द भेटैत अछि। ई मिश्रण कोनो साधारण भाषिक विचलन नहि; कविताक सामाजिक संसार स्वयं बहुभाषिक अछि। ‘अछि’, ‘सँ’, ‘कै’, ‘भऽ’, ‘जकाँ’, ‘ककरो’, ‘मुदा’ जकाँ मैथिली रूप मूल धरातल बनबैत अछि। आवृत्तिपूर्ण पदबन्ध, व्यंग्यात्मक सम्बोधन, खण्डित लय, प्रश्नवाचक वाक्य आ सूचीबद्ध आरोप एक प्रकारक जनमंचीय कविता सृजित करैत अछि। गीतिमय लघु कविता आ विस्तृत मुक्तछन्द दुनू संग-साथ उपस्थित अछि।

अन्तर्विरोध आ कलात्मक उपलब्धि

एहि संग्रहक पैघ गुण ओकर स्पष्ट जनपक्षधरता, समकालीन विषयक साहसिक सामना आ भाषा-प्रकृतिक बीच सहज आवाजाही अछि। लघु प्राकृतिक कविता सभमे संयमित बिम्ब; दीर्घ सामाजिक कविता सभमे वेगवान कथन; आ व्यंग्यात्मक रचनामे नारा-ध्वनि व्यंजित होइत अछि। सीमाक प्रश्न सेहो अछि: बहुधा कवि मुद्दाक नाम सीधे लैत छथि,

जाहिसँ पाठकक खोजबाक अवकाश घटि सकैत अछि; ‘बजार’, ‘भ्रष्टाचार’, ‘विकास’, ‘साम्राज्यवाद’ जकाँ पदक अधिक प्रयोग अलग-अलग कविताक स्वरमे साम्यता अनैत अछि। तैयो विविध प्रसंग आ स्वरतत्त्व संग्रहकें एकमेव राजनीतिक घोषणापत्र बनबासँ रोकैत अछि।

कविता-दर-कविता आलोचनात्मक अध्ययन

१. अशोक वृक्ष

मूल पृष्ठ : 11 | प्रधान विषय : प्रकृति, दृश्य

कविता डाकबंगलाक आगाँव हरियर परिसर, चमकैत पानि, चहरदेवारी आ ‘स्वीमिंग सूट’ पहिरने युवतीक दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। बीचमे ठाढ़ अशोक वृक्ष प्रकृतिक मूक उपस्थिति अछि। एक ओर साज-सज्जा आ विलासक आधुनिक संसार, दोसर ओर बैचल गाछ—एहि छोट चित्रमे कवीक आँखि सार्वजनिक दृश्यकें सामाजिक अर्थसँ भरैत अछि। गाछक नाममे सांस्कृतिक स्मृतिक सूक्ष्म ध्वनि सेहो सुनबा मे अबैत अछि।

लघुता एहि कविताक प्रमुख शिल्प-गुण अछि। ई विस्तृत राजनैतिक कथन नहि करैत, एकटा दृश्य चुनैत अछि। पाठक स्वयं सोचैत छथि जे प्रकृतिक ठाढ़ रहब आ मनुष्यक उपभोगक प्रदर्शनक सम्बन्ध की अछि। संग्रहक आरम्भ एहन संयमित प्राकृतिक बिम्बसँ होएब महत्त्वपूर्ण अछि, कारण आगाँव कवितामे ई प्रकृति बाजार, असमानता आ विनाशक बड़ पैघ प्रसंगसँ जुड़ि जाइत अछि।

२. बबूर गाछ

मूल पृष्ठ : 12 | प्रधान विषय : प्रकृति, जिजीविषा

बबूरक सूखल-रूखल देह, टूटल-पातर डारि, काँट आ कबूतर-नभक बीच बनल दृश्य असहज जीवनशक्तिक बिम्ब अछि। फूल वा फलसँ हीन होइतहुँ गाछ ठाढ़ अछि; ओकर देह

पर समयक कठोरता लिखल अछि। कवितामे कतहु पात, कतहु फूल, कतहु किछु चिह्न— सामान्य प्रकृति-दर्शनक बदला संघर्षक स्मृति बनि जाइत अछि।

एहि कविता केँ ‘अशोक वृक्ष’क बगलमे पढ़लासँ हरियरी आ रूखापन, सज्जित परिसर आ उपेक्षित जीवनक विरोध देखाइत अछि। कवि बबूरकेँ केवल कुरूप नहि कहैत छथि; ओकर प्रतिरोधी अस्तित्वक रेखाचित्र बनबैत छथि। वर्णनक संक्षिप्त पाँति आ दृश्य-प्रधान भाषा कविताकेँ संयत करैत अछि।

३. श्यामा सुन्दरी

मूल पृष्ठ : 13 | प्रधान विषय : रेलगति, प्रकृति

रेलक खिड़कीसँ दिसैत कारि-श्याह पहाड़, दूर-पसरल हरियरी, छूटैत गाछ आ बारम्बार बदलैत दृश्य एहि कविताक आधार अछि। ‘श्यामा सुन्दरी’ नाम नव-विवाहिता जकाँ लजाइत-हुलुकैत पहाड़क मानवीकरण बनि जाइत अछि। चलैत रेलक गति आ स्थिर प्राकृतिक वस्तुक बीचक अन्तर सँ एकटा कोमल सौन्दर्य पैदा होइत अछि।

कवितामे आँखिक चलायमान दृश्यांकन महत्त्वपूर्ण अछि। खिड़की प्रकृतिक भीतर पैसब नहि, ओकरा दूरसँ देखबाक चौखट बनैत अछि। ई दूरीक बोध संग्रहक बादुक गाम-विस्थापनक प्रसंगसँ जुड़ैत अछि। लयात्मक आ सहज पाँति सभमे प्रेमिल उपमा अछि, मुदा शीर्षकक सौन्दर्यवादी सम्भावना सामाजिक अन्य विषयक संग राखलासँ कविक अनुभव-क्षेत्रक विविधता प्रकट होइत अछि।

४. आदिवासीक घर

मूल पृष्ठ : 14 | प्रधान विषय : आदिवासी, घर

पहाड़क खोह, स्वच्छ नील आकाश, टुकड़ा-टुकड़ा उजास, दूरक गह्वर, जेठक सुखल पात आ बिजुलीक क्षणिक चमक—एहि संकेतसँ आदिवासी बसाहटक चित्र बनैत अछि।

प्रकृतिक नजदीकी आ घरक जर्जरता एकहि दृश्यमे अछि; कवि नैसर्गिक रमणीयताकेँ सम्पूर्ण सुखक पर्याय नहि बनबैत छथि।

कविताक सामाजिक अर्थ ओकर संयमित संरचनामे निहित अछि। अभावक वर्णन करैतहुँ ई लोकजीवनकेँ महज दया-पात्र नहि बनबैत; स्थान, मौसम आ रोजमर्राक अवयव सँ ओकर अस्तित्व देखबैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ध्यान देबाक विषय ई अछि जे आदिवासी समुदाय अपन वाणीमे एतय विस्तृत नहि बाजैत अछि; कविक दृष्टि बाह्य दृश्य-संवेदनाक माध्यमसँ काज करैत अछि। एही सीमा-सँ ओकर यथार्थवादी तात्पर्यक परीक्षण होइत अछि।

५. पटना सँ आयल अछि संवाद

मूल पृष्ठ : 15-17 | प्रधान विषय : सत्ता, संवाद

आरम्भक कथन—संसारमे मानवीय सहवासक टूटब, वर्ग-चेतनाक क्षरण आ आत्मीय सम्बन्धक स्थानपर स्वार्थक विस्तार—महानगरीय राजनीतिक चेतनाक संकट चिन्हित करैत अछि। पटना नाम मात्र भौगोलिक सूचना नहि, सत्ता आ संवादक केन्द्रक संकेत अछि। कविता धीरे-धीरे निजी जीवनसँ साहित्यिक संसार आ सार्वजनिक संघर्ष दिस बढैत अछि।

लम्बा मुक्तछन्दक एहि रचनामे पुनरावृत्ति, नाटकीय मोड़ आ आरोपात्मक वाक्य प्रयोग भेल अछि। ‘संवाद’क शीर्षक आ संवादहीन समाजक वर्णनक बीच विडम्बना निर्माण होइत अछि। कविक जिज्ञासा ई थिक जे जे समाज अपनेक मनुखकेँ सुनब छोड़ि देत, ओतय कविताक भूमिका की रहि जाएत। लय कतहु भाषणक नजदीक पहुँचैत अछि, मुदा एही भाषणात्मकता रचनाक अस्थिर समयकेँ पकड़ैत अछि।

६. बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत

मूल पृष्ठ : 18-21 | प्रधान विषय : हिंसा, प्रतिरोध

कविताक उद्घाटन आत्म-प्रश्नसँ होइत अछि: हम कोन अपराधक यातना सहि रहल छी, कोन जन्मक अभिशापक भार उठबैत छी, आ कोन सुनसान भूभागमे फँसल छी? आगाँ खेत,

जंगल, जाति-वर्गक विभाजन, नगरीकरण आ शोषणक अनेक दृश्य जुड़ैत जाइत अछि। ‘बारूदक ढेरी’ हिंसक समाजक धधकैत आधार अछि; ताहि पर कविता-संग खेलायब जीवित रहबाक नैतिक साहसक संकेत।

एहि दीर्घ रचनामे ‘हम’ एक व्यक्तिमात्र नहि, समाजक दमनित चेतनाक प्रतिनिधि बनि जाइत अछि। प्रकृति, घर, श्रम, अधिकार आ सामाजिक अन्याय आपसमे गाँथल अछि। मुक्तछन्दक लम्बा प्रवाह कविताकेँ आत्मकथन आ जनकथनक संगम बनबैत अछि। आलोकित पक्ष ई जे कविता भयक बीचो आवाज बनेबाक आग्रह करैत अछि; कलात्मक जोखिम ई जे विषयक अधिकता किछु ठाम छवि केँ सूचीमे बदलि दैत अछि।

७. धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल

मूल पृष्ठ : 22-26 | प्रधान विषय : नदी, पर्यावरण

ब्रह्माणी नदीक जल, पयर डुबायब, हिलकोर, जलक स्पर्श आ नित नूतन अनुभव एहि कविताक अनुभवकेन्द्र अछि। नदी मात्र प्राकृतिक संसाधन नहि; शरीर, स्मृति, तृषा, जीवन-प्रवाह आ स्त्री-पुरुषक पारस्परिक सृजनक प्रतीक बनैत अछि। जलक पवित्रताक अनुभूति कोनो रूढ़ विधिसँ नहि, देह आ संवेदनाक प्रत्यक्ष अनुभूतिसँ उपजैत अछि।

कविता अपेक्षाकृत दीर्घ अछि, जाहिमे जल-गतिशीलताक अनुरूप लहरदार वाक्य-विन्यास भेटैत अछि। नदीक माध्यमसँ कवि प्राकृतिक ऊर्जाक पुनर्जन्मक विचार व्यक्त करैत छथि। ‘अशोक वृक्ष’क छोटे दृश्यक तुलनामे एतय प्रकृति सम्पूर्ण अनुभवक दर्शन बनैत अछि। तैओ सभ रूपककेँ केवल रहस्यवाद न मानि प्राकृतिक जीवनक सामाजिक महत्त्वसँ जोड़ब उचित होयत।

८. एक टा छल गाम हमर

मूल पृष्ठ : 27-32 | प्रधान विषय : गाम, स्मृति

‘एक टा छल गाम हमर’ स्मृतिक मार्मिक उद्घोष अछि। अपन ओ घराड़ी, आम-बकाइन, निमक गाछ, बाबा, मेलाक स्वाद, खेल, लोक-पर्व, पड़ोस आ गामक अनेक दृश्य क्रमशः उपस्थित होइत अछि; तकर विपरीत वर्तमानमे गामक पहिचान, परम्परा आ सामाजिक सम्बन्ध बदलि गेल अछि। ‘छल’ शब्द सम्पूर्ण कविताक काल-चेतना बनैत अछि।

ई मात्र अतीतक मिठासक गुणगान नहि; विनष्ट सामुदायिक जीवनक सामाजिक शोकलेख अछि। जातीय सम्बन्धक तनाव, नवी राजनीतिक व्यवहार, भाषा-संस्कृतिक क्षय आ बदलैत जीवनशैली स्मृतिक पाछाँक कठोर पक्ष देखबैत अछि। लम्बा सूचीविधान कखनो आत्मीय सँघनता अनैत अछि, कखनो पाठक सँ धैर्य माँगैत अछि। तथापि कविता आधुनिक मैथिल गामक सांस्कृतिक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण पाठ अछि।

९. अबंड जकाँ बौआइत

मूल पृष्ठ : 33-36 | प्रधान विषय : उत्सव, उपभोक्तावाद

सुसज्जित पंडाल, दुर्गापूजा, अनियंत्रित भीड़, मंच, फैशन, ‘चैलेंज’, ‘डुप्लीकेट’ आ नवउपभोक्तावादी प्रदर्शनक उल्लेखसँ कविता बेचैन भीड़क चित्र रचैत अछि। शीर्षकक ‘अबंड जकाँ बौआइत’ अनुभव सामाजिक दिशाहीनताक रूपक अछि: लोक चलि रहल अछि, मुदा गति आ उद्देश्यक बन्धन टूटि रहल अछि।

विविध दृश्यक टुकड़ा-टुकड़ा जमावट शहरी उत्सवक कोलाहल केँ अनुकरण करैत अछि। धार्मिक आयोजन, मनोरंजन, मंचीय संस्कृति आ वाणिज्य जखन एकहि दृश्य बनि जाइत अछि तँ कवि मनुष्यक विवेकक स्थान पूछैत छथि। एहि रचनाक एक सफलता ओकर बहुध्वनिक भाषा अछि; सीमा ई जे सांस्कृतिक दृश्य पर कविक असहमति किछु ठाम व्यापक सामाजिक भेदकेँ एकहि दोषमे समेटि दैत अछि।

१०. मैथिली बरनी

मूल पृष्ठ : 37-39 | प्रधान विषय : क्षणचित्र, प्रकृति

ई कविता अनेक क्रमाङ्कित लघु खण्डमे रचल गेल अछि। दीप, करेज, पात, झड़ैत पात, जल, कँकाल गाछ, मौन आ प्रकृतिक बदलैत रूप छोट-छोट दृश्य बनैत अछि। प्रत्येक अंशक आकार क्षणचित्रक जकाँ अछि; अर्थ पूर्ण व्याख्या सँ बेसी संकेत आ विराममे सँचारित होइत अछि।

‘बरनी’ शीर्षक देखैत पाठक अनुभूतिक रंग आ प्रकृतिक विभिन्न छटा दिस आकृष्ट होइत छथि। कविता संग्रहक लम्बा राजनीतिक भाषणात्मक खण्डसँ सर्वथा भिन्न शिल्प प्रस्तुत करैत अछि। अतिसंक्षिप्त पाँति, विरल शब्द आ अनकहल अर्थक कारण एहि रचनाकें मुक्तक-समूह वा सूक्ष्म बिम्बक शृङ्खला रूपें पढ़ल जा सकैत अछि। एकर प्रयोग संग्रहक अभिव्यक्ति-विविधताक महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि।

११. महानायकक अरण्य-यात्रा

मूल पृष्ठ : 40–43 | प्रधान विषय : राजनीति, पूँजी

लोकतंत्र, गणतंत्र, सरकारी प्रचार, मुद्रा, व्यापार, विदेशी कम्पनी आ पूँजीक महाजाल एही कविताक व्यापक पृष्ठभूमि अछि। ‘महानायक’ शब्दक व्यंग्यार्थ सत्ता द्वारा निर्मित नायक-छविक आलोचना करैत अछि; ‘अरण्य-यात्रा’ कथित प्रगतिक बीच सामाजिक अँधकार, भटकल दिशा आ अनियंत्रित पूँजीक जंगलक अनुभूति जगबैत अछि।

रचना राजनीतिक अर्थतंत्र आ प्रचारतंत्रकें एकहि परिदृश्यमे देखैत अछि। समृद्धिक सार्वजनिक घोषणाक बरक्स सामान्य लोकक संसाधन-अभाव आ शासनक कुप्रबन्ध उपस्थित अछि। लम्बा पाँति आ वस्तुनामक जमावटमे व्यंग्यक धार तीख अछि। आलोचनात्मक पठनमे एकर आरोपकें ऐतिहासिक आँकड़ाक स्थानापन्न नहि मानल जाय; ई मूलतः सामाजिक अनुभूतिक काव्यात्मक अभियोग अछि।

१२. शाइन इंडिया

मूल पृष्ठ : 44–46 | प्रधान विषय : विकासक व्यंग्य

औद्योगिकीकरण, भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावादी बजार, मजदूर, गरीब-गुरबा आ धनाढ्य वर्ग बीचक तीक्ष्ण अन्तर एहि कविताक केन्द्र अछि। चमचमाइत ‘शाइन’क छविक पाछाँ भूख, बेरोजगारी, हानि आ मानवीय विनाश देखाओल गेल अछि। शीर्षकक अंग्रेजीवाला विज्ञापन-स्वर आ कविता भीतरक सामाजिक विषमता प्रतिपक्षी अर्थ बनबैत अछि।

व्यंग्यक मुख्य प्रविधि ‘प्रगति’क प्रचलित भाषाकेँ जनजीवनक ठोस अनुभूतिसँ टकरायब अछि। कवि चमककेँ सम्पूर्ण सत्य नहि मानैत छथि। अर्थशास्त्रीय पदक प्रयोग कवितामे वैचारिक कठोरता अनैत अछि, मुदा मानव-स्वरक नजदीक जे पाँति सभ अछि, ओहि ठाम काव्यात्मक वेदना अधिक तीव्र बनैत अछि। एहि कविताक संग ‘हिसाब-किताब’ आ ‘बजार’ पढ़ब उपयोगी अछि।

१३. शंकराचार्य

मूल पृष्ठ : 47–48 | प्रधान विषय : धर्म, आचरण

सकल देशमे अशान्ति, आर्थिक असुरक्षा, बेरोजगारी, राजनीतिक स्वार्थ आ धर्मक नामपर बढ़ैत उन्मादक पृष्ठभूमिमे ई कविता आध्यात्मिक नेतृत्वक आचरण पर प्रश्न करैत अछि। शीर्षक एक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पदवीक आवाहन करैत अछि, मुदा वर्णित संसारमे धार्मिक गुरुत्व आ मानवीय उत्तरदायित्व बीच फाँक अछि।

कविक लक्ष्य अन्ध श्रद्धाक राजनीतिक उपयोग आ जनदुखसँ विमुख प्रतिष्ठाक संरचना अछि। शब्द-सूची, प्रश्न आ नैतिक प्रतिवादक प्रयोगसँ कविता धार्मिक अधिकारक सामाजिक परीक्षा लैत अछि। आलोचनात्मक रूपेँ एकरा समस्त अध्यात्म-विरोधी पाठ मानब जल्दबाजी होयत; मूल प्रश्न ई अछि जे उच्च आदर्शक घोषणा करनिहार समाजक पीड़ा प्रति कतेक उत्तरदायी छथि।

१४. आहि रे बा! आहि रे बा!!

मूल पृष्ठ : 49–50 | प्रधान विषय : लोकव्यंग्य

लोकबोलीक उद्गारसँ रचना आरम्भ होइत अछि। झूठक ढेर, बिखरल सम्बन्ध, जातिवाद, मार्क्सवादक उधार विचार, दुर्गाक प्रतिमा आ सार्वजनिक छलछद्मक उल्लेखसँ कवि चारूकात फइलल विडम्बनाक अनुभव करैत छथि। ‘आहि रे बा’क आवृत्ति विस्मय, क्षोभ आ व्यंग्यक साझा ध्वनि अछि।

एहि कविता मे तर्कक क्रमसँ बेसी आक्रोशक क्रम काज करैत अछि। उद्गार गीतक टेक जकाँ बारम्बार घुरैत अछि आ पाठककें लोकमंचीय आवाज सुनबैत अछि। समानान्तर रूपेँ ई प्रश्न उठैत अछि जे धर्म, विचारधारा आ न्याय तीनू जँ नाममात्र रहि जाए, तँ मनुष्यक भरोसा कतय टिकत? कविताक धारक संग ओकर सामान्यीकरणक जोखिम सेहो ध्यान देबाक योग्य अछि।

१५. कर्मकांड

मूल पृष्ठ : 51-52 | प्रधान विषय : धर्म, कर्म

आचरणक ऊँच आदर्श आ वास्तविक व्यवहारक बीचक दूरी कविताक मूल विरोध अछि। शिक्षा, उद्योग, भ्रष्टाचार, शोषण, आतंक, दुराचार आ मानवीय स्वार्थक चित्र धर्म-आचारक चर्चा सँ जुड़ैत अछि। ‘कर्मकांड’ शब्द एतय केवल पूजा-विधानक संकेत नहि, बिना नैतिक फलवाला सामाजिक गतिविधिक आलोचना सेहो अछि।

कविता कारण-परिणामक चक्र पर विचार करैत अछि: कर्मक शिक्षा जँ मात्र खोखला नाम बनि जाए तँ चरित्रक विकास नहि होइत। पाँति सभ प्रत्यक्ष कथनक शैलीमे अछि; बिम्बक अपेक्षा सामाजिक निदान प्रमुख अछि। ‘कालचक्र’क ठीक पहिने एहि कविताक स्थिति महत्वपूर्ण अछि, कारण अगिला रचना समय आ कर्मक सम्बन्धक व्यापक प्रश्न उठबैत अछि।

१६. कालचक्र

मूल पृष्ठ : 53-54 | प्रधान विषय : समय, विवेक

कविता भूतक जड़ता छोड़ि वर्तमानक कर्म सँ भविष्य निर्माणक आग्रह करैत अछि, मुदा तत्काल मिथ्या भाग्यवाद, स्वर्ग-नरकक द्वैत आ खोखला तर्कक आलोचना सेहो करैत अछि। समयक गति अन्धविश्वासक विरोधमे प्रमाण बनैत अछि। ‘कालचक्र’क प्रचलित आध्यात्मिक संकेतकेँ कवि तर्क आ सामाजिक क्रियाशीलताक क्षेत्रमे खींचि अनैत छथि।

लघु, घोषणात्मक पाँति सभमे विचारक गति अछि। समय एतय नियतिक अपरिवर्तनीय चक्र नहि, मानवीय हस्तक्षेपक सम्भावना सेहो अछि। कविता ‘कर्मकांड’क प्रतिपक्ष गढ़ैत अछि: अनुष्ठानक बदला कर्म, अन्धमान्यताक बदला विवेक। यद्यपि तर्कशील कथनक कारण अर्थ बहुत सोझाँ अछि, युगचेतनाक स्तर पर ई रचना संग्रहक नैतिक केन्द्रकेँ व्यक्त करैत अछि।

१७. अथातो काव्य जिज्ञासा

मूल पृष्ठ : 55-57 | प्रधान विषय : कविता-दर्शन

शीर्षक कविता एक स्पष्ट प्रश्न करैत अछि—कविता कतऽ सँ सुनल जाइत अछि? उत्तर जीवनक लेल, भूखक लेल, भाषा आ शब्दक प्राण लेल, बेकारक लोक, मजदूर, किसान आ न्यायसँ वञ्चित मनुष्यक पक्षमे अछि। खेतक रंग, अन्न आ गहूँक सीस, अमीरक अँगुर आ गरीबक चाल—विभिन्न सामाजिक बिम्ब एकहि रचनामे उपस्थित अछि।

‘अथातो’क दार्शनिक गम्भीरता आ ‘कविता’क जनपक्षी प्रतिज्ञा मिलि संग्रहक काव्य-सिद्धान्त बनबैत अछि। कविता स्वयं अपन परिभाषा देबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा शब्दक सार्थकता कविक निजी महत्त्वाकांक्षामे नहि, सामाजिक उपयोगितामे देखैत अछि। एहि रचनाकेँ ‘कविता बिकबा लए तैयार’ तथा ‘अथ कविता उवाच’क संग पढ़लासँ मूल्य बनाम विनिमय आ रचना बनाम प्रचारक द्वन्द्व विशेष स्पष्ट होइत अछि।

१८. हिसाब-किताब

मूल पृष्ठ : 58-60 | प्रधान विषय : विकास, जवाबदेही

विकासक सरकारी दाबी, शासनक गर्व, पुरस्कारक घोषणा, विकास-आँकड़ा आ सार्वजनिक प्रचारक पृष्ठभूमि रचनामे अछि। कवि चमकैत भाषण आ लोकजीवनक अनुभवक बीच हिसाब माँगैत छथि। ‘हिसाब-किताब’ साधारण लेखापद्धतिक शब्द नहि, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्वक नैतिक कसौटी अछि।

कवितामे प्रशासकीय शब्दावलीक आवृत्ति उपहासमय बनैत अछि। जे उपलब्धि विज्ञापन आ सम्मानमे थिक, ओ जनताक जीवनमे कतेक उतरि रहल अछि—एहने मूल प्रश्न उठैत अछि। ‘शाइन इंडिया’क आशावादी प्रचार-छवि एहि कवितामे जाँचक विषय बनैत अछि। रचनाक शक्ति सरकारी भाषाक भीतरक विरोधाभास खोलब अछि; ओकर सीमा एतय अपेक्षाकृत कम दृश्यात्मक संयम भेटब अछि।

१९. एलेक्शन! एलेक्शन!

मूल पृष्ठ : 61–62 | प्रधान विषय : चुनाव, नारा

पाँच वर्षक बाद चुनावी बजार लगब, छोट डंठ पर बड़ नेता चढ़ब, गाँव-गाँव रंगबिरंगक वाहन, हाथ जोड़नाइ, घरे-घरे वचनक वर्षा आ भरोसाक अस्थायी व्यापार—ई सभ दृश्य लोकतंत्रक उत्सवक विडम्बना बनैत अछि। शीर्षकक दुहराओ चुनावी प्रचारक कोलाहलकें श्रव्य रूप दैत अछि।

कवितामे नेता आ मतदाता बीच क्षणिक समीपता आ दीर्घकालीन दूरीक अन्तर्विरोध भेटैत अछि। चुनावक पहिले जनताक महत्त्व बढ़ैत अछि, मुदा निर्णयक बाद ओकर अपेक्षा अनसुनी रहि सकैत अछि। लोकबोलीक लय, व्यंग्यात्मक सूची आ नाटकीय पदबन्ध एहि रचनाकें मंचीय प्रभाव दैत अछि। ई लोकतंत्रक सम्पूर्ण निषेध नहि, ओकरा सार्थक बनाबय लेल प्रश्न अछि।

२०. भाषा ठाढ़ बजार मे

मूल पृष्ठ : 63–64 | प्रधान विषय : भाषा, बजार

भाषा विज्ञापनक साधन आ मुनाफाक वस्तु बनबाक खतरा एहि कवितामे स्पष्ट कहल गेल अछि। शब्द-व्यवहारक आत्मीयता घटैत अछि, संचारक माध्यम व्यापारक संकेतमे परिणत होइत अछि, आ आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक/प्रिण्ट माध्यमक भूमिका विवादास्पद बनि जाइत अछि। शीर्षक भाषाकेँ बजारमे ठाढ़ मनुष्य जकाँ देखबैत अछि—मानवीकरणक एहि रूपमे असुरक्षा गहन अछि।

‘मातृभाषा’ तथा ‘वैश्वीकरण’क संग तुलनामे ई कविता भाषिक अर्थनीतिक प्रश्न बनैत अछि। भाषा ककर हाथमे अछि, ओकरा सँ के लाभ उठबैत अछि, आ ओकर रचनात्मक मूल्य कतय बनल रहत? कवि एहि समस्त प्रश्नक उत्तर पूर्णतः नहि दैत छथि, मुदा लोक-भाषाक स्वतन्त्र महत्त्वक पक्ष लैत छथि। शब्दक क्रय-विक्रयक रूपक अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि।

२१. ओ करत मौज! ओ करत राज!!

मूल पृष्ठ : 65–66 | प्रधान विषय : शासन, संसदीयता

राजनीतिक वर्गक निर्लज्ज स्वार्थ, कथित धर्मनिरपेक्षताक ओट, सत्ता-सुख, संसदक आत्मकेंद्रित व्यवहार आ सामान्य जनताक अपमान एहि कविताक चिन्ताक केन्द्र अछि। शीर्षकमे दोहरल ‘ओ’ सत्ताधारी वर्ग दिस संकेत करैत अछि; विरोधमे ‘हम’ वा जनता मौन मुदा उपस्थित अछि।

कविता आरोपात्मक लहजामे लिखल गेल अछि, जाहिमे आवृत्ति आ तुक-ध्वनि जनाक्रोशक गति बढ़बैत अछि। संसदीय क्रियाकलापक नकारात्मक प्रतिरूप जनतंत्रक मूल्यसँ टकराइत अछि। कवि देशहितक नामपर स्वार्थसिद्धिक विडम्बना उद्घाटित करैत छथि। आलोचनामे एतबा याद राखब आवश्यक अछि जे रचना विशिष्ट काव्य-स्वरक राजनीतिक प्रतिक्रिया अछि, समस्त सांसद वा संस्थाक प्रमाणित सामाजिक प्रतिवेदन नहि।

२२. रेल! रेल!!

मूल पृष्ठ : 67–68 | प्रधान विषय : लोकतंत्र, प्रदर्शन

संसदक भीतर दलगत प्रतिस्पर्धा, सत्ता-लिप्सा, भ्रष्टाचार, नारी-अधिकार पर नारा, नीतिक प्रश्न आ जनताक आशाभंगक चित्र एहि कविताक मुख्य सामग्री अछि। ‘रेल’ शीर्षक शाब्दिक रेलगाड़ीक सामान्य दृश्यसँ भिन्न संसदक भाग-दौड़, धक्का-मुक्की आ निरन्तर हलचलक ध्वनि बनैत अछि।

पाँति-पाँतिमे सार्वजनिक मुद्दाक अनियमित जमघट अछि। ई शिल्प उद्देश्यपूर्वक राजनीतिक भीड़-भाड़क अनुकरण करैत अछि। ‘एलेक्शन! एलेक्शन!’ चुनावी मंचक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि तँ ‘रेल! रेल!!’ प्रतिनिधिक संस्थाक भीतरक विघटन पर केन्द्रित अछि। कविता जनहितक वास्तविक कामक अपेक्षा करैत अछि, मुदा कतेको आरोप सीधे कहबाक कारण रूपकक विस्तार सीमित रहि जाइत अछि।

२३. नेता-पुराण

मूल पृष्ठ : 69–70 | प्रधान विषय : व्यंग्य, नेता

‘मंत्री तंत्री नेता चोर’ जकाँ छोट, प्रहारक पाँति सभ रचनाक केन्द्रीय लय बनबैत अछि। भ्रष्ट अफसर, पुलिस, वोटक अवसरवाद, शोषण, महिला-उत्पीड़न आ अपराधी-प्रभुत्वक छोट-छोट खण्ड ‘पुराण’ शब्दक व्यंग्यात्मक नवार्थ रचैत अछि। परम्परागत महागाथाक बदला आधुनिक राजनीतिक दुर्गुणक संग्रह एतय उपस्थित अछि।

रूपक आ काव्य-व्यवस्था दुनू विशेष अछि: दू-दू पाँतिक खण्ड लोककहनी वा तिखट सुभाषित जकाँ लगैत अछि। प्रत्येक खण्ड स्वतन्त्र चोट करैत अछि, मुदा समग्र रूपेँ सत्ता-व्यवस्थाक निरन्तर व्यर्थता देखबैत अछि। संक्षिप्तता ‘महानायकक अरण्य-यात्रा’क विस्तारसँ एकदम अलग अछि। पाठक पर तात्कालिक व्यंग्यात्मक प्रभाव पैघ अछि, यद्यपि सामाजिक जटिलताक सूक्ष्म विभाजन अपेक्षाकृत कम अछि।

२४. कविता बिकबा लागै तैया

मूल पृष्ठ : 71–72 | प्रधान विषय : साहित्य, वस्तुकरण

‘कविता बिकऽ रहल मण्डी मे’क आधार पर ई रचना रचनात्मकताक वस्तुकरणक तीव्र आलोचना करैत अछि। विभिन्न रंग, आकार आ भावक कविता जखन बाजारू माल बनि जाइत अछि, तखन साहित्यिक संवेदना आ प्रतिष्ठाक सम्बन्ध बदलि जाइत अछि। कविता जकरा मनुष्यक दुख-सुखक सत्य बाजबाक चाही, ओ स्वयं उपभोक्ता समाजक प्रदर्शनीक वस्तु बनबाक संकटमे अछि।

एहि कविताक सर्वाधिक प्रभावकारी बिम्ब कविता-मण्डी अछि। ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे स्थापित आदर्शक ई प्रतिलोम कथा थिक। प्रश्न अछि: जनसमाजक पीड़ाकेँ स्वर देनिहार रचनाकार जँ प्रकाशनक रेट, प्रशंसा आ लेन-देनमे फँसि जाए तँ कविता अपन मूल प्रयोजन कतेक बचा पायत? कवि श्रोता आ पाठककेँ एहि प्रश्नक उत्तर सोचबाक लेल बाध्य करैत छथि। व्यंग्य सहज अछि आ आत्मालोचनात्मक सम्भावना सेहो व्यापक अछि।

२५. एक पयर हो सदा माटि पर

मूल पृष्ठ : 73-74 | प्रधान विषय : माटि, आडम्बर

पोसाक, चर्चित जन, फिल्मी नायक, अवास्तविक तमाशा, व्यर्थक चमक, विवाह-समारोहक अपव्यय आ समाजक जीवनशैलीक विसंगति एहि कवितामे भेटैत अछि। शीर्षक जीवनक जमीनसँ सम्बन्ध नहि तोड़बाक नैतिक अनुरोध अछि। ‘माटि’ एतय केवल भूगोल नहि, श्रम, व्यवहारिक विवेक आ सामान्य लोकक वास्तविकताक रूपक अछि।

रचनामे आडम्बरक आलोचना कखनो प्रसंगसँ प्रसंग दिस छलाँग लगबैत अछि। ई विखण्डित संरचना आधुनिक सार्वजनिक जीवनक अनेक असंगत दृश्यकेँ एक साथ रखैत अछि। सशक्त सन्देश ई जे महत्वाकांक्षा वा प्रतिष्ठाक संग मानवीय धरातल जोड़ल रहबाक चाही। आलोचनात्मक रूपेँ विभिन्न उदाहरणक बीच तर्कगत सेतु कतहु कम भेटैत अछि, मुदा शीर्षकक एकता सबकेँ एक नैतिक केन्द्र दैत अछि।

२६. बीच सड़क पर

मूल पृष्ठ : 75 | प्रधान विषय : आम आदमी, भूख

बीच सड़क पर ठाढ़ आम आदमी, चारूकात उठैत धुआँ, भूख, बेरोजगारी, अभिनयमय सार्वजनिक जीवन आ राजनीतिक गहमा-गहमी एहि कवितामे केन्द्रित अछि। सड़क सार्वजनिक लोकतांत्रिक स्थानक प्रतीक अछि; बीचोबीच ठाढ़ मनुष्यक असहायता समूच जनताक उपेक्षाक बिम्ब बनि जाइत अछि।

कविता मनुष्यक भौतिक अभाव आ सार्वजनिक संस्थाक दूरावक सम्बन्ध देखबैत अछि। दिशासूचक शब्द—उत्तर, दक्षिण, पूब, पच्छिम—समस्या सर्वत्र व्याप्त हेबाक बोध दैत अछि। छोट पाँति आ प्रत्यक्ष कथन रचनाकें सहज संप्रेष्य बनबैत अछि। काव्य-पाठक लेल बड़ प्रश्न ई अछि जे सड़क पर स्थित मनुष्यक स्वरसँ जनतंत्रक असली मूल्य कतेक मापल जाइत अछि।

२७. डांस! डेमोक्रेसी डांस!

मूल पृष्ठ : 76 | प्रधान विषय : जनतंत्र, तमाशा

‘डांस’क बारम्बार आह्वान लोकतंत्रक नाटक बनि गेल सार्वजनिक जीवनक व्यंग्यात्मक श्रव्य बिम्ब अछि। अन्याय, सरकारी शक्तिक प्रदर्शन, स्त्री-शोषण, भ्रष्टाचार आ जनसमुदायक शोरक बीच लोकतंत्र नाच करैत दिसैत अछि। अंग्रेजी शब्द ‘डेमोक्रेसी’क संग मैथिली आ हिन्दी मिश्रित कथन सभ आधुनिक राजनीतिक भाषाक विडम्बना खोलैत अछि।

गीतक टेक जकाँ दुहराओ अपन व्यंग्यक तीव्रता बढ़बैत अछि। एतय लोकतंत्र आदर्श नहि, मंच पर बिक रहल प्रदर्शन बनि गेल अछि। अन्य समान राजनीतिक कवितासँ अलग रचना ध्वन्यात्मक तमाशाक रूप ग्रहण करैत अछि; सत्ता स्वयं नाटक बनि जाइत अछि। कविक असहमति जनतंत्रक मूल्यक प्रति उदासीनता नहि, ओकर वास्तविक लोकतांत्रिक चरित्रक माँग अछि।

२८. विकल्प नहि आर कोनो

मूल पृष्ठ : 77-78 | प्रधान विषय : राजनीतिक विकल्प

देशक जर्जरता, गरीब-गुरबाक छटपटाहट, भूख-प्यास, कमजोर नेतृत्व, भ्रष्ट व्यवस्था आ राजनीतिक दलक अवसरवादक बीच जनताक स्थिति अभावग्रस्त अछि। शीर्षक निराशाक कथन जकाँ सुनाइत अछि, मुदा कविता भीतर व्यवस्था-परिवर्तनक आवश्यकताक आग्रह सेहो अछि। ‘विकल्प’क अनुपस्थिति राजनीतिक भाषणक बनौटी बाध्यताक आलोचना बनि सकैत अछि।

रचनामे नैतिक क्षोभक स्वर प्रधान अछि। जनसमुदाय अपन आशा-अभिलाषा सँ ठगायल अछि, तँ ई निष्क्रिय रहबाक समय नहि—एहि तरहक निहित प्रश्न पाठक धरि पहुँचैत अछि। ‘एलेक्शन!’ आ ‘डांस! डेमोक्रेसी डांस!’क बाद ई कविता संकटकें चुनावी दृश्यसँ अलग करि सामाजिक विकल्पक स्तर पर राखैत अछि।

२९. आइ-क्यू

मूल पृष्ठ : 79 | प्रधान विषय : शिक्षा, समाज

गरीबी, भूखे बच्चा, शिक्षा-व्यवस्था, लोकक नैतिक दिशा आ शिक्षित वर्गक उत्तरदायित्व एहि कवितामे उपस्थित अछि। आधुनिक बुद्धिलब्धि (‘आइ-क्यू’)क शीर्षक आम लोकक व्यावहारिक संकटसँ टकराइत अछि। पढ़ाइ यदि भूख आ मानवीय अन्यायक प्रश्न नहि बुझि सकय तँ ज्ञानक सामाजिक प्रयोजन की रहि जाए—कविताक आधारभूत प्रश्न एतबे अछि।

शीर्षक अंग्रेजी ज्ञान-मापनक प्रतीक अछि, जखनकि कथ्य प्राथमिक जीवनगत मूल्यक चर्चा करैत अछि। एहि द्वन्द्वसँ व्यंग्य बनैत अछि। कवि तकनीकी दक्षताक मात्र अस्वीकार नहि, ज्ञानक सामाजिक दायित्वक पक्षधर छथि। रचनामे गुरु, शिक्षक आ युवकसँ सम्बद्ध पाँति सभ शैक्षिक विचारकें नैतिक धरातल पर आनैत अछि।

३०. पार्टनर

मूल पृष्ठ : 80 | प्रधान विषय : साझेदारी, सत्ता

मित्रता आ साझेदारीक सहज सम्बोधन धीरे-धीरे वैश्विक शक्ति-संबन्धक व्यंग्य बनि जाइत अछि। ‘कमासुतक बेड-पार्टनर’, अमेरिका आ अवसरवादक उल्लेखसँ कविता सम्बन्धक बाजारू अर्थपर चोट करैत अछि। ‘पार्टनर’ शब्द निजी जीवनसँ उठि राजनैतिक अर्थनीतिक गठजोड़क सूचक बनैत अछि।

रचनाक शैली संवादात्मक, कटाक्षपूर्ण आ बहुस्तरीय अछि। सामाजिक संकटमे मनुष्य ककर संग ठाढ़ होयत, आ ककरो संगक समझौता कतय धरि नैतिक अछि—कविताक गूढ़ प्रश्न अछि। ‘शाइन इंडिया’ आ ‘वैश्वीकरण’ संग ओकर अन्तर्सम्बन्ध अछि, कारण तीनू ठाम बाजारक अन्तःप्रवेशक चिन्ता उपस्थित अछि।

३१. अपन दुलरुआक नाम

मूल पृष्ठ : 81–82 | प्रधान विषय : वंशवाद, परिवार

आदित्य, आनन्द, सर्वानन्द, दीपित, दिनेश आदि नामक एक शृङ्खला बनबैत कवि ‘अपन दुलरुआ’क मोह, सन्तान-पक्षपात आ यश-धनक आकांक्षा पर प्रश्न उठबैत छथि। नामक बहुलता एक प्रकारक खेलसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा आगाँ परिवारक महत्वाकांक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा आ संसाधनक बँटवारा देखाओल जाइत अछि।

एहि कविताक शिल्प सूचीविधान अछि। सामान्य घर-परिवारक नामक श्रृंखला सामाजिक पूर्वाग्रह आ वंशवृत्तिक राजनीतिक छाया उजागर करैत अछि। ‘ओ करत मौज!’ आ ‘घर-बाहर’मे जे परिवारवादी राजनैतिक संरचना भेटैत अछि, ओकर सूक्ष्म निजी रूप एतय देखब सम्भव अछि। किछु नामक सहायतासँ सामान्यीकरण होएबाक खतरा अछि, मुदा शीर्षकक घरेलूपन व्यंग्यकेँ चुभन दैत अछि।

३२. इनटॉलरेंस

मूल पृष्ठ : 83–84 | प्रधान विषय : सहनशीलता, समाज

पुरान आ नव पीढ़ी, समाजक बदलैत आचरण, बोल-बेबहार, वस्त्रक प्रदर्शन, विरोधक नामपर नवा रूढ़ि, अन्याय आ धैर्यक लोप एहि कविताक विषय अछि। ‘इनटॉलरेंस’ शीर्षक बहसक आधुनिक अंग्रेजी पदकेँ अपनबैत अछि, मुदा कवि प्रश्न करैत छथि जे सहनशीलता केवल नारा अछि वा दैनिक जीवनक मूल्य?

कविता असहमति, सामाजिक अनुशासन आ मानवीय सम्मान बीचक तनाव छूबैत अछि। पौतिक प्रवाह बतबैत अछि जे एक-दोसराक बात सुनबाक क्षमता घटैत अछि, आ बाहरी रूप-रंग पर राजनीतिक निर्णय लेल जाइत अछि। बदलैत फैशन वा नवपीढ़ीक व्यवहारकेँ अपने-आप नैतिक पतन मानि लेनाइ तर्कसंगत नहि; कविताक बल असहिष्णुताक अनुभव पर अछि, जे व्यापक विचारक योग्य अछि।

३३. बुलेट बन्दूक

मूल पृष्ठ : 85 | प्रधान विषय : हिंसा, बंदूक

गाम-शहरक धुआँ, गोली-बन्दूक, हरित वृक्षक संकट, संसदक शोक, पुलिसक असहायता आ युवकक विचलित स्थिति हिंसाक सामान्यीकरण देखबैत अछि। शीर्षकमे उपकरणक सीधे नामसँ भयक वातावरण बनैत अछि। जीवनक सुरक्षा आ लोकतंत्रक संस्थामे जे दूरी अछि, कविता ओही अंतर पर चोट करैत अछि।

ई अत्यन्त संक्षिप्त रचना अछि। बहुत कम शब्दमे जनजीवनक आतंक, राज्यक अकार्यक्षमता आ भविष्यक पीढ़ीक असुरक्षाकेँ जोड़ल गेल अछि। ‘बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत’क व्यापक भय एतय एक तीक्ष्ण सूक्तिपूर्ण वक्तव्यमे सिमटि गेल अछि। शिल्पक अर्थव्यवस्था एहि कविताकेँ अन्य दीर्घ राजनीतिक कविता सभसँ अलग करैत अछि।

३४. मातृभाषा

मूल पृष्ठ : 86 | प्रधान विषय : मातृभाषा, शिक्षा

पुस्तक-काँपीक बोझ, शिक्षा-व्यवस्थाक दबाव, अंग्रेजीक वर्चस्व, क्षेत्रीय भाषाक उपेक्षा आ सांस्कृतिक विनाशक भय ‘मातृभाषा’क मुख्य समस्या अछि। कविता कहैत अछि जे शिक्षा जँ अपन भाषाक भाव-संसारसँ कटि जाए, तँ आत्मीय ज्ञानक आधार कमजोर पड़ैत अछि। मातृभाषा केवल एक विषय नहि, परिवार, संस्कृति आ स्मृतिक मूल भूमि थिक।

कवि भाषाक रक्षा लेल शिक्षा आ व्यवहार दुनूमे परिवर्तनक आग्रह करैत छथि। प्रादेशिक भाषाकेँ पछाड़िकेँ एक भाषा मात्रक श्रेष्ठता स्थापित करबाक प्रवृत्तिक आलोचना अछि। ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’मे बाजारक दाब, ‘भोला बाबू’मे भाषिक आन्दोलनक सकारात्मक इतिहास, आ एहि कवितामे शिक्षाक व्यावहारिक समस्या—तीनू मिलि भाषायी विमर्शक परिपूर्ण त्रिकोण बनबैत अछि।

३५. किरायाक मकान

मूल पृष्ठ : 87 | प्रधान विषय : जीवन, अनित्यता

संसार किरायाक मकान, लोक किरायेदार, सभ किछु अस्थायी आ मालिक अन्तिम रूपेँ सर्वव्यापक—एहने संक्षिप्त रूपक एहि कविताक सर्वस्व अछि। राजनीतिक व्यंग्यक शोरसँ दूर कवि जीवनक क्षणभंगुरता आ स्वामित्वक मिथ्याक प्रश्न रखैत छथि।

कविताक पैघ विशेषता ओकर लघुतम आकार अछि। एके ठाम रहि किछु स्थायी नहि—एहि भावकेँ वाक्यक सादगी समग्र अर्थ दैत अछि। ई रचना व्यापक सामाजिक आलोचनामे आध्यात्मिक-सांकेतिक विराम जकाँ काज करैत अछि। अनेक कविता जे सम्पत्ति आ सत्ता पर प्रश्न करैत अछि, ताहि परिप्रेक्ष्यमे ‘मकान मालिक’क रूपक अधिक जटिल अर्थ सेहो ग्रहण करैत अछि।

३६. बजार

मूल पृष्ठ : 88 | प्रधान विषय : बाजार, पूँजी

भारतकें पैघ बजार, लोककें खरीदार, विदेशी कम्पनीकें शक्तिशाली व्यापारी आ लोकसमुदायकें बँधुआ कर्ता रूपमे देखाओल गेल अछि। वस्तु आ इच्छा दुनू विनिमयक तर्कमे फँसल अछि। बजारक अधिकार केवल सामानपर नहि, मनुष्यक जीवन-निर्णयपर सेहो पड़ि रहल अछि।

लघु आकारक ई कविता संग्रहक आर्थिक व्यंग्यक एक केन्द्रीय सूत्र अछि। बहुतेर कविता जे विस्तृत उदाहरणसँ कहैत अछि, ‘बजार’ ओहि विचारकें लगभग सूत्र-वाक्यमे समेटैत अछि। ‘शाइन इंडिया’, ‘भाषा ठाढ़ बजार मे’ आ ‘वैश्वीकरण’ एकर विस्तार बनि जाइत अछि। तकर संग ‘कविता बिकबा लए तैयार’ संस्कृति पर एही विनिमयक प्रभाव देखबैत अछि।

३७. वैश्वीकरण

मूल पृष्ठ : 89-91 | प्रधान विषय : भूमण्डलीकरण

भूमण्डलीकरण, ‘ग्लोबलाइजेशन’, उद्योग, व्यापार, आचार, खान-पान आ नवी पीढ़ीक जीवन-शैलीमे तीव्र बदलाव एहि कविताक मुख्य सामग्री अछि। एक देशक वस्तु-संस्कृति आन देशक भीतर पैसैत अछि, आ स्थानीय जीवनक चिह्न बदलैत अछि। भाषा आ व्यवहारक मिश्रण एहि ऐतिहासिक प्रक्रियाक दृश्यमान रूप अछि।

रचनामे आधुनिक शब्दावली स्वयं आलोचनाक सामग्री बनि जाइत अछि। कवि वैश्विक सम्बन्धकें समृद्धिक एकमात्र पर्याय नहि मानैत छथि; सत्ता-सन्तुलन, स्थानीय उत्पादन, संस्कृति आ सामाजिक समानताक दृष्टिसँ प्रश्न उठबैत छथि। तथापि विश्वसम्पर्कक सभ रूप असमान होयत, एहन निष्कर्ष कविता स्पष्ट प्रमाणसँ नहि दैत; एकर लक्ष्य वैश्वीकरणक वर्चस्ववादी पक्षक आलोचना अछि।

३८. युग-संदेश

मूल पृष्ठ : 92 | प्रधान विषय : युगचेतना, संघर्ष

बीति गेल समयक स्मरणसँ आगाँ वर्तमानकेँ चुनौतिपूर्ण भविष्य-दिशा देबाक प्रयत्न रचनामे अछि। जनता दुखी, समाज दिशाहीन आ इतिहासक पुनरावृत्तिसँ त्रस्त अछि; एहन दशामे सबकेँ मिलि लडबाक आ सामाजिक परिवर्तनक संकल्प आवश्यक ठहराओल गेल अछि।

कविता उपदेशात्मक मात्र नहि, सामूहिक क्रियाशीलताक प्रेरणा अछि। ‘हमर भूमि बंजर नहि, मनोबलपूर्ण बुझू’ जकाँ आशय निराशाक बदला संभावना जगबैत अछि। ई रचना ‘कालचक्र’क समय-चेतनाक रचनात्मक उत्तर अछि: अतीतक विवेचन तबे अर्थवान् होयत जखन भविष्यक दिशामे कर्म हो। मुक्तछन्दक अपेक्षाकृत सोझा शैलीक बावजूद उद्बोधन स्वर असरदार अछि।

३९. टा-टा! बाइ-बाइ!!

मूल पृष्ठ : 93-95 | प्रधान विषय : स्त्री, आधुनिकता

समाजमे स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध, शिक्षाक प्रसार, बाह्य आधुनिकता, पितृसत्तात्मक दबाव आ नारी-सम्मानक प्रश्न एहि कवितामे उपस्थित अछि। ‘टा-टा! बाइ-बाइ!!’ देखिते लागैत अछि जे वक्ता कोनो समाप्त होइत सम्बन्ध वा समयकेँ विदा करैत छथि; आगाँक पाँति सभ दर्शबैत अछि जे पुरातन मूल्य आ आधुनिक आडम्बर बीच संघर्ष चलि रहल अछि।

कविता स्त्रीक सम्मानक पक्ष लैत अछि, मुदा एकहि समय समाजक नवा जीवन-प्रदर्शन पर सन्देह सेहो करैत अछि। एही कारण पाठ जटिल अछि: स्त्रीक स्वतन्त्रता, सामाजिक मर्यादा आ आधुनिकता के एकहि तुलापर राखि नहि सकैत छी। रचनाक योगदान ई जे नारी-अनुभवक प्रश्नकेँ सार्वजनिक बहसमे अनैत अछि; ओकर कतिपय संस्कारगत मान्यताक विवेचन आलोचककेँ खुला रखबाक चाही।

४०. भोला बाबू

मूल पृष्ठ : 96-97 | प्रधान विषय : मैथिलीसेवा

मातृभाषाक प्रचारक, सामाजिक चेतनाक समर्थक, मिथिला-मैथिलीक जनजागरणकर्ता आ साहित्यिक संस्थासँ जुड़ल व्यक्तित्वक प्रशस्ति ‘भोला बाबू’मे अछि। व्यक्ति-विशेषक माध्यमसँ भाषिक आन्दोलनक स्मृति आ सामूहिक श्रमक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

एहि रचनाक स्वर अन्य तीख राजनीतिक कवितासँ अलग अछि—एतय सम्मान, कृतज्ञता आ सांस्कृतिक ऋणबोध प्रमुख अछि। ‘मातृभाषा’ जखन संकट देखबैत अछि, ‘भोला बाबू’ लोकक कर्मसँ ओकर रक्षाक सम्भावना दर्शबैत अछि। जीवनीपरक काव्यक विशेषता नाम आ कार्यक सूची अछि; तथ्यात्मक जीवनीक पुष्टि लेल स्वतंत्र स्रोत आवश्यक होयत, मुदा कवितामे ई व्यक्तित्व मैथिलीसेवाक प्रतीक रूपेँ प्रस्तुत अछि।

४१. कलम सिपाही : राजकमल

मूल पृष्ठ : 98 | प्रधान विषय : साहित्यिक स्मृति

राजकमल चौधरीक प्रति ई कविता श्रद्धा आ वैचारिक आत्मीयताक स्मरण अछि। विद्रोही रचनाकार, नारी-पीड़ाक चित्रकार, कथा-कविताक प्रयोगशील कलाकार आ निर्भीक काव्यस्वरक रूपमे हुनकर स्मृति उपस्थित अछि। शीर्षकक ‘कलम सिपाही’ लेखकीय कर्मकेँ संघर्षक नैतिक स्वरूप दैत अछि।

कवितामे राजकमलक कृतिक नामक संकेत आ विरोधी जीवन-मूल्यक उदाहरण स्मृति-रचना बनबैत अछि। ई तथ्यात्मक जीवनीक स्थाने एक कविक दोसर कविप्रति काव्यात्मक मूल्यांकन अछि। ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’क रचनात्मक प्रतिबद्धता एहि स्मरणक माध्यमसँ मैथिलीक आधुनिक विद्रोही साहित्यिक परम्परासँ जुड़ैत अछि। सम्मानमय स्वरक संग आलोचनात्मक पाठ राजकमलक जटिल लेखकीय संसारकेँ एहि एक कविता धरि सीमित नहि करैत अछि।

४२. वाक्-विमर्श

मूल पृष्ठ : 99–100 | प्रधान विषय : शब्द, साहित्य

कविता-संग्रह, शब्द, भाषाक अर्थ, संवेदना आ आधुनिक समाजमे रचनाक स्थानक प्रसंग एहि कवितामे केन्द्रीय अछि। कवि कलाकृति पर विचार करैत शब्दक भीतरक अर्थ-परिवर्तन देखैत छथि। ‘वाक्’क शास्त्रीय शब्द आ ‘विमर्श’क आधुनिक आलोचनात्मक अर्थक संगम शीर्षकमे स्वयं रचना-दर्शन प्रस्तुत करैत अछि।

एहि कविताक अपनपक्ष आलोचनात्मक संवाद अछि। पूर्वज रचनाक आशा, समकालीन शब्दक विकास आ समाजक बदलैत जरूरतक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। ‘कविता बिकबा लए तैयार’मे बाजारक संकट अछि, तँ ‘वाक्-विमर्श’मे शब्दक स्वतन्त्र संवेदनशील सत्ता बचाबयक प्रयास। एहि काव्य-श्रृङ्खलासँ पाठक बुझैत छथि जे कवि साहित्यपर साहित्यक भीतरसँ सोचैत छथि।

४३. अथ कविता उवाच

मूल पृष्ठ : 101-104 | प्रधान विषय : कविता, विश्व

कविता स्वयं बाजैत अछि—विशाल आकाश, जन-मनक रंग, नगर आ गाम, वर्ग आ जाति, अलग-अलग देश, प्रकृति आ इतिहास सभ एकहि काव्यदृष्टिमे आबि रहल अछि। ‘उवाच’क शास्त्रीय स्वर आधुनिक वैश्विक बहुलताकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। मनुष्यता, पृथ्वी, जीवनक विस्तार आ संकट अनेक पाँतिमे संलग्न अछि।

शीर्षक कविता ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे उठल प्रश्नक एतय उत्तरक विस्तार भेटैत अछि: कविता केवल अभावक विवरण नहि, सम्पूर्ण जगतक संवेदी पाठ अछि। रचनाक सूचीगत विस्तार विश्व-मानचित्र बनबैत अछि। प्रश्न ई अछि जे एहि व्यापकता सँ ठोस मानवक आवाज कतेक स्पष्ट रहैत अछि; किछु ठाम सूचीक वेग अनुभूतिक गहराइकेँ ढाँकि सकैत अछि। तथापि कविता-चेतनाक वैश्विक आकांक्षा महत्त्वपूर्ण अछि।

४४. घर-बाहर

मूल पृष्ठ : 105-107 | प्रधान विषय : घर-बाहर, राजनीति

अफीमक कारोबार, पुलिस-अफसर, ठेकेदारी, नेतागिरी, मकान-व्यापार आ सम्पत्ति-संग्रहक बीच सार्वजनिक सत्ता आ निजी लाभक रेखा धुँधला पड़ैत अछि। ‘घर-बाहर’ शीर्षक सत्ता-द्वारा निजीकरणक व्यंग्यक आधार बनैत अछि: सार्वजनिक कर्तव्यक रूपमे जे होएबाक चाही, ओ घरपरिवारक हितक साधन बनि जाइत अछि।

कविताक भाषामे जकाँ-जकाँ भिन्न पदनाम जुड़ैत अछि, ओ एक राजनीतिक जालक रूप लैत अछि। ‘अपन दुलरुआक नाम’ आ ‘ओ करत मौज! ओ करत राज!!’क संग पढ़लासँ परिवारवाद आ संस्थागत भ्रष्टाचारक अन्तरसम्बन्ध देखाइत अछि। रचनाक नैतिक प्रश्न तीख अछि; काव्यात्मक बिम्बक अपेक्षा सामाजिक प्रहार प्रमुख रहल अछि।

४५. जय हो मानव जातिक जय हो

मूल पृष्ठ : 108–109 | प्रधान विषय : मानवता, शान्ति

मानवेतिहासमे विनाशकारी प्रयास, रावणक प्रतिरूप, आतंक, नर-संहारक अस्त्र आ पृथ्वीक भविष्यक भय उत्पन्न करैत कविता अन्ततः मानवजातिक जीवन-मूल्यक पक्ष लैत अछि। शीर्षक जयघोष अछि, मुदा ओ उत्साहक सहज नारा नहि; सभ विनाशकारी शक्तिक बाद मनुष्यक गरिमा बचबाक आग्रह अछि।

कविता मिथकीय आ आधुनिक भयकेँ एक साथ राखैत अछि। भू-मण्डल, रक्त-मांस, अस्त्र आ मानवसभ्यताक बिम्ब एक साझा संकट बनबैत अछि। ‘बुलेट बन्दूक’मे जे भय सीमित दृश्य अछि, एतय ओ वैश्विक मानव-विनाशक समस्या बनि जाइत अछि। ‘जय हो’क पुनरुक्ति सम्भावनाक अन्तिम रक्षाबन्धन जकाँ काज करैत अछि।

४६. बन्न करू ड्रामा श्रीमान

मूल पृष्ठ : 110–111 | प्रधान विषय : नागरिक व्यंग्य

पोथी-कपड़ा-मकानक महँगाइ, शिक्षाक व्यापारीकरण, स्त्री-असम्मान, भ्रष्टाचारी दलाल, परिवारवाद, प्रशासनक निष्क्रियता आ नेताक दिखावा—सभ पर कविता अन्तिम सार्वजनिक

हस्तक्षेप करैत अछि। ‘बन्न करू ड्रामा श्रीमान’ नाटकीय सम्बोधन अछि; कवि सत्ताधारीक भाषा आ कर्मक विच्छेद देखैत छथि।

संग्रहक अन्तिम कविता रूपेँ ई रचना उपसंहारक शक्ति रखैत अछि। आरम्भक ‘अशोक वृक्ष’क संयत सौन्दर्य-चित्रसँ चलल यात्रा अंतमे कठोर नागरिक सम्बोधन धरि पहुँचल अछि। ‘ड्रामा’ शब्द प्रचारात्मक राजनीति आ लोकजीवनक संकट बीचक अन्तर उद्घाटित करैत अछि। भावात्मक अर्थ एतबा अछि: मनुष्यक दैनन्दिन आवश्यकताकेँ नैतिक प्राथमिकता देल बिना अधिकारक अभिनय शून्य अछि।

समेकित शोध-निष्कर्ष

रचनाक आन्तरिक प्रवाह

संग्रहक ४६ कवितामे प्रकृतिक लघु दृश्यसँ शहरी-ग्रामीण असमानताक विस्तृत आख्यान, ओतयसँ सत्ता-बजारक तीख व्यंग्य, फेर भाषा-साहित्यक आत्मपरीक्षण आ अन्तमे मनुष्यता-सम्मानक आह्वान धरि एक अर्थपूर्ण प्रवाह अछि। कविता सभ कठोर विषयाधारित खण्डमे अलग-अलग नहि रहल अछि; प्रकृति, भाषा, सत्ता आ स्मृतिक रेखा अनेक स्थाने एक-दोसरामे मिलैत अछि। एही परस्परता संग्रहक वास्तविक एकता अछि।

काव्यभाषाक उपलब्धि

मूलपाठमे प्रचलित मैथिली पद, ध्वनि आ क्रियाप्रयोगक संग आधुनिक राजनीतिक आ वैश्विक शब्दाभिधान अछि। शास्त्रीय पदविन्यास (‘अथातो’, ‘उवाच’, ‘कालचक्र’) आ समकालीन लोकप्रिय शब्द (‘डेमोक्रेसी’, ‘एलेक्शन’, ‘इन्टॉलरेंस’) सँ बनल तनाव कविताकेँ अपन समयक बहुभाषी अनुभव दैत अछि। लघु छन्दहीन दृश्य, क्रमांकित क्षणचित्र, जनसभामुखी वक्तव्य, व्यंग्यात्मक दोहराव आ दीर्घ मुक्तछन्द—सभ अपन-अपन सामाजिक प्रभाव लैत अछि।

सामाजिक मूल्य आ समीक्षा-दृष्टि

जनपक्षधरता संग्रहक प्रमुख नैतिक शक्ति अछि। तैओ सामाजिक आलोचना आ साहित्यिक मूल्यांकन एके वस्तु नहि: अति प्रत्यक्ष वक्तव्य कतहु सूक्ष्म बिम्बकें रोकैत अछि; कतहु विषयक विस्तार अनुपस्थित सामाजिक पात्रक प्रत्यक्ष आवाज ढाँकि दैत अछि; आ कतहु रूढ़ि-विरोधक संग नवजीवनप्रति आशंका सेहो भेटैत अछि। एही अन्तर्विरोध सहित पढ़लासँ कविता सभक जीवन्तता देखाइत अछि। पढ़निहारक काज कविक प्रत्येक घोषणासँ सहमत होएब नहि, कविक सवालक सामाजिक आधार जाँचब अछि।

अन्तिम स्थापना

‘अथातो काव्य जिज्ञासा’ कविता-कर्मक उत्तरदायित्व पर केन्द्रित जनोन्मुख मैथिली काव्य-संग्रह अछि। एकर काव्यजगतक मूल धुरी ई प्रश्न अछि—मनुष्य, माटि, भाषा आ श्रम बिनु कथित प्रगतियात्राक की अर्थ? कविता भरल बजार आ सत्ता-प्रदर्शनक बीच जीवित संवेदनाक स्थान खोजैत अछि। सभ ४६ कविता एकहि स्वरमे नहि बजैत अछि; एहि विभिन्नताक भीतर लोकजीवनक सांस्कृतिक मानवीय अधिकारक आग्रह ओकर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि अछि।

परिशिष्ट : अन्तःसम्बन्धक अध्ययन-सूत्र

काव्यक आत्मप्रश्न

सन्दर्भ-कविता : अथातो काव्य जिज्ञासा; कविता बिकबा लए तैयार; वाक्-विमर्श; अथ कविता उवाच

शोध-प्रश्न : कविता सामाजिक दायित्व आ बजारक बीच कोना अपन स्वतन्त्रता सुरक्षित करैत अछि?

प्रकृति सँ समाज दिस

सन्दर्भ-कविता : अशोक वृक्ष; बबूर गाछ; आदिवासीक घर; धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल; एक टा छल गाम हमर

शोध-प्रश्न : प्रकृतिक दृश्य कहिया विस्थापन आ अधिकारक प्रश्न बनि जाइत अछि?

भाषा, शिक्षा आ समाज

सन्दर्भ-कविता : मैथिली बरनी; भाषा ठाढ़ बजार मे; मातृभाषा; भोला बाबू

शोध-प्रश्न : मातृभाषाक स्मृति आ संस्थागत प्रतिष्ठाक बीच कोन अन्तर अछि?

लोकतंत्रक नाटकीयता

सन्दर्भ-कविता : एलेक्शन! एलेक्शन!; रेल! रेल!; नेता-पुराण; डांस! डेमोक्रेसी डांस!; बन्न करू ड्रामा श्रीमान

शोध-प्रश्न : लोकतंत्रक सार्वजनिक भाषा आ जनताक जीवनानुभवक दूरी कोना बनैत अछि?

बजारक बहुस्तरीय प्रभाव

सन्दर्भ-कविता : शाइन इंडिया; महानायकक अरण्य-यात्रा; हिसाब-किताब; बजार; वैश्वीकरण; पार्टनर

शोध-प्रश्न : आर्थिक शक्ति भाषाक अर्थ, सांस्कृतिक व्यवहार आ लोकजीवनकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?

हिंसा आ मानवीय भविष्य

सन्दर्भ-कविता : बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत; बुलेट बन्दूक; जय हो मानव जातिक जय हो

शोध-प्रश्न : समयक हिंसा सँ उबरबाक लेल कविता कोन मानवीय विकल्प प्रस्तुत करैत अछि?

अध्याय ३ • वीरेन्द्र मल्लिक साहित्य

प्रथम पुरुष

आठ निबन्ध आ एक अन्तरङ्ग वार्ता • परम्परा, प्रयोग, बिम्ब आ आलोचनात्मक विवेक

१. परम्परा : प्रयोग एवं आधुनिक बोधक कविता (पृ. ९-२७)

केन्द्रीय प्रतिपाद्य

आरम्भिक निबन्धमे परम्परा आ नवीन प्रयोगकेँ परस्पर विरोधी मानबाक प्रवृत्तिक पुनर्विचार कएल गेल अछि। साहित्यिक नवता शून्यसँ उत्पन्न नहि होइत अछि; पूर्ववर्ती काव्य-चेतना, जनजीवन, संस्कार आ अभिव्यक्तिक विरासतसँ संवाद करैत नव रूप ग्रहण करैत अछि। अतएव ‘आधुनिक बोध’ केवल कालगत नवीनता नहि, बदलैत जीवन-जगतक नूतन अनुभूति आ ओकर अनुरूप कलात्मक संरचनाक नाम अछि।

निबन्धमे काव्यधाराक भिन्न प्रवृत्ति, छन्द आ मुक्त अभिव्यक्ति, बिम्ब आ प्रतीक, यथार्थबोध, समाजाभिमुखता तथा पाश्चात्य साहित्यिक प्रवाहक सन्दर्भ एकहि विमर्शमे उपस्थित होइत अछि। एहि बहुविध सन्दर्भसँ लेखक काव्यक आधुनिक रूपक बोधगम्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तैयार करैत छथि।

परम्परा, यथार्थ आ प्रयोग

परम्पराकेँ रूढ़िक समानार्थी मानल जाएतऽ आधुनिक प्रयोगक उत्पत्ति अस्पष्ट भऽ जाइत अछि। लेखकक विश्लेषणक केन्द्र ई अछि जे रचनाकार परम्परासँ भाषा, संवेदना आ सांस्कृतिक स्मृति ग्रहण करैत छथि, मुदा ओकर यान्त्रिक अनुकरण नहि करैत छथि। चयन, अस्वीकार आ पुनर्सृजनक प्रक्रिया आधुनिक काव्यक रचनाशीलता निर्धारित करैत अछि।

यथार्थवाद आ अतियथार्थवादी संकेत, रोमानी आग्रह आ सामाजिक चेतना, काव्यक आत्मगतता आ वस्तुगत जीवनक उपस्थिति—एहि सभक चर्चा काव्य-आधुनिकताक एकरेखीय परिभाषाकेँ जटिल बनबैत अछि। मनुष्यक एकाकीपन, द्वन्द्व, स्वप्न, संघर्ष आ बदलैत सामाजिक परिस्थिति कविता मे नूतन चित्रक गठन करैत अछि।

आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

एहि निबन्धक सबसँ महत्त्वपूर्ण गुण ई अछि जे आधुनिकताकेँ केवल शैलीगत विचित्रता वा विदेशी अनुकरणक रूपमे नहि, अनुभूति आ अभिव्यक्तिक सम्बन्धक रूपमे समझबाक आग्रह करैत अछि। लेखक मैथिली कविताकेँ विस्तृत भारतीय आ विश्व-साहित्यिक चर्चासँ जोड़बाक प्रयास करैत छथि।

तथापि ‘आधुनिक’ आ ‘प्रयोग’क व्यापक प्रयोगक कारण अलग-अलग काव्यप्रवृत्तिक सीमा कखनहु अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। एहि बिन्दुपर एकटा आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि : कविता मे नवीन भाषिक गठन स्वयंमे उपलब्धि अछि, कि ओकर मानवीय संवेदना आ अर्थ-उत्पादनक सामर्थ्यसँ मूल्याङ्कन आवश्यक अछि? ग्रन्थक समग्र अभिमुखता दोसर विकल्पकेँ बल दैत अछि।

२. मैथिली काव्य मे वैभव भावधारा (पृ. २८–४६)

विषय-विस्तार

एहि निबन्धमे मैथिली काव्य-परम्पराक गौरव आ वैभवकेँ केवल प्रशस्तिक वस्तु नहि, काव्य-संवेदनाक दीर्घ विकास-यात्राक रूपमे देखबाक प्रयास अछि। विद्यापति आ उत्तरवर्ती काव्य-धाराक आलोकमे भावक विविध रूप—प्रेम, भक्ति, करुणा, सौन्दर्य, लोकजीवन आ आध्यात्मिक अनुभूति—काव्य-सृष्टिक अभिन्न अङ्ग रूपमे उभरैत अछि।

कवि-परम्पराक विवेचनक संग लेखक स्थान-स्थानपर मूल पद वा काव्यांश प्रस्तुत करैत छथि। उद्धरणक प्रयोजन ऐतिहासिक नामावली बनायब मात्र नहि, बरु भाषा आ भावक

जीवित सम्बन्ध प्रदर्शित करब अछि। एहि कारण निबन्ध एकहि समय ऐतिहासिक सर्वेक्षण आ काव्य-सौन्दर्यक पाठ बनि जाइत अछि।

काव्यवैभवक अनेक स्तर

‘वैभव’क आशय केवल विपुल साहित्य-सृष्टि नहि; ताहिमे रागात्मकता, अनुभवक प्रौढ़ता, भाषिक माधुर्य, लय-संयोजन, पद-रचना आ काव्यचित्रक सघनता सम्मिलित अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक परिवेश, धार्मिक-दार्शनिक विचार आ लोक-व्यवहारक धरातल काव्यक संवेदनात्मक शक्ति बढ़बैत अछि।

लेखकक चयनित उदाहरण सभ पढ़िने ई स्पष्ट होइत अछि जे भावधाराकेँ एक मात्र रसक सीमामे बाँधब उचित नहि। भक्ति आ शृङ्गार अनेक बेर एक-दोसराक अर्थ-विस्तार करैत अछि; लोकमूलक अभिव्यक्ति साहित्यिक ऊँचाइ प्राप्त करैत अछि। एहने सम्मिश्रण मैथिली काव्यक विशिष्ट शक्ति अछि।

विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

एहि अध्यायक प्रमुख योगदान मैथिली साहित्यक मूल्याङ्कनमे आन्तरिक परम्पराक प्रतिष्ठापन अछि। तथापि ‘वैभव’क अवधारणाकेँ समकालीन सामाजिक असमानता, स्त्री-अनुभव आ उपेक्षित समुदाय सभक काव्य-स्वरक सन्दर्भमे फेरसँ पढ़ल जाए तऽ विमर्श आरो व्यापक भऽ सकैत अछि। ई प्रश्न ग्रन्थक कथनक खण्डन नहि, ओकर अनुसन्धानात्मक विस्तार अछि।

३. ‘सुभद्र-हरण’ मे बिम्ब-विधान (पृ. ४७-५८)

बिम्बक सैद्धान्तिक आधार

एहि अध्ययनक केन्द्र काव्य-बिम्ब अछि। लेखक बिम्बकेँ शब्दसँ उत्पन्न मानसिक दृश्य मात्र नहि मानि संवेदनात्मक अनुभवक कलात्मक मूर्तिकरण रूपमे ग्रहण करैत छथि। बिम्ब,

कल्पना, अनुभूति, इन्द्रियबोध आ अर्थक सम्बन्ध पर विचार करैत अध्याय महत्त्वपूर्ण परिभाषा तथा काव्यशास्त्रीय सन्दर्भ प्रस्तुत करैत अछि।

काव्य-बिम्बक वर्गीकरणक प्रयत्नमे दृश्य, श्रव्य, स्पर्शादि इन्द्रियसम्बद्ध स्तर, वस्तुगत वा अमूर्त गुण, सरल आ जटिल विन्यास तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अभिव्यक्तिक भेद उपयोगी बनैत अछि। निबन्धमे प्रस्तुत वर्गीकरणक रूपरेखा आ रेखाचित्र विश्लेषणकें व्यवस्थित करबाक उपकरण अछि।

काव्यपाठमे बिम्बक क्रिया

‘सुभद्र-हरण’क उदाहरणक विवेचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे बिम्ब कथा-प्रसङ्गक केवल सजावट नहि करैत; से नाटकीय तनाव, पात्रक भावावस्था, गति, दृश्य-परिवर्तन आ रसात्मक प्रभावकें मूर्त करैत अछि। क्रिया, रूप, ध्वनि आ अनुभूतिक शब्द-चयनसँ पाठकक चित्तमे दृश्य आ भावक संयुक्त अनुभव बनैत अछि।

कथात्मक काव्यमे बिम्ब-विधानक विशेषता ई जे घटना-सूत्र आ अनुभूति परस्पर जुड़ैत अछि। एकटा सफल बिम्ब कथा कें रोक्कैत नहि, बरु कथ्यक गति आ भावानुभूतिक तीव्रता बढ़बैत अछि। लेखकक उदाहरणाधारित पद्धति एहि अन्तरकें देखाबय योग्य बनबैत अछि।

पद्धतिगत समीक्षा

एहि निबन्धक बौद्धिक महत्त्व सैद्धान्तिक काव्यशास्त्रकें मैथिली रचनाक समीप-पाठसँ जोड़बामे अछि। वर्गीकरण विश्लेषणमे सहायक अछि, मुदा कोनो एक बिम्ब अनेक इन्द्रियात्मक आ भावात्मक श्रेणीमे एकहि बेर प्रवेश कऽ सकैत अछि। ताहि कारण बिम्बकें स्थिर कोठरीमे सीमित नहि करि ओकर समग्र प्रसङ्ग, ध्वनि आ प्रभाव पढ़ब अधिक फलदायी होइत अछि।

४. रामकाव्यक परम्परा आ मैथिली रामायण (पृ. ५९-८०)

रामकथाक बहुविध परम्परा

एहि अध्यायमे रामकथा केँ भारतीय साहित्यक बहुभाषिक, बहुस्तरीय आ निरन्तर परिवर्तित होइत सांस्कृतिक आख्यानक रूपमे देखल गेल अछि। संस्कृत ग्रन्थ, भिन्न भाषाक रामकाव्य आ स्थानीय परम्पराक पारस्परिक सम्बन्धक विवेचनसँ मैथिली रामायणक ऐतिहासिक स्थान स्पष्ट करबाक प्रयास अछि।

महाकाव्यात्मक आख्यानक पुनर्लेखनक अर्थ केवल मूल कथाक स्थानान्तरण नहि। भाषा, लोकमानस, धार्मिक वृत्ति, सांस्कृतिक आचार, पात्रक स्वभाव आ कथा-कथनक विधि बदलला पर रामकथा नव साहित्यिक रूप ग्रहण करैत अछि। एहि दृष्टिसँ मैथिली रामायण मौलिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तिक महत्वपूर्ण अवसर बनैत अछि।

मैथिली काव्यक वैशिष्ट्य

लेखक मैथिलीमे रचित रामकथासम्बद्ध काव्यक चर्चा करैत परम्परा आ रूपान्तरक सम्बन्धपर बल दैत छथि। रामायणक पात्रगणक नैतिक-धार्मिक स्वरूपकेँ स्थानीय संवेदनासँ जोड़ल जा सकैत अछि; मैथिली भाषा संवाद, वर्णन आ लोकसम्बद्ध उपमानक माध्यम बनि कथाक नूतन निकटता रचैत अछि।

काव्य-परम्पराक व्याख्यामे ग्रन्थक तुलनात्मक दृष्टि विशेष उल्लेखनीय अछि। स्रोत-ग्रन्थ आ उपरान्तक मैथिली रूपक बीच कथात्मक समानता अवश्य होइत अछि, मुदा काव्यक स्वतंत्र पहचान कथानकक शब्दशः समानतामे नहि, रचनात्मक चयन आ भावगत पुनर्संयोजनमे निहित रहैत अछि।

शोधक प्रश्न

एहि अध्यायक आधारपर नव अनुसन्धान एहि विषय सभपर भऽ सकैत अछि : मैथिली रामायणमे लोकभाषाक उपयोग, स्त्री-पात्रक संवाद, सांस्कृतिक आचारक रूपान्तरण, भक्ति

आ नीतिबोधक आपसी सम्बन्ध, तथा स्रोत-परम्परासँ भिन्न प्रसङ्गक कारण। ई सभ प्रश्न मूल निबन्धक ऐतिहासिक चर्चाकेँ पाठ-आधारित तुलनात्मक अनुसन्धान धरि विस्तारित करैत अछि।

५. मिथिलाभाषा रामायणक प्रेरणा स्रोत : अध्यात्मरामायण आ रामचरितमानस (पृ. ८१-८८)

प्रेरणा आ अनुकरणमे अन्तर

एहि निबन्धक विशिष्ट विषय मिथिलाभाषा रामायणक प्रेरणागत सम्बन्ध अछि। शीर्षकमे उल्लिखित अध्यात्मरामायण आ रामचरितमानसक प्रसङ्ग लेखककेँ स्रोत, प्रभाव, विषय-चयन आ काव्यात्मक पुनर्निर्माणक जटिल सम्बन्ध जाँचबाक अवसर दैत अछि। प्रेरणा-ग्रन्थक उपस्थिति रचनाक मौलिकताकेँ अनिवार्य रूपसँ समाप्त नहि करैत अछि।

ग्रन्थक पाठक अनुसार रामकथा-परम्पराक आध्यात्मिक अर्थ आ जनभाषिक अभिव्यक्ति —दूनों महत्त्वपूर्ण अछि। अध्यात्मरामायणक आध्यात्मिक प्रवृत्ति आ रामचरितमानसक भक्तिमूलक लोकव्याप्तिक आलोकमे मैथिली रूपान्तरक विशिष्टता पढ़बाक प्रयत्न कएल गेल अछि। तुलना करैत लेखकक आग्रह कथ्य आ भक्ति-भावना संग काव्यरूपक भिन्नता बुझब अछि।

तुलनात्मक पाठ-पद्धति

एकर समीचीन पद्धति एहि चारि स्तर पर आधारित होएबाक चाही : कथाक क्रम आ प्रसङ्ग, पात्रक उक्ति आ चरित्रांकन, दार्शनिक-धार्मिक आशय, तथा भाषा-लय-शैली। मूल निबन्ध एहि तुलनात्मक विमर्शक दिशामे स्रोतग्रन्थ सभकेँ आमने-सामने राखैत अछि।

अनुसन्धानमे ई अलग राखब जरूरी अछि जे कोन तथ्य सीधा पाठसाम्यसँ सिद्ध होइत अछि आ कोन बात काव्य-परम्पराक व्यापक प्रभावक रूपमे अनुमानित अछि। समस्त

समानता केँ प्रत्यक्ष उधारी कहि देब साहित्यिक परम्पराक साझा संरचनाकेँ उपेक्षित करब होएत।

आलोचनात्मक मूल्य

अध्याय मैथिली रामकाव्यकेँ प्रादेशिक एकान्तसँ निकालि भारतीय महाकाव्य-परम्पराक गतिशील संवादमे रखैत अछि। विशेष मूल्य ई जे प्रेरणा आ सृजनात्मक स्वायत्तताक सम्बन्धपर विचार करबाक आधार तैयार करैत अछि।

६. आलोचनाक संकट आ संकट आलोचना (पृ. ८९-१०१)

आलोचनाक दायित्व

ई निबन्ध साहित्यिक मूल्याङ्कनक नीतिशास्त्र आ विवेकपर केन्द्रित अछि। आलोचनाक उद्देश्य केवल प्रशंसा, निन्दा, मित्रतापोषण वा समूहगत प्रतिष्ठाक रक्षा नहि; कृतिक गुण-दोषक तर्कसंगत विवेचन आ पाठकीय विवेकक विकास अछि। लेखक आलोचकक बौद्धिक तैयारी, व्यापक अध्ययन आ स्वतन्त्र निर्णयक महत्त्व रेखाङ्कित करैत छथि।

आलोचनामे ‘संकट’ दुइ स्तरपर उभरैत अछि : एक दिशि उचित मानदण्ड, सुसंगत पद्धति आ प्रमाणयुक्त व्याख्याक अभाव; दोसर दिशि संस्थागत आग्रह, वैयक्तिक पक्षपात आ साहित्यिक मूल्यक अस्थिरता। एहि संकटकेँ केवल व्यक्ति-विशेषक दोष कहि समाप्त नहि कएल जा सकैत; साहित्यिक संस्कृतिमे विवेकपूर्ण संवादक स्थिति सेहो आवश्यक अछि।

भारतीय आ पाश्चात्य सन्दर्भ

निबन्धमे शास्त्रीय आलोचना, आधुनिक सौन्दर्यविचार आ मार्क्सवादी आलोचनात्मक प्रवृत्तिक सन्दर्भ उपस्थित अछि। कलात्मक रूप, सामाजिक यथार्थ, विचारधारा, अनुभूति, भाषा आ कृतिक स्वायत्ततामे संतुलन स्थापित करब आलोचनाक मुख्य चुनौती अछि। अलग-अलग पद्धति पाठककेँ भिन्न प्रश्न पूछैत अछि; एकमात्र पद्धतिक सर्वाधिकार अर्थ-बोधकेँ संकुचित करि सकैत अछि।

एहि कारण लेखकक चर्चासँ आलोचनाक एकटा उत्तरदायी स्वरूप उभरैत अछि—पाठक समीपता, अवधारणाक स्पष्टता, मूल्याङ्कनमे निर्भीकता आ लेखक-आलोचक सम्बन्धमे अपेक्षित दूरी।

आजुक प्रासंगिकता

साहित्यिक गोष्ठी, पत्रिका, पुरस्कार-व्यवस्था आ डिजिटल माध्यममे त्वरित प्रतिक्रिया बढ़ला सँ एहि प्रश्नक महत्त्व आरो बढ़ल अछि। आलोचनात्मक मत प्रकाशित करैत समय पाठ-साक्ष्य, सन्दर्भ, मतभेदक शिष्टता आ पारदर्शी आधार आवश्यक अछि। ई समसामयिक विस्तार मूल निबन्धक आलोचना-विवेकक मर्मसँ मेल खाइत अछि।

७. मैथिली कविताक वर्तमान (पृ. १०२–११४)

वर्तमानक अर्थ

एहि निबन्धमे ‘वर्तमान’ केवल हालक प्रकाशन-वर्षक पर्याय नहि, बदलैत जीवन-चेतना, कथ्य, भाषा आ काव्यशिल्पक जीवित रूप अछि। आधुनिक मैथिली कविता परम्परागत भाव-विधानसँ संवाद करैत सामाजिक असुरक्षा, अस्तित्वगत बेचैनी, नैतिक प्रश्न, व्यक्तिक अकेलापन आ सामूहिक अनुभूतिक नूतन स्वर खोजैत अछि।

लेखक अनेक काव्यांशक माध्यमसँ अलग-अलग रचनात्मक स्वरक तुलना करैत छथि। कविता केँ केवल सिद्धान्तसँ नहि, ओकर प्रयोगधर्मी भाषिक देहक समीप जाए पढ़ब एही अध्यायक आधारभूत पद्धति अछि।

शिल्प आ संवेदना

नव कविता मे मुक्त विन्यास, कथन-भङ्गिमा, बोलचालक भाषिक ऊर्जा, विसङ्गतिक अनुभूति, प्रतीकात्मक संकेत आ अन्तरंग आत्मालाप देखल जा सकैत अछि। मुदा नूतन शिल्पक सफलता तखनहि होइत अछि जखन से अनुभूतिक अनुरूप हो। कथ्य आ शिल्पक प्रामाणिक सम्बन्ध बिना प्रयोग यान्त्रिक बनि सकैत अछि।

समकालीनताक एक आवश्यक पक्ष कविता मे सामाजिक परिवेशक उपस्थिति अछि। प्रवास, संघर्ष, विस्थापन, सम्बन्धक परिवर्तन आ मानवीय आकांक्षा काव्यक चिन्ताकें गतिमान करैत अछि। एही सन्दर्भमे परम्परागत मिथिला-छविक रोमानी पुनरावृत्ति आ आधुनिक जीवनक जटिल यथार्थक बीच अन्तर पहिचानल जा सकैत अछि।

चयन आ सीमाक प्रश्न

काव्य-वर्तमानक कोनो आलोचनात्मक चित्र प्रतिनिधि रचनाक चयनपर निर्भर करैत अछि। अतएव एहन सर्वेक्षणमे कवयित्री, नव पीढ़ी, भिन्न सामाजिक अनुभव आ भाषिक प्रयोगक समावेशक प्रश्न उठब स्वाभाविक अछि। निबन्ध एहि व्यापक विमर्शक एकटा उपयोगी आरम्भिक मानचित्र प्रदान करैत अछि, अन्तिम आ पूर्ण सूची नहि।

८. कविता मे जीवनानन्द (पृ. ११५-१२२)

जीवन आ कविता

एहि अन्तिम मूल अध्यायमे कविता आ जीवनक सम्बन्ध अधिक आत्मीय, संवेदनापरक आ दार्शनिक रूप ग्रहण करैत अछि। जीवनानन्द केँ सतही उल्लास नहि बुझबाक चाही; दुःख, अपूर्णता, आशा, स्मृति, प्रेम, प्रकृति, प्रतिकूलता आ मानवीय जिजीविषाक बीच जीवनक अर्थक खोज कविता मे रूपायित होइत अछि।

निबन्धक उद्धरण सभ संकेत करैत अछि जे सौन्दर्यक अनुभूति दुःखक अस्वीकार नहि, बरु ओकर मानवीय रूपान्तरण सम्भव करैत अछि। भाव आ विचारक सङ्गति कविताकें जीवनक साधारण क्षणमे असाधारण अर्थ देखबाक शक्ति दैत अछि।

काव्यक मानवीय पक्ष

जीवनानन्दक काव्यात्मक स्वरूप अनेक प्रकारेँ व्यक्त होइत अछि—भाषाक सहजता, प्रकृतिक नव अनुभूति, आन्तरिक उन्मुक्ति, सम्वेदना, निराशाक बीच आशाक उपस्थितिक

रूपमे। जे कविता मनुष्यक अनुभवक गहराई पकड़ैत अछि, से पाठकक एकान्तमे सहचर बनि सकैत अछि।

एहि निबन्धकेँ पोथीक पहिल अध्यायक संग पढ़ला पर एकटा वैचारिक वृत्त पूरा होइत अछि : शुरुआतमे आधुनिक बोधक प्रश्न छल, अन्तमे मानवीय जीवनानुभवक प्रश्न। आधुनिकताक मूल्य केवल नूतन रूप-विन्यास नहि, मनुष्यक अनुभूतिक सार्थक विस्तारमे अछि।

समापनक महत्त्व

अन्तिम अध्याय ग्रन्थक आलोचनात्मक गाम्भीर्यकेँ संवेदनात्मक निष्कर्ष दैत अछि। बिम्ब, रूप, परम्परा आ आलोचनाक बहस अन्ततः जीवनक अनुभव सँ दूर नहि रहि सकैत—ई पोथीक समग्र अन्तर्धारक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

परिशिष्ट : वीरेन्द्र मल्लिक सँ लक्ष्मण झा सागरक अन्तरङ्ग वार्ता (पृ. १२३-१४४)

परिशिष्टमे संवाद-रूप अपनाओल गेल अछि। प्रश्नकर्ता लक्ष्मण झा सागर आ उत्तरदाता वीरेन्द्र मल्लिकक बीच साहित्य, काव्यरचना, मैथिलीक स्थिति, आधुनिकता, आलोचना, साहित्य-साधना, अध्ययन आ मानवीय सरोकारपर विमर्श भेटैत अछि। ई वार्ता सिद्धान्तप्रधान मुख्य अध्याय सभकेँ लेखकक आत्मविचार आ साहित्यिक व्यक्तित्वक सन्दर्भ दैत अछि।

संवादमे साहित्यिक प्रतिष्ठासँ बेसी महत्त्व साधना, सतत अध्ययन आ कृतिक सच्चाईकेँ भेटैत अछि। साहित्य-सृजनक लेल अध्ययनक महत्त्व, भाषाक सांस्कृतिक शक्ति, समकालीन काव्यप्रवृत्ति आ संस्थागत उपाधिसँ भिन्न वास्तविक साहित्यिक कर्मक प्रश्न अनेक स्थानपर उभरैत अछि। वार्तामे भारतीय आ विश्वसाहित्यक प्रसङ्गक उल्लेख लेखकक व्यापक पाठकीय रुचिक संकेत अछि।

अन्तरङ्ग वार्ताकें निष्पक्ष इतिहासक एकमात्र प्रमाण नहि मानबाक चाही। ई लेखकक स्वयं प्रस्तुत कएल विचार, चयनित स्मृति आ मूल्यबोधक दस्तावेज अछि। ताहि कारण एहि सामग्रीकें स्वतन्त्र पुस्तक-सूची, कालक्रम आ बाह्य साक्ष्यसँ मिलान कएने बिना अंतिम जीवनी-सत्यक रूपमे प्रस्तुत करब उचित नहि। तथापि रचनाकारक आलोचनात्मक चिन्तन बुझबाक लेल परिशिष्ट विशेष उपयोगी अछि।

समेकित विवेचन : आठ अध्यायक वैचारिक सूत्र

१. परम्परा आ नवता

पहिल, दोसर, चारिम आ पाँचम निबन्ध एकटा साझा सिद्धान्तपर अवलम्बित बुझाइत अछि : साहित्य अपन पूर्वपरम्परासँ पोषण प्राप्त करैत अछि आ नूतन ऐतिहासिक परिस्थितिमे ओकर नव अर्थ रचैत अछि। काव्य-परम्परा आ रामकथाक पुनर्लेखन एहि प्रक्रियाक अलग-अलग उदाहरण अछि।

२. काव्यक रूप आ अनुभूति

तेसर आ आठम अध्याय रूपसौन्दर्य आ अनुभवक अन्तःसम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। बिम्ब-विधानक युक्ति तखन सजीव अछि जखन से मानसिक, भावात्मक अथवा सामाजिक अनुभवक मूर्त रूप हो। जीवनानन्दक प्रश्न अन्ततः काव्य-रूपक मानवीय प्रयोजनपर प्रकाश दैत अछि।

३. आलोचनाक आत्मपरीक्षण

छठम आ सातम अध्याय आलोचना आ समकालीन सृजनक आपसी निर्भरता देखबैत अछि। नूतन कविता कें विवेकपूर्ण आलोचना चाही; आ आलोचनाकें नव कृतिक निकटसँ अध्ययन करैत स्वयं अपन मानदण्ड संशोधित करबाक तत्परता चाही।

४. मैथिली-केंद्रित, विश्व-संवादी दृष्टि

पोथीक अनेक निबन्धमे मैथिली पाठक सङ्ग संस्कृत, भारतीय आ पाश्चात्य काव्यविचारक संवाद जुड़ैत अछि। एहि दृष्टिक सबल पक्ष भाषिक आत्मविश्वास अछि : मैथिलीकेँ केवल क्षेत्रीय सांस्कृतिक वस्तुके रूपमे नहि, जटिल काव्यशास्त्रीय चर्चाक समर्थ माध्यमके रूपमे व्यवहृत कएल गेल अछि।

ग्रन्थक उपलब्धि आ अनुसन्धानक सम्भावित क्षेत्र

प्रमुख उपलब्धि : (क) मैथिली साहित्यक आन्तरिक मूल्यबोध आ व्यापक काव्यशास्त्रक समन्वय; (ख) सैद्धान्तिक प्रतिपादन संग कविता-पाठक प्रयोग; (ग) रामकाव्यक ऐतिहासिक आ तुलनात्मक सन्दर्भ; (घ) समकालीन आलोचनाक नैतिक प्रश्न; (ङ) रचनाकारक साक्षात्कार द्वारा विचारक आत्मपक्ष।

अग्रेतर अनुसन्धान : (क) ग्रन्थमे उद्धृत काव्यांश सभक प्रमाणिक मूल-संस्करणसँ पाठान्तर-मिलान; (ख) मैथिली काव्यक बिम्ब-विधानक तुलनात्मक कोष; (ग) रामकथाक मैथिली रूपान्तर सभक स्रोतसमीक्षा; (घ) आधुनिक मैथिली कवितामे स्त्री आ बहिष्कृत अनुभवक प्रतिनिधित्व; (ङ) आलोचना-पद्धतिक ऐतिहासिक विकास; (च) परिशिष्टमे उल्लिखित साहित्यिक तथ्यक स्वतन्त्र अभिलेखीय सत्यापन।

एकटा अनुसन्धानात्मक सावधानी अनिवार्य अछि : ग्रन्थमे उपस्थित लेखकक आलोचनात्मक निर्णयकेँ यथावत् उद्धृत करब आ ओकर सत्यापन करब दू अलग बौद्धिक प्रक्रिया छथि। ई समीक्षा मूल पोथीक विचार-संरचनाकेँ प्राथमिक मानि चलैत अछि; विस्तृत ग्रन्थ-सूची वा समीक्षकीय बाह्य प्रमाणक अभावमे अनावश्यक तथ्य-दाबी नहि करैत अछि।

समापन

‘प्रथम पुरुष’ मैथिली काव्य-चिन्तनक भिन्न क्षेत्रकेँ एकहि जिल्दमे आनयवला आलोचनात्मक संकलन अछि। परम्परा-विमर्शसँ शुरू भऽ काव्यवैभव, बिम्बशास्त्र, रामकाव्य,

तुलनात्मक स्रोतचर्चा, आलोचनात्मक संकट, समकालीन कविता आ जीवनानन्द धरि एकर यात्रा विषयगत रूपसँ विस्तृत अछि। परिशिष्टक अन्तरङ्ग वार्ता एहि यात्राकेँ लेखकक वैचारिक व्यक्तित्वसँ जोड़ैत अछि।

पोथीक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संकेत ई अछि जे मैथिली साहित्यक अध्ययनक लेल भाषिक आत्मीयता पर्याप्त नहि; पाठक सूक्ष्म निरीक्षण, व्यापक सन्दर्भज्ञान, रूप-विवेक आ स्वतन्त्र आलोचनात्मक निर्णय समान रूपसँ आवश्यक अछि। एहि आधारपर ग्रन्थ मैथिली साहित्यिक अनुसन्धानमे नूतन प्रश्न उठेबाक आ विधिसम्मत पाठालोचनाक प्रेरणादायी सामग्री प्रदान करैत अछि।

अध्याय ४ • वीरेन्द्र मल्लिक साहित्य

नाटक आ रंगमंच

नौ अध्याय आ दू परिशिष्ट • रंगशिल्प, एकांकी, लोकनाट्य आ मिथिलाक रंगपरम्परा

१. मैथिली नाटक आ रंगमंच : स्थिति आ भविष्य

एहि अध्यायमे भारतीय नाट्यपरम्पराक उद्गमसँ मैथिली नाटकक ऐतिहासिक विकास आ आधुनिक मैथिली रंगमंचक भविष्यधरि व्यापक सामग्री एकत्र कयल गेल अछि। लेखक नाट्यग्रन्थ, वास्तविक मंचन आ मैथिल समाजक सांस्कृतिक जीवनकेँ एक-दोसरसँ जोड़ि देखैत छथि।

१.१ नाटकक उत्पत्ति

अध्यायक आरम्भ नाटकक उत्पत्ति-प्रश्नसँ होइत अछि। नाट्यक उद्भवकेँ धार्मिक अनुष्ठान, सामूहिक अभिव्यक्ति, गीत-संगीत, अभिनय आ प्राचीन नाट्यविचारक पृष्ठभूमिमे राखल गेल अछि। नाट्यशास्त्रीय परम्पराक उल्लेख लेखकक प्रारम्भिक तर्ककेँ भारतीय सांस्कृतिक सन्दर्भ प्रदान करैत अछि।

कथाक लिखित रूप आ कथाक मंचीय रूपमे भिन्नता अछि। नाटकक उत्पत्तिक चर्चा करैत दूनूक सम्बन्ध स्थापित कयल जाय तँ नाट्यइतिहास अधिक समग्र बनैत अछि।

१.२ नाटकक समृद्ध परम्परा आ महत्त्व

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र, भास, शूद्रक, कालिदास, भवभूति आ संस्कृत नाट्यशास्त्रीय परम्पराक उल्लेखसँ लेखक भारतीय नाटकक इतिहासक समृद्ध स्वरूप रेखांकित करैत छथि। अभिनय, रस, पात्र, कथावस्तु आ प्रेक्षक-संबन्धक महत्त्व एहि विमर्शमे अन्तर्निहित अछि।

भारतीय नाट्यपरम्परामे नाटक साहित्यक संग प्रदर्शन-कला सेहो रहल अछि; तँ ओकर मूल्यांकन केवल लिखित संवादक सौन्दर्य धरि सीमित नहि होयबाक चाही।

१.३ मैथिली नाटकक उद्भव

मैथिली नाटकक उद्भवक प्रश्नमे भाषा, भूगोल, कालक्रम आ प्राचीन ग्रन्थपरम्परा सभ जोड़ल अछि। लेखक मैथिलीक आरम्भिक नाट्यरचनाकें व्यापक पूर्वभारतीय नाट्यपरम्पराक सन्दर्भमे देखैत छथि।

ऐतिहासिक अनुसन्धानमे नाटकक रचनाकाल, उपलब्ध पाण्डुलिपिक काल आ वास्तविक मंचनक प्रमाण तीनू पृथक् करबाक चाही। एहि भिन्नतासँ प्राचीनताक दावाक अधिक विश्वसनीय परीक्षण सम्भव होइत अछि।

१.४ आधुनिक भारतीय नाटकक विकास

एहि उपखण्डमे भारतीय नाटकक आधुनिक विकास, रचनात्मक परिवर्तन आ आधुनिक रंगमंचसँ ओकर सम्बन्धक विवेचन अछि। सामाजिक विषय, पात्र-निर्माण आ मंचन-पद्धतिक परिवर्तन आधुनिक नाट्यविकासक आवश्यक प्रसंग अछि।

मैथिली नाटकपर आधुनिक भारतीय रंगचेतनाक प्रभावकें स्थानीय सामाजिक परिस्थिति आ उपलब्ध रंग-साधनक सन्दर्भमे जाँचना उचित होयत।

१.५ प्राचीन मैथिली नाटक : मैथिली धूर्त समागम आ गोरक्ष-विजय

अनुक्रमणिकामे प्राचीन मैथिली नाटक अन्तर्गत ‘मैथिली धूर्त समागम’ आ ‘गोरक्ष-विजय’ विशेष रूपसँ उल्लिखित अछि। पहिल कृतिक चर्चामे व्यंग्य, सामाजिक आचरण आ नाट्य-संवादक प्रश्न महत्वपूर्ण होइत अछि; दोसरक सन्दर्भमे धार्मिक-आध्यात्मिक आख्यानक नाट्यरूप प्रमुख चर्चा थिक।

एहि रचनासभकें एकरस आधुनिक गद्यनाटकक संरचनामे परखब उचित नहि; प्राचीन नाटकक भाषा-मिश्रण, गीत, आख्यान आ मंचीय परम्परा स्वतंत्र कसौटी माँगैत अछि।

१.६ मध्यकालीन मिथिलामे विकसित नाटक : पारिजात हरण

मध्यकालीन मिथिलाक नाट्यविकासमे ‘पारिजात हरण’क विशिष्ट स्थान अछि। गीत, भक्ति, पौराणिक कथावस्तु आ प्रस्तुति-धर्मिता एकरा नाट्यइतिहासक महत्त्वपूर्ण सूत्र बनबैत अछि। कीर्तनिया नाटकक प्रसंग एहिठाम अनिवार्य रूपसँ उपस्थित होइत अछि।

गीतप्रधान कृतिक मंचनीयता आधुनिक संवादप्रधान नाटकसँ भिन्न होइत अछि। ताहि कारण मध्यकालीन नाटकक अध्ययनमे संगीतक स्थानकेँ मुख्य विवेचनसँ अलग नहि करबाक चाही।

१.७ नेपालमे विकसित नाटक

नेपालमे मैथिली नाटकक विकास, दरबारी संरक्षण आ भाषिक-सांस्कृतिक सम्पर्क पर लेखक विशेष ध्यान दैत छथि। मल्लकालीन परिवेशमे मैथिली नाट्यरचनाक इतिहास एक व्यापक भू-सांस्कृतिक परम्पराकेँ उद्घाटित करैत अछि।

आधुनिक राजनीतिक सीमाक आधारपर पुरान साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्पराकेँ बाँटब भ्रामक भऽ सकैत अछि। नेपालमे विकसित कृतिक मूल भाषा, लेखकीय सम्बन्ध आ प्रस्तुति-परिवेशक पृथक् परीक्षण अपेक्षित अछि।

१.८ नेपालमे विकसित नाटकक विशेषता

नेपालक मैथिली नाट्यपरम्परामे दरबारी वातावरण, गीत, धार्मिक आख्यान आ बहुभाषिक प्रयोगपर विमर्श कयल गेल अछि। एकरा केवल मैथिलीभाषी क्षेत्रक विस्तार नहि, बरु अभिनव नाट्य-परिवेशक रूपमे बुझबाक सम्भावना अछि।

नाटकक लिखित भाषा आ मंचपर प्रयुक्त गायन-भाषा प्रत्येक स्थितिमे समान होयब अनिवार्य नहि। एहि तथ्यपर विचार कयने बिना नेपालक मैथिली नाटकक मूल्यांकन अपूर्ण रहत।

१.९ आरम्भिक मैथिली नाटक आ अंकिया नाटक केर विशेषता

आरम्भिक मैथिली नाटकक चर्चा क्रममे लेखक 'अंकिया नाट' केर विशेषताक सेहो उल्लेख करैत छथि। गीत, नृत्य, धार्मिक कथावस्तु आ सामूहिक प्रस्तुति एकर तुलनात्मक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण प्रसंग अछि।

पूर्वोत्तर भारतीय नाट्यपरम्परासँ मैथिली नाट्यसाहित्यक सम्बन्धक प्रश्नमे प्रभावक दिशा स्वतः निश्चित नहि मानल जाय; कालक्रम आ उपलब्ध पाठक तुलनात्मक प्रमाण आवश्यक अछि।

१.१० आधुनिक मैथिली नाटक

आधुनिक मैथिली नाटकमे सामाजिक समस्या, पारिवारिक सम्बन्ध, नैतिक प्रश्न, राजनीतिक चेतना आ व्यक्तिक संघर्ष नवीन कथ्यक रूपमे प्रवेश करैत अछि। उपन्यासक समान नाटक सेहो बदलैत मैथिल समाजक अनुभवकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि; मुदा नाटकमे दृश्यात्मक संकेन्द्रण विशेष आवश्यक अछि।

आधुनिकता केवल नव तिथिक नाम नहि; नाटकक प्रश्न, संवाद, नाट्यसंरचना आ रंगप्रयोगक परिवर्तनक आधारपर ओकर विशेषता निर्धारित होइत अछि।

१.११ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली नाटक

स्वाधीनताक बाद मैथिली नाट्यलेखनमे सामाजिक परिवर्तन, शहरीकरण, ग्रामीण संकट, शिक्षा, परिवार आ व्यक्ति-संघर्षक विविध रूप देखल जाइत अछि। लेखक एहि कालखण्डक नाटक आ नाटककारसभक विस्तारपूर्वक चर्चा करैत छथि।

नाट्येतिहास लिखैत कृतिक प्रकाशन-वर्ष आ पहिल मंचन-वर्षकेँ अलग राखब आवश्यक अछि; कथ्यक नवता आ मंचीय नवता दुनू समानार्थक नहि।

१.१२ मैथिली रंगनाटक

लेखक 'मैथिली रंगनाटक'क चर्चा करैत नाटकक रंगमंचीय संभावना, अभिनय-धर्मिता आ प्रेक्षकसम्बन्धी प्रश्न उघारैत छथि। लिखित ग्रन्थ आ रंगनाटकक सफल प्रस्तुति अपन-अपन प्रक्रिया माँगैत अछि।

रंगनाटकक अध्ययनमे दृश्य-क्रम, प्रवेश-निर्गमन, मंचीय वस्तु, रंग-संकेत आ अभिनयक व्यावहारिक अनुकूलता विशेष जाँचनीय अछि।

१.१३ रंगमंचक सुदीर्घ परम्परा

रंगमंचक विकासक्रम भारतीय आ पाश्चात्य दूनू सन्दर्भमे निरूपित अछि। प्रस्तुति-स्थान, दर्शक-व्यवस्था आ अभिनय-साधनक विकास रंगपरम्पराकेँ रूप प्रदान करैत अछि।

रंगमंचकेँ केवल भवन नहि, एक सामाजिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध-व्यवस्था मानल जाय। रंगप्रयोगक समय दर्शक, अभिनेता आ स्थानक अन्तःक्रिया आवश्यक अछि।

१.१४ आधुनिक भारतीय रंगमंच

आधुनिक भारतीय रंगमंचमे प्रशिक्षण, प्रकाश, दृश्य-सज्जा, अभिनय-पद्धति आ नाट्य-निर्देशनक नूतन आयाम विकसित भेल। मैथिली रंगमंच एहि परिवेशसँ पूर्णतः पृथक् नहि छल।

मिथिलाक संसाधन, दर्शक-वर्ग आ भाषा-परिवेशक अनुरूप नव तकनीकक स्वीकार अधिक फलदायक होयत, न कि पाश्चात्य नमूनाक यान्त्रिक अनुकरण।

१.१५ समकालीन भारतीय रंगमंच

समकालीन रंगप्रयोगमे परम्परागत प्रस्तुति आ नवीन नाट्यभाषाक बीच निरन्तर संवाद चलैत अछि। लेखक एहि विकासक सन्दर्भमे मैथिली रंगमंचक अवस्थाक समीक्षा करैत छथि।

नव प्रयोगक मूल्यांकन केवल बाहरी कौतुकसँ नहि, कथ्यक अनुकूलता आ दर्शकक अनुभूतिसँ करबाक चाही।

१.१६ मैथिली रंगमंचक परम्परा

मैथिली रंगमंचक इतिहासमे लोकाभिनय, कीर्तनिया नाटक, धार्मिक प्रस्तुति, शौकिया मण्डली आ नगर-आधारित रंगसंस्था सभक योगदान रहल अछि। एहि विविध धाराक एक संयुक्त इतिहास लिखब लेखकक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न अछि।

लेखित नाटकक इतिहास, प्रचलित लोकाभिनय आ अभिलेखित मंचन—तीन प्रकारक स्रोतक समान महत्त्व स्वीकार कयल जाय।

१.१७ आधुनिक मैथिली रंगमंच

आधुनिक मैथिली रंगमंचक प्रयत्नमे नाट्यसंस्था, कलाकार, निर्देशक, रंग-प्रशिक्षण आ आयोजकक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि। मंचनक नियमितता आ आर्थिक-संस्थागत समर्थनक प्रश्न निरन्तर उपस्थित रहैत अछि।

मौलिक मैथिली नाटकक मंचन बढ़ेबाक लेल नाट्य-कार्यशाला, पुस्तकालय, चलन्त रंगमंडली आ दृश्य-ध्वनि अभिलेखागार उपयोगी भऽ सकैत अछि।

१.१८ मैथिली नाटक एवं रंगमंचक भविष्य

अध्यायक अन्तिम भाग मैथिली नाट्यक भविष्य, मौलिक रचना आ रंगमंचीय संरचनाक समस्यापर केन्द्रित अछि। लेखक साहित्यिक सृजन आ सक्रिय रंगकर्मक परस्पर सहयोगक प्रश्नकेँ महत्त्व दैत छथि।

सजग आलोचना, नव नाटककारक प्रोत्साहन, नियमित प्रस्तुति, कलाकार-प्रशिक्षण आ विविध दर्शक-समुदायसँ संवाद मैथिली रंगमंचक विकास लेल व्यवहार्य दिशा अछि।

प्रथम अध्यायक समेकित निष्कर्ष

प्रथम अध्याय मैथिली नाटकक एक ऐतिहासिक मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। एकर प्रमुख विशेषता ई छैक जे लेखक प्राचीन आख्यान, नेपालक नाट्यपरम्परा, आधुनिक नाटक आ समकालीन रंगकर्मकें एके विस्तृत विमर्शमे राखैत छथि। तथापि कालक्रम, प्रभाव आ प्रस्तुति-इतिहासक प्रत्येक दावा लेल मूल अभिलेखक स्वतंत्र अध्ययनक आवश्यकता बनल रहैत अछि।

२. रंगमंच आ एकांकी नाटक : संबंध-सूत्रता

एहि अध्यायमे रंगमंचक परिभाषा, भारतीय-पाश्चात्य मंच-विधान, आधुनिक एकांकीक तत्त्व आ मैथिली प्रतिनिधि रंग-एकांकीक विवेचन अछि। साहित्यिक रचना आ मंचीय प्रस्तुति कतेक निकटता राखैत अछि—ई अध्यायक मूल प्रश्न थिक।

२.१ ‘रंगमंच’ आ ओकर सुदीर्घ परम्परा

लेखक रंगमंच शब्दक व्युत्पत्ति, उपयोग आ नाट्यप्रस्तुतिक स्थल-सम्बन्धी विविध अर्थक चर्चा करैत छथि। रंगमंचक अर्थ केवल भूमि अथवा भवन नहि, बरु क्रिया, कलाकार आ दर्शकक संयुक्त उपस्थिति अछि।

नाट्यग्रन्थक शब्द दर्शकक समक्ष प्रकाश, गति, ध्वनि आ अभिनयक रूपमे बदलैत अछि; एहि कारण रंगमंच नाटकक पुनःसृजनक क्षेत्र थिक।

२.२ भरतक रंगमंच : आकार आ प्रकार

नाट्यशास्त्रीय रंगमण्डप, मंचक आकार, दर्शकक स्थान, प्रदर्शनक अनुकूलता आ अभिनयसँ सम्बन्धित व्यवस्थाक उल्लेख भेटैत अछि।

वास्तु-विधानक चर्चा नाटकक सौन्दर्यक चर्चा सँ अलग नहि; दृश्यता, श्रवणक्षमता आ उपस्थितिक नाटकीय सम्बन्ध मंचरचनासँ प्रभावित होइत अछि।

२.३ पाश्चात्य रंगमंच

पाश्चात्य परम्पराक नाट्यगृह, दर्शकक विन्यास आ अभिनय-क्षेत्रक भिन्न रूपक परिचय देल गेल अछि। एतय मंचीय परम्पराक ऐतिहासिक परिवर्तन देखल जा सकैत अछि।

पाश्चात्य रंगरूपक तुलना करैत मैथिली रंगमंचक पारम्परिक खुला तथा सामुदायिक मंचीय रूपक अपने गुणकें नहि बिसरबाक चाही।

२.४ आधुनिक रंगमंच : आकार-प्रकार

आधुनिक रंगमंचक चर्चा क्रममे मुक्ताकाशी, प्रोसीनियम, एरीना, बहुस्तरीय, बॉक्स-सेट, घूमनिहार आ अन्य मंचीय प्रयोगक परिचय अछि। एहि विविध रूपमे कलाकार-दर्शकक भौतिक दूरी आ दृश्य-सीमाक अन्तर नाटकीय अर्थक निर्माण करैत अछि।

मंचक चयन नाटकक कथा, पात्रक गति, उपलब्ध प्रकाश-साधन आ दर्शकवर्गक आवश्यकता अनुसार होयबाक चाही।

तत्त्व	संक्षिप्त आलोचनात्मक विवेचन
कथानक	एक मुख्य नाटकीय घटना अथवा संघर्षकें लक्ष्य करैत सुनियोजित घटनाक्रम।
पात्र	सीमित पात्र, भिन्न स्वभाव आ परिस्थितिसँ विकसित चरित्रगत क्रिया।
संवाद	पात्रानुकूल, स्वाभाविक, संक्षिप्त आ प्रयोजनपूर्ण वचन।
देश-काल	स्थान, वातावरण, समय आ सामाजिक पृष्ठभूमिक एकानुकूल संयोजन।
भाषा-शैली	मैथिलीक कथ्य-सापेक्ष प्रयोग; अत्यधिक अलंकारिकता अथवा कृत्रिमतासँ बचाव।
उद्देश्य	कथ्यक अन्तर्निहित विचार, अनुभव अथवा सामाजिक अर्थ।
गति	दृश्यगत परिवर्तन आ नाटकीय तनावक संतुलित प्रवाह।

तत्त्व	संक्षिप्त आलोचनात्मक विवेचन
रंग-संकेत	मंच-सज्जा, प्रवेश, गति, मौन, प्रकाश, ध्वनि आ वेशभूषासँ सम्बन्धित निर्देश।

२.५ रंगमंचक सर्जक : अभिनेता, परिचालक आ अभिकल्पक

लेखक रंगमंचक सर्जकसभमे अभिनेता, परिचालक आ अभिकल्पकक भूमिका अलग-अलग चिन्हित करैत छथि। नाटककारक पाठ निर्देशकक योजना आ अभिनेताक क्रियाक माध्यमसँ मंचपर उपस्थित होइत अछि।

नाट्यप्रस्तुति सामूहिक सर्जना थिक। निर्देशक एकर समग्र विन्यास करैत छथि, मुदा अभिनेता आ अन्य सहयोगी स्वयं रचनात्मक भागीदार रहैत छथि।

२.६ हमर मैथिली रंगमंच

मैथिली रंगमंचक सामाजिक-भाषिक आधार, रंगसाधन आ संस्थागत विकासक प्रश्न एहि प्रसंगमे उठैत अछि। स्थानीय भाषा आ जीवनक परिचय नाट्यप्रस्तुतिक विशिष्ट शक्ति बनि सकैत अछि।

मैथिली रंगमंचक सफलता लेल स्थानीय बोलीक स्वाभाविकता, प्रेक्षकक सांस्कृतिक समझ आ आधुनिक रंगप्रयोगक सन्तुलन आवश्यक अछि।

२.७ एकांकी : स्वरूप, परिभाषा आ वर्गीकरण

एक अंकमे सीमित नाटककें एकांकी कहि सकैत छी; मुदा एकर मूल गुण संकेन्द्रित नाटकीय क्रिया, सीमित पात्र, समय-संयम आ तीव्र प्रभाव अछि। लेखक एकांकीक प्रकार आ रचनात्मक विशेषताक चर्चा करैत छथि।

लघु होयब मात्र एकांकीक पर्याप्त कसौटी नहि। एकता, तनाव आ एक केन्द्रक दिस घटनाक गति एकांकीक नाटकीय शक्ति प्रदान करैत अछि।

२.८ आधुनिक एकांकी : तत्त्व आ विशेषता

अनुक्रमणिकामे कथानक, पात्र, संवाद, देश-काल, भाषा-शैली, उद्देश्य, गति आ रंग-संकेत अलग-अलग तत्त्वक रूपमे उल्लिखित अछि। लेखक एहि सभक उपयोगिता सम्यक् रूपसँ विवेचित करैत छथि।

एकांकीमे प्रत्येक संवाद, प्रवेश आ दृश्य-संकेतक कथ्यसँ सम्बन्ध होयबाक चाही; अनावश्यक विस्तार एकर प्रभाव कम करैत अछि।

२.९ एकांकीक आठ प्रमुख तत्त्व

२.१० प्रतिनिधि मैथिली रंग एकांकी : सम्पूर्ण शीर्षक-सूची

मूल अनुक्रमणिकामे निम्नलिखित एकांकीसभक स्वतंत्र चर्चा अछि। ई सम्पूर्ण सूची एहि समेकित अध्ययनमे सुरक्षित राखल गेल अछि; प्रत्येक कृतिक पूर्ण कथासार मूल एकांकीक स्वतंत्र पाठक बिना गढ़ल नहि गेल अछि।

२.१०.१ अयाची मिश्र

एहि एकांकीक नाम मिथिलाक विद्या, त्याग आ सांस्कृतिक स्मृतिक प्रसंग उपस्थित करैत अछि। एकर आलोचनामे ऐतिहासिक व्यक्तित्वक नाट्यरूप, संवादक अनुकूलता आ दृश्य-परिवेशक प्रश्न मुख्य मानल जा सकैत अछि।

२.१०.२ जय जन्मभूमि

एहि शीर्षकमे जन्मभूमिसँ भावात्मक सम्बन्ध आ देशप्रेमक स्वर स्पष्ट अछि। नाटकीय प्रभावक परीक्षणमे आदर्श-वचन आ पात्रक जीवित अनुभवक सामञ्जस्य आवश्यक मानल जाय।

२.१०.३ जीवन संघर्ष

जीवनक संघर्षमूलक परिस्थिति एहि शीर्षकक मुख्य संकेत थिक। पात्रक स्थितिकरण, निर्णायक मोड़ आ नाटकीय संकेन्द्रणक आधारपर एकर अध्ययन उपयोगी अछि।

२.१०.४ ब्रह्म स्थान

एहि रचनाक प्रसंगमे लोकविश्वास, सामाजिक व्यवहार आ परम्परागत मान्यतासँ जुड़ल प्रश्नक आलोचना उपयुक्त अछि। पात्रक आचरणकेँ कथावस्तुक वास्तविक साक्ष्यसँ जोड़ि पढ़ब आवश्यक अछि।

२.१०.५ हथुड़ा कुर्सी

ग्रामीण परिवेश, शिक्षाक अवस्था अथवा सामाजिक संबंधक संकेतक जाँच एहि नाट्यशीर्षकक आलोचनामे अपेक्षित अछि। दृश्य आ वस्तु-प्रयोगक नाटकीय अर्थ विशेष ध्यानाकर्षक भऽ सकैत अछि।

२.१०.६ मिथिलाक प्रतिनिधि

एहि शीर्षकमे प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावाक प्रश्न उपस्थित अछि। संवाद, विडम्बना आ पात्रक कथनी-करनीक अन्तर नाट्यालोचनाक सम्भावित आधार अछि।

२.१०.७ मुनरीक मोल

मूल कृतिक नाम ‘मुनरीक मोल’ मूल्य, मानवीय सम्बन्ध अथवा सामाजिक व्यवहारक प्रश्न उठबैत अछि। एकर कथावस्तुक विशिष्ट घटना बिना मूल पाठक प्रमाणक अनुमानसँ निर्धारित नहि कयल गेल अछि।

२.१०.८ मुनिक मतिभ्रम

पौराणिक अथवा मुनि-चरित्रक नव अर्थ-निर्माणक सम्भावना एहि शीर्षकमे अछि। नाटकीय पुनर्व्याख्या आ व्यंग्यक संसर्गक प्रमाण मूल पाठमे देखब आवश्यक अछि।

२.१०.९ छींक

‘छींक’ जेकाँ लघु घटना नाटकीय संकेत आ हास्य-विसंगतिक माध्यम भऽ सकैत अछि। एकर विशिष्ट चरित्रगत कथा मूल पाठक निरीक्षणपर निर्भर अछि।

२.१०.१० दुलारक भूख

‘दुलारक भूख’ शीर्षक स्नेहक अभाव आ पारिवारिक संवेदनाक दिशा सूचित करैत अछि। मानवीय सम्बन्ध, अभाव आ संवादक मार्मिकता एकर आलोचनामे उपयुक्त दृष्टि बनैत अछि।

२.१०.११ आइभोर

‘आइभोर’ शीर्षक नव समय, परिवर्तित अनुभव अथवा प्रातःकालक बिम्ब उपस्थित करैत अछि। कथानकक निश्चित अर्थ मूल नाटकक दृश्य-क्रमक आधारपर स्थापित होयबाक चाही।

२.१०.१२ ओकरा आडनक बारहमासा

‘ओकरा आडनक बारहमासा’ शीर्षक सामाजिक जीवनक दीर्घ कालानुभवक संकेत दैत अछि। समय-संरचना, व्यंग्य आ बदलैत परिवेशक विश्लेषण एकर आलोचनात्मक सम्भावना अछि।

२.१०.१३ ओ कागज केर बाघ छथि

एहि शीर्षकमे कागजक बाघक बिम्बसँ शक्ति आ वास्तविक सामर्थ्यक अन्तरक संकेत बुझायल जा सकैत अछि; मुदा मूल नाटकक नाटकीय कथ्यक पुष्टिक बिना एकरा पूर्ण कथासार नहि कहल जा सकैत अछि।

२.११ एकांकी नाटक आ रंगमंच : संबंध-सूत्र

एकांकीक संक्षिप्तता मंचनक दृष्टिसँ सुविधा प्रदान करैत अछि, मुदा तीव्र नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करबाक लेल संवादक सघनता, पात्रक क्रिया, दृश्य-गतिशीलता आ नेपथ्यक संयोजन आवश्यक छैक। लेखकक विवेचन साहित्यिक एकांकी आ मंचीय एकांकीक अन्तर स्पष्ट करबाक दिशा प्रदान करैत अछि।

एहि अध्यायक महत्त्व एकांकीक सिद्धान्त आ मैथिली उदाहरणकें एकत्र करबमे अछि। कथानक-समीक्षासँ आगाँ बढ़ि दृश्य-प्रस्तुति, अभिनयक सुविधा आ दर्शकीय प्रभावक पृथक् समीक्षा अपेक्षित अछि।

३. मैथिली नाट्यालोचना : प्रकृति आ प्रतिमान

ई अध्याय मैथिली नाट्यालोचनाक सैद्धान्तिक आधार स्पष्ट करैत अछि। प्राचीन भारतीय निकष, मध्ययुगीन चिन्तन, पाश्चात्य प्रतिमान आ मैथिली नाट्यसमालोचनाक प्रकृति—चारू पक्षक अन्तःसम्बन्धपर विचार कयल गेल अछि।

३.१ प्राचीन निकष

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र, रस, भाव, अभिनय, नाट्यवस्तु आ प्रेक्षकक अनुभव प्राचीन भारतीय नाट्यालोचनाक महत्त्वपूर्ण आधार अछि। एहि निकषमे नाटकक शास्त्रीय स्वरूपक संग प्रस्तुति-कला सेहो समाविष्ट अछि।

भारतीय आलोचनामे रसक प्रधानता मानैत सेहो अभिनय, स्थान, पात्र आ समयक मंचीय कार्यकें उपेक्षित नहि कयल जा सकैत अछि।

३.२ मध्ययुगीन नाट्यालोचन

मध्ययुगीन साहित्यशास्त्रीय परम्परा नाटकक रूप, रस, कथावस्तु, पात्रविधान आ कलात्मक उद्देश्यक विवेचनकें विकसित करैत अछि। लेखक एहि निरन्तरताकें नाट्यसमालोचनाक विकासक्रममे स्थान दैत छथि।

शास्त्रीय सूत्रक उपयोग रचनाक ऐतिहासिक स्वभावक अनुरूप करबाक चाही; प्रत्येक लोकाभिनय अथवा गीतप्रधान नाटक एकहि मापदण्डपर उपयुक्त नहि उतरि सकैत अछि।

३.३ नाट्यालोचनक पाश्चात्य प्रतिमान

पाश्चात्य नाट्यचिन्तनमे अनुकरण, क्रिया, संघर्ष, चरित्र, दृश्य-संरचना आ प्रेक्षक-अनुभवक विविध मूल्यांकन-पद्धति विकसित भेल अछि। लेखक एहि विचारकें मैथिली नाट्यालोचनसँ जोड़ि देखैत छथि।

भारतीय आ पाश्चात्य विचारमे केवल विरोध नहि, बरु बहुल कसौटीक सम्भावना छैक। एक दृष्टिसँ कथ्य, दोसर दृष्टिसँ अभिनय आ तेसर दृष्टिसँ सामाजिक अर्थ जाँचल जा सकैत अछि।

३.४ मैथिली नाट्यालोचनक प्रकृति

मैथिलीमे नाट्यकृतिक समीक्षा, पत्र-पत्रिका, मंचनसम्बन्धी विवेचन आ साहित्यिक विमर्श नाट्यालोचनाक आधार बनल अछि। लेखक एहि गतिविधिक स्वरूप आ सीमापर विचार करैत छथि।

लिखित नाटकक पुस्तक-समीक्षा आ वास्तविक मंचनक प्रदर्शन-समीक्षा बीच स्पष्ट अन्तर रहल चाही; पहिलमे पाठ प्रधान, दोसरमे अभिनय आ प्रस्तुतिक प्रमाण प्रधान होइत अछि।

३.५ मैथिली नाट्यालोचनक प्रतिमान

मूल ग्रन्थमे नाट्यसमालोचनक निकष निर्धारित करबाक प्रश्न उठायल गेल अछि। नाटककारक दृष्टि, संरचना, भाषा, संवाद, पात्र, दृश्य-विन्यास, अभिनय आ रंगप्रयोग समेकित मूल्यांकनक आवश्यक अवयव मानल जा सकैत अछि।

मैथिली नाट्यालोचनक स्वायत्तता लेल स्थानीय रंगप्रयोगक विशिष्टता आ नाट्यसिद्धान्तक तुलनात्मक विवेचन दुनू आवश्यक अछि।

तृतीय अध्यायक निष्कर्ष

नाटक एक प्रयोगमूलक कला थिक—एहि मूल अवधारणाकेँ आधार मानि नाट्यालोचनकेँ पाठ-केन्द्रित सीमासँ बाहर निकालबाक आवश्यकता अध्याय बारम्बार स्पष्ट करैत अछि। साहित्यिक संरचनाक सूक्ष्मता आ मंचीय प्रभावक संयुक्त अध्ययन मैथिली समालोचनक उपयोगी दिशा बनि सकैत अछि।

४. ऑपरेशन मैथिली लोक नाट्य

एहि संक्षिप्त अध्यायमे लोक शब्दक अर्थ आ मैथिली लोकनाट्यक वर्गीकरणक आधार प्रस्तुत अछि। लोकक सांस्कृतिक अर्थ, मौखिक परम्परा, समुदाय आ अभिनयक अन्तःसम्बन्ध एहि विवेचनक केन्द्रमे अछि।

४.१ ‘लोक’ शब्दक व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

मूल लेखमे ‘लोक’क धात्वर्थ, प्राचीन प्रयोग आ सामान्य जनसमुदायक अर्थक विवेचन अछि। लेखक लोककें समाजक व्यवहार, दर्शन, स्मृति आ सामूहिक अनुभवक सन्दर्भमे परिभाषित करबाक प्रयत्न करैत छथि।

‘लोक’कें केवल ‘गाम’ अथवा ‘अशिक्षित’क पर्याय मानब उचित नहि। लोक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संसार थिक, जे शास्त्रीय परम्परासँ संवाद सेहो करैत अछि।

४.२ लोकनाट्यक वर्गीकरण

लेखक धार्मिक, सामाजिक, अनुष्ठानिक, स्त्री-प्रधान आ हास्य-व्यंग्यात्मक प्रस्तुति जेकाँ विभिन्न लोकाभिनयक रूपक उल्लेख करैत छथि। लोककथा, गीत, नृत्य आ समुदाय आधारित प्रस्तुति एकर प्रमुख आधार अछि।

एक लोकनाट्यमे एकसाथ अनेक सामाजिक कार्य भऽ सकैत अछि—अनुष्ठान, स्मृति, हास्य, प्रतिरोध आ मनोरञ्जन। वर्गीकरणकें अतिरूढ़ नहि करबाक चाही।

४.३ मैथिली लोकाभिनयक सांस्कृतिक क्षेत्र

सामा-चकेबा, जट-जटिन, डोमकछ, सलहेस, लोरिक, विदापत आ कीर्तनिया जेकाँ परम्परासभ मिथिलाक बहुरंगी लोकाभिनयक स्मृति जगबैत अछि। एहि परम्परामे गीत आ संवादक सीमारेखा अनेक अवसरपर एक-दोसरमे समा जाइत अछि। कथासँ बेसी महत्त्व कतेको आयोजनमे सांस्कृतिक अवसर, सामूहिक सहभागिता आ परम्परागत अभिनय-पद्धतिक होइत अछि।

लोकाभिनयक दस्तावेजीकरणमे गीतक शब्द मात्र सुरक्षित राखब पर्याप्त नहि; स्थानीय अवसर, पात्रक वेश, भागीदारक भूमिका, दर्शकक सहभागिता आ प्रस्तुति-स्थान सेहो अंकित करब आवश्यक अछि।

५. महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्प

महेन्द्र मलंगियाक नाट्यप्रयोगक माध्यमसँ रंगशिल्पक सूक्ष्म विवेचन एहि अध्यायमे अछि। लेखक नाटककें पाठ-पुस्तकसँ आगाँ बढ़ि अभिनय, रंग-संकेत, दृश्य-सज्जा, समय, नेपथ्य आ ध्वनिक जीवन्त कलाक रूपमे देखैत छथि।

५.१ रंगशिल्प किंवा अभिनयत्व

नाट्यभाषाक सम्पूर्ण अर्थ केवल शब्दमे समाहित नहि रहैत अछि। मंचपर भाव, क्रिया, लय, स्थान आ दृश्य-संकेतक संग रचना नवीन रूप प्राप्त करैत अछि। मूल अध्याय रंगशिल्प आ अभिनयत्वक एहि अन्तर्सम्बन्धकें महत्त्व दैत अछि।

रंगशिल्प सजावटक नाम नहि; ई कथ्यकें दृश्य-श्रव्य रूप देबाक संरचनात्मक विधि थिक।

५.२ अभिनय

अभिनेता लिखित पात्रकें मंचपर जीवित उपस्थिति प्रदान करैत छथि। संवादक अर्थ पात्रक मनःस्थिति, देहभाषा आ दृश्यस्थितिक सहयोगसँ बदलि सकैत अछि।

सफल अभिनयमे शब्द, मौन आ क्रियाक अन्तःसंगति रहब आवश्यक अछि; केवल संवादक उच्चारण अभिनयक पूर्णता नहि।

५.३ रंगशिल्प

महेन्द्र मलंगियाक नाट्यकृतिमे रंगशिल्पक विभिन्न उपादानकें चिन्हित करैत लेखक द्रष्टव्य दृश्यनिर्देश आ अभिनय-संकेतक महत्त्व स्थापित करैत छथि।

पाठसँ मंचधरि संक्रमणक समय निर्देशकक स्वातन्त्र्य आ नाटककारक नाट्याभिप्रायक मध्यमे सर्जनात्मक सामञ्जस्य आवश्यक छैक।

५.४ कथानक लेल सहकारी सूत्र

कथानकक विकास संवादक संग दृश्यगत क्रिया, वस्तुक प्रयोग, विराम, ध्वनि आ संकेतसँ सेहो होइत अछि। लेखक एहि सहायक साधनक नाटकीय प्रयोजन देखबैत छथि।

कथानकक ‘कहब’ आ कथानकक ‘देखेब’ दूनू समान नहि; रंग-संकेत घटनाकेँ बिना अतिरिक्त विवरणक दृश्यमान बना सकैत अछि।

५.५ रंगमंचक सज्जाक लेल संकेत

मंचीय वस्तु, आँगन, कोठरी, दरबज्जा, बैठबाक स्थान आ अन्य सज्जा नाटकक सामाजिक संसारक चिन्ह बनैत अछि। सज्जाक चयन दृश्यभाव आ पात्रक गतिसँ जुड़ल रहैत अछि।

अनावश्यक सज्जा दर्शकक ध्यान भटका सकैत अछि; अर्थपूर्ण सीमित वस्तु कतेको काल अधिक समर्थ होइत अछि।

५.६ वेशभूषा आदिक संकेत

पात्रक वेश, रूप-सज्जा आ रूपान्तरणक संकेत कथानकक सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट करैत अछि। वेशभूषा आ देहाभिनय दुनूक संयुक्त प्रयोग अपेक्षित अछि।

वेशभूषासँ सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट करब सम्भव अछि, मुदा पात्रक व्यक्तित्वकेँ ओकर परिधानधरि सीमित नहि करबाक चाही।

५.७ अभिनय सम्बन्धी संकेत

प्रवेश, बैसब, उठब, देखब, मुड़ब, हँसब, कानब आ मौन रहबाक निर्देश रंग-संकेतक अन्तर्गत अबैत अछि। लेखकक विवेचनमे अभिनेता-संचालन आ कथ्यक अन्तर्संबन्ध प्रधान अछि।

अभिनयसंबन्धी संकेत नाटककारक सम्भावित मंचीय कल्पना दैत अछि; वास्तविक प्रस्तुति ओकर विवेकपूर्ण व्याख्या करैत अछि।

५.८ स्थान सम्बन्धी संकेत

दृश्य कोन स्थानपर घटैत अछि, ओकर आन्तरिक-बाह्य रूप, सामाजिक संकेत आ वस्तु-विन्यास कथावस्तुक अर्थ निर्माण करैत अछि।

स्थान केवल भौतिक पृष्ठभूमि नहि; कोनो आँगन अथवा सार्वजनिक चौक सेहो पात्रक सम्बन्ध आ सामाजिक मर्यादाक सूचक भऽ सकैत अछि।

५.९ समय सूचना

घटनाक पूर्वापर क्रम, दिन-राति, ऋतु, प्रतीक्षा अथवा कालान्तरक संकेत दर्शककें नाटकक समय-रचनासँ जोड़ैत अछि।

मंचीय समय आ कथा-संसारक समय अलग होइत अछि; कुशल संकेत कम समयमे दीर्घ घटनाक आभास दऽ सकैत अछि।

५.१० नेपथ्य लेल संकेत

नेपथ्यमे घटित घटना, आवाज, पदचाप, संगीत अथवा अदृश्य पात्रक सूचना दर्शकक कल्पनाकें सक्रिय करैत अछि।

जे घटना प्रत्यक्ष देखेब आवश्यक नहि, ओकर प्रभाव नेपथ्यसँ अधिक सशक्त भऽ सकैत अछि।

५.११ संगीत सम्बन्धी निर्देश

संगीत, ध्वनि आ लय नाटकक भावात्मक वातावरण निर्मित करैत अछि। लोकसंगीतक प्रयोग पात्रक क्षेत्रीय पृष्ठभूमि आ सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करबाक साधन बनि सकैत अछि।

नाटकमे गीतक प्रयोग कथ्यक अनुकूल होयबाक चाही; केवल विराम भरेबाक लेल गीत जोड़ब रंगगतिक् क्षति पहुँचाबि सकैत अछि।

५.१२ पर्दा सम्बन्धी संकेत

दृश्य-परिवर्तन, आन्तरिक परिवर्तन आ प्रस्तुति-विरामक प्रसंगमे पर्दाक उपयोग सम्बन्धी संकेत लेखकीय रंगचेतनाक सूचक अछि।

आधुनिक रंगप्रयोगमे प्रकाश, ध्वनि आ अभिनेताक गति पर्दाक स्थान लऽ सकैत अछि; मुदा मूल संकेतक उद्देश्य सुरक्षित रहल चाही।

५.१३ वर्जित बात समय संकेत

मूल अनुक्रमणिकामे एहि विशिष्ट शीर्षकक उल्लेख अछि। मंचपर प्रत्यक्ष नहि देखाओल जायबला घटना अथवा परोक्ष संकेतक नाटकीय उपयोग एहि प्रसंगमे विचारणीय अछि।

प्रत्यक्षता आ संकेतात्मकताक निर्णय कलात्मक, सामाजिक आ मंचीय प्रसंगपर निर्भर करैत अछि; कोनो सार्वभौम नियम पर्याप्त नहि।

पंचम अध्यायक निष्कर्ष

महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्पपर केन्द्रित अध्याय मैथिली नाट्यालोचनक कथावस्तु आ पात्रक सरलीकृत विवेचनसँ बाहर लऽ जाइत अछि। एतय नाटककार द्वारा निर्मित मंचीय सम्भावना स्वतन्त्र आलोचनात्मक विषय बनैत अछि।

६. महेन्द्र मलंगियाक रंगभाषा

रंगशिल्पक बाद लेखक रंगभाषाक विवेचन करैत छथि। रंगमंचपर भाषा केवल बोलल गेल शब्द नहि: अभिनेता, दर्शक, निर्देशक, शारीरिक मुद्रा, गति, लय, ध्वनि, बिम्ब आ प्रतीक सभ मिलि नाट्य-संप्रेषण बनबैत छथि।

६.१ रंगभाषाक विविध आयाम

मूल अनुक्रमणिकामे अभिनेता, दर्शक आ निर्देशककें रंगभाषाक विविध आयामक रूपमे राखल गेल अछि। अभिनेता भावकें दृश्य करैत छथि; दर्शक ओकर अर्थ ग्रहण करैत छथि; निर्देशक एकर सम्पूर्ण लय आ प्रस्तुति-संरचनाकें संयोजित करैत छथि।

एहि त्रिकोणक बीच निरन्तर कलात्मक संवाद छैक। रंगमंचीय भाषा शब्दक अक्षरार्थसँ बेसी बहुअर्थी आ स्थितिसापेक्ष होइत अछि।

६.२ अभिनेता (Actor)

रंगभाषाक प्रथम वाहक अभिनेता थिक। मुखमुद्रा, दृष्टि, चालि, श्वास, विराम, उच्चारण आ देहक स्थिति पात्रक मानसिक एवं सामाजिक अर्थ प्रकट करैत अछि।

अभिनेता द्वारा उच्चारित संवादक वास्तविक अर्थ ओकर परिस्थिति आ आन्तरिक प्रेरणासँ बनैत अछि। एके वाक्य भय, प्रेम अथवा व्यंग्यक भिन्न लहजामे भिन्न अर्थ प्रदान करैत अछि।

६.३ दर्शक (Audience)

दर्शक नाटकक अर्थनिर्माणमे सहभागी छथि। हास्य, मौन, सहानुभूति, असहमति अथवा प्रतीकक पहचान दर्शकक सांस्कृतिक अनुभवक माध्यमसँ होइत अछि।

मैथिली दर्शकक स्थानीय ज्ञान, बोलीक बोध आ लोकपरम्पराक परिचय प्रस्तुति-ग्राह्यताकें प्रभावित करैत अछि। रंगप्रयोग करैत एहि अनुभवकें समुचित सम्मान आवश्यक अछि।

६.४ निर्देशक (Director)

निर्देशक कथ्यक रंगमंचीय व्याख्या करैत छथि। दृश्य-विन्यास, पात्रक स्थितिकरण, वेशभूषा, प्रकाश, ध्वनि आ अभिनयक लयकेँ एक समेकित रूप देब हुनक कार्य थिक।

निर्देशकक कलात्मक स्वातन्त्र्य मूल नाटकक अर्थकेँ विस्तार दऽ सकैत अछि; मुदा मूल कथ्यकेँ बिना सर्जनात्मक कारण पूर्णतः बदलि देब प्रामाणिक प्रस्तुति नहि कहल जा सकैत अछि।

६.५ रंगभाषाक संलिष्टता : शारीरिक भाषा

देहभाषा दृश्यकलाक आधारभूत संकेत-व्यवस्था थिक। ठाढ़ होयबाक ढङ्ग, दूरी, मुखभाव, गर्दनक गति, हाथक संकेत आ मौन सभ कथाक अर्थ विकसित करैत अछि।

रंग-भाषा प्रायः अवाचिक तत्त्वसँ अधिक प्रभावकारी बनि सकैत अछि। विशेषतः संवादक अभावमे देहक प्रतिक्रिया कथ्यकेँ प्रखर बनबैत अछि।

६.६ लय (Rhythm)

संवादक क्रम, अभिनेता-दर्शकक प्रत्युत्तर, विराम, ध्वनि आ दृश्य-परिवर्तनक अनुकूल प्रवाह रंगमंचीय लयक निर्माण करैत अछि।

लयक अर्थ केवल ताल नहि; कथावस्तुक भाव-संवेग आ घटनाक व्याकुलता सेहो लयक अङ्ग अछि।

६.७ गति (Speed)

घटनाक अनुकूल शीघ्र अथवा मन्द परिवर्तन नाटकक प्रभावकेँ रूप दैत अछि। क्रियाक अनावश्यक विस्तार एकांकीमे विशेष हानि पहुँचा सकैत अछि।

नाटकीय गति आ शारीरिक तेजीसँ समानार्थक नहि; एक मौन दृश्य सेहो आन्तरिक तनावसँ तीव्र होय सकैत अछि।

६.८ प्रतीक, बिम्ब, ध्वनि, संकेतादि

रंगभाषामे प्रकाश, वस्तु, रंग, ध्वनि, प्रतीक, बिम्ब, नेपथ्य आ संकेत अप्रत्यक्ष अर्थ प्रेषित करैत अछि। एहि तत्त्वसभसँ नाट्यसंसारक अनेक स्तर उद्घाटित होइत अछि।

प्रतीकक प्रभावक जाँच कलाकारक मंशासँ मात्र नहि, दर्शकक वास्तविक ग्रहण-शक्तिसँ सेहो होयबाक चाही।

षष्ठ अध्यायक निष्कर्ष

रंगशिल्प आ रंगभाषा एक-दोसरक पूरक अछि। रंगशिल्प प्रस्तुति-व्यवस्थाक बोध उत्पन्न करैत अछि, जखन कि रंगभाषा एहि व्यवस्थासँ उत्पन्न संप्रेषण आ अर्थक प्रश्न उठबैत अछि। एहि दुनू अध्यायक संयुक्त अध्ययन मैथिली रंगमंचक आलोचनालेल नूतन दृष्टि प्रदान करैत अछि।

७. मैथिली रंगमंच आ कलकत्ता

एहि अध्यायमे मैथिली रंगमंचक प्रवासी केन्द्र कलकत्ताक रंगपरम्परा, संस्थागत गतिविधि आ नाट्य-प्रस्तुतिक विवरण समेटल अछि। भाषा-संरक्षण आ रंगकर्मक सम्बन्धकें बुझबाक दृष्टिसँ ई ऐतिहासिक सामग्री विशेष उपयोगी अछि।

७.१ रंगमंचक सुदीर्घ परम्परा

लेखक प्रथम रंगमंचक ऐतिहासिक परम्परा स्मरण करैत छथि, तकर बाद आधुनिक प्रस्तुति-विधान आ कलकत्ताक रंगकर्मक चर्चा प्रारम्भ होइत अछि।

कोनो क्षेत्रक रंगइतिहासक अध्ययन लेल ओकर व्यापक राष्ट्रीय नाट्यपरम्परा आ स्थानीय सामाजिक आधार दुनूक परिचय आवश्यक अछि।

७.२ आधुनिक रंगमंच : आकार-प्रकार

आधुनिक रंगमंचक भिन्न विन्यासक विवरण एहि अध्यायमे पुनः उपस्थित होइत अछि; ई कलकत्ताक वास्तविक नाट्य-प्रस्तुतिक तकनीकी सन्दर्भ तैयार करैत अछि।

मैथिली रंगसंस्थाक वास्तविक मंचनक विवरणकेँ रंगगृहक प्रकार, संसाधन आ दर्शकक उपस्थिति संग जोड़ल जाय तँ इतिहास अधिक जीवन्त होइत अछि।

७.३ मैथिली रंगमंच

क्रम	रंगमंचीय संस्था/मंच
1	अखिल भारतीय मिथिला संघ
2	मिथिला कला केन्द्र
3	मैथिली रंगमंच
4	कुर्मी क्षत्रिय छात्र-वृत्ति कोष
5	ऑल इंडिया मैथिल संघ
6	कर्ण गोष्ठी : जयंत लोक मंच
7	मिथिला सेवा संस्थान
8	‘मिथि’ यात्रिक
9	मिथिला विकास परिषद
10	वैदेही कला मंच
11	कोकिल मंच
12	झंकार
13	मिथिला सेवा समिति (बेलूर)
14	उदय पथ

प्रवासी मैथिल समुदायक साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे रंगमंच भाषिक एकता आ सामुदायिक आयोजनक महत्त्वपूर्ण माध्यम रहल अछि। कलकत्ता एहि प्रकारक मंचन लेल उल्लेखनीय केन्द्र बनल।

रंगकर्म साहित्यक प्रचारक अतिरिक्त सामाजिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक अस्मिताक निर्माण सेहो करैत अछि।

७.४ कलकत्ताक रंगमंच : प्रस्तुति आ प्रयोग

मूल अध्यायमे विभिन्न रंगप्रस्तुति, आयोजन आ नाट्यसंस्थाक योगदानक विवरण अछि। प्रदर्शनक इतिहास आ नाटकक मुद्रित इतिहास एके नहि होयबाक तथ्य एहि सामग्रीसँ स्पष्ट होइत अछि।

मंचनक कार्यक्रमपत्र, नाट्यसंस्थाक स्मारिका, कलाकार-सूची, समाचारपत्रक समीक्षा आ प्रदर्शनक चित्र/ध्वनि अभिलेख शोधक विश्वसनीय आधार अछि।

७.५ विभिन्न संस्था द्वारा नाट्य-प्रस्तुति : मूल अनुक्रमणिकाक सम्पूर्ण सूची

मूल अनुक्रमणिकामे निम्नलिखित चौदह संस्थागत/रंगसम्बन्धी नाम दर्ज अछि। नामक मूल रूप यथासम्भव सुरक्षित राखल गेल अछि।

अध्यायक मुद्रित पृष्ठ १९८ सँ आगाँ संस्थासभक प्रस्तुति-संबन्धी सारणी सेहो उपलब्ध अछि। संकलित नाटक, प्रस्तुति आ आयोजनक विवरण मैथिली रंगमंचक संस्थागत इतिहास तैयार करबाक लेल आधार-सामग्री प्रदान करैत अछि। एहि शोधात्मक संस्करणमे अस्पष्ट सारणी-पंक्तिक नाम, वर्ष अथवा मंचन-संख्या बिना विश्वसनीय पाठनक पुनरुत्पादित नहि कयल गेल अछि।

७.६ कलकत्ताक रंगमंच आ प्रवासी सांस्कृतिक अस्मिता

प्रवासी समाजमे मातृभाषाक मंचन दर्शककेँ अपन भाषा आ स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। सामूहिक प्रस्तुति गीत, बोली, सामाजिक व्यंग्य आ क्षेत्रीय व्यवहारक माध्यमसँ मैथिली सांस्कृतिक अनुभवकेँ जीवित बनबैत अछि। कलकत्ताक संस्थागत अवदानक अध्ययनक महत्त्व एहि व्यापक परिप्रेक्ष्यमे बुझल जा सकैत अछि।

एहि अध्यायक दस्तावेजी पक्ष नाट्येतिहासक लेल बहुमूल्य अछि। मुदा संस्थाक नाम, स्थापना-वर्ष, प्रत्येक नाटकक पहिल मंचन आ कलाकारक भूमिकाक स्वतन्त्र अभिलेखी सत्यापनसँ शोध अधिक सुदृढ़ होयत।

८. मैथिली लोक गीतक रिंग ऑपरेशन

एहि निबन्धमे लेखक ‘लोक’ आ ‘गीत’क अर्थसँ आरम्भ करैत मैथिली लोकगीतक विविधता, भावसम्पदा आ जीवनसँ ओकर सम्बन्धपर विचार करैत छथि। लेखमे मूल गीतक पंक्ति-उदाहरण सेहो प्रस्तुत अछि, जाहिसँ लोकगीतक आन्तरिक संवेदना व्यक्त होइत अछि।

८.१ ‘लोक’ आ ‘गीत’ शब्दक अर्थ

आरम्भमे वैदिक आ अन्य पारम्परिक सन्दर्भक सहयोगसँ ‘लोक’ शब्दक अर्थक विवेचन अछि। गीतकेँ सामूहिक मानव-अनुभवक लयात्मक अभिव्यक्तिक रूपमे राखल गेल अछि।

शब्दव्युत्पत्ति लोकगीतक सम्पूर्ण इतिहास नहि होइत अछि; वास्तविक लोकसामग्री, गायक-समुदाय आ अवसरक निरीक्षण सेहो अपेक्षित अछि।

८.२ मैथिली लोकगीत आ जीवन-संस्कार

लोकगीत जन्मसँ विवाह, उत्सव, श्रम, विरह, ऋतु आ पारिवारिक संस्कारधरि जीवनक विभिन्न स्थितिमे प्रयुक्त होइत अछि। लेखक गीत-पंक्तिक उदाहरणक माध्यमसँ विविध मनोभावक परिचय दैत छथि।

गीतक मूल पाठक संग गायन-अवसर, गायिका अथवा गायकक समाज, धुन आ स्थानीय भेद सुरक्षित राखब भावी अनुसंधान लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

८.३ दुःख, विरह आ स्त्री-संवेदना

अध्यायक मध्यभागमे करुणा आ दुःख-दरिद्र्यक चित्रणसँ युक्त लोकगीतक उदाहरण भेटैत अछि। सामाजिक कठिनाई, पारिवारिक अभाव आ मायिक स्नेह लोकगायनमे भावपूर्ण रूपसँ प्रकट होइत अछि।

लोकगीतमे स्त्री-अनुभव सामाजिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण स्रोत बनि सकैत अछि; ओकरा केवल अनुष्ठानिक मनोरञ्जन कहि उपेक्षित नहि करबाक चाही।

८.४ पर्व, संस्कार आ प्रकृतिक सौन्दर्य

अध्यायक उत्तरभागमे चैत्र, मलार, चौँचर, ससुरा, पराती, बरसात, नदी, वन-पाँतर, गाम-घर आ ऋतुसौन्दर्यसँ जुड़ल गीतानुभवक चर्चा देखाइत अछि। इहो लोकगीतक विषयविस्तारक एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि।

लोकगीतक ऋतु-वर्णन आ प्राकृतिक बिम्बकें स्थानीय पर्यावरण आ कृषि-जीवनक सन्दर्भमे पढ़ल जाय तँ ओकर सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट होइत अछि।

८.५ गीतक धार्मिक आ लौकिक स्वर

भक्ति, व्रत, संस्कार, हास्य, सामाजिक व्यंग्य आ सांसारिक प्रेम लोकगीतक अनेक स्वर अछि। एतय गीतक रूप केवल भक्ति-माधुर्य नहि, जीवनक बहुरूप अनुभवक वाहक बनैत अछि।

गीतक वर्गीकरण एकमात्र विषयक आधारपर कठोर नहि राखब चाही; एके गीतमे अनुष्ठान, प्रेम आ सामाजिक स्मृति एकसाथ उपस्थित रहि सकैत अछि।

अष्टम अध्यायक निष्कर्ष

मैथिली लोकगीतक ‘रिंग ऑपरेशन’ शीर्षकक एहि लेखमे लोकसांस्कृतिक जीवनक भीतर प्रवेश करबाक प्रवृत्ति अछि। मूल गीतांशसभक उपस्थितिसँ लेख केवल अमूर्त सिद्धान्तपर आश्रित नहि रहैत अछि। लोकगीतक वास्तविक अध्ययनमे पाठ, धुन, गायन-समुदाय आ अवसरक संयुक्त अभिलेखीकरण अनिवार्य देखाइत अछि।

९. मिथिलाक लोक संगीतक डीएनए टेस्ट

एहि निबन्धमे लेखक मिथिलाक संगीतपरम्पराक ऐतिहासिक मूल, लोकआधार, शास्त्रीय सम्बन्ध आ सांस्कृतिक निरन्तरताक प्रश्न उठबैत छथि। ‘डीएनए टेस्ट’ शीर्षक रूपकात्मक अछि—एकरा जैविक प्रयोगशालाक परीक्षणक अर्थमे नहि बुझबाक चाही।

९.१ मिथिलाक संगीतक बहुरूपता

अध्यायक आरम्भमे मिथिलाक संगीतकें कर्ण-कणमे व्याप्त लोक-वैदिक अङ्ग-प्रत्यङ्गरूपेँ वर्णित कयल गेल अछि। ‘संगीत’ शब्दक अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, लोकगाथा, लोकनाट्य आ लोकनृत्यक समेकित संसार उपस्थित अछि।

मिथिलाक संगीतपरम्पराक इतिहास लिखैत शास्त्रीय ग्रन्थक साक्ष्य आ मौखिक प्रदर्शनक साक्ष्य—दूनोंकें समान गम्भीरतासँ ग्रहण करब आवश्यक अछि।

९.२ लोकगीत आ मिथिलाक संगीत

मूल लेखमे लोकगीतकें मिथिलाक जनजीवनसँ जन्मसँ मृत्यु धरि बहैत सांगीतिक धारा कहि रेखांकित कयल गेल अछि। ग्रामीण जीवन, मौसम, संस्कार आ धार्मिक अनुष्ठान एकर जीवित आधार अछि।

लिखित धुनांकन, स्थलीय ध्वनिमुद्रण आ गायकक स्मृति एकत्र भेलापर लोकसंगीतक परिवर्तित रूपक तुलना सम्भव होइत अछि।

१.३ वैदिक आ शास्त्रीय प्रसंग

लेखक संगीतक गौरव, सांस्कृतिक महत्त्व आ शास्त्रीय पक्षकें प्राचीन ग्रन्थपरम्पराक सन्दर्भमे देखैत छथि। नाद, स्वर, लय आ रागक विवेचन मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक संग जोडल अछि।

ग्रन्थमे उल्लिखित प्राचीनता आ ऐतिहासिक निरन्तरताक दावा अलग-अलग प्रमाण माँगैत अछि; शास्त्रीय संकेतकें स्वतः समकालीन लोकधुनक सिद्ध वंशावली मानब ठीक नहि।

१.४ मिथिलाक संगीतकार आ साहित्यिक सन्दर्भ

मिथिलाक विद्या-संस्कृतिमे संगीतविचार आ गीत-साहित्यक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। विद्यापतिक पदावली, प्राचीन शास्त्रीय चिन्तन आ क्षेत्रीय गायनपरम्पराक परस्पर चर्चा एहि क्षेत्रक मुख्य अनुसन्धान-विषय अछि।

मैथिली पद-साहित्यक धुन, समयक संग परिवर्तन, प्रसार आ भिन्न क्षेत्रमे प्रयोगक इतिहास तयार करब भविष्यक शोधकें समृद्ध कऽ सकैत अछि।

१.५ लोक आ शास्त्रक अन्तःसम्बन्ध

मिथिलाक लोकसंगीत आ शास्त्रीय संगीतक बहुआयामी संवादमे स्वर, लय, प्रसंग, क्षेत्रीय शैली आ गायनपरम्परा विभिन्न स्तरपर अन्तर्क्रिया करैत अछि।

शास्त्रीय आ लोक परम्पराकें एक-दोसरक निम्न-उच्च रूप नहि, बरु ऐतिहासिक अन्तःक्रियामे विकसित भिन्न कला-पद्धतिक रूपमे देखब अधिक सन्तुलित दृष्टि अछि।

नवम अध्यायक निष्कर्ष

एहि लेखक मूल उपलब्धि मिथिलाक लोकसंगीतक व्यापक सांस्कृतिक महत्त्वपर बल देब अछि। संगीतपरम्पराक ऐतिहासिक वंशक्रमक जाँच लेल ग्रन्थसाक्ष्य, हस्तलिखित सामग्री, जीवित धुन, गायन-अवसर आ क्षेत्रीय अध्ययनक संयुक्त प्रयोग भावी अनुसन्धानक स्वाभाविक दिशा थिक।

परिशिष्ट (क). मिथिलाक लोक सांस्कृतिक शल्य-क्रिया

ई परिशिष्ट लोक आ संस्कृतिक अर्थ, सांस्कृतिक विकास आ मिथिलाक सामूहिक स्मृतिसँ सम्बन्धित अछि। मुख्य अध्यायसभमे उपस्थित लोकनाट्य, लोकगीत आ लोकसंगीतक सांस्कृतिक आधार एहिठाम अधिक व्यापक रूपेँ देखल जाइत अछि।

क.१ लोक आ संस्कृतिक अर्थ

शब्दक व्युत्पत्तिमूलक चर्चा करैत लेखक लोकसंस्कृतिक तत्वसभक परिचय दैत छथि। लोकपरम्परामे व्यवहार, विश्वास, गीत, नृत्य, पर्व, भाषा आ सामूहिक कला प्रवेश करैत अछि।

लोकसंस्कृति स्थिर प्रदर्शनी-वस्तु नहि; ई समयक संग बदलैत जीवित सामुदायिक अभ्यास थिक।

क.२ मिथिलाक लोकसांस्कृतिक बनावट

मिथिलाक भाषा, परिवार, संस्कार, उत्सव, धार्मिक आचरण, कलात्मक परम्परा आ सामुदायिक अनुभव मिलि एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक जगत रचैत अछि।

लोकसांस्कृतिक अध्ययनमे धार्मिक ग्रन्थ, मौखिक परम्परा, सामाजिक व्यवहार आ आधुनिक परिवर्तनक अलग-अलग साक्ष्य आवश्यक अछि।

क.३ नाट्यपरम्परासँ सम्बन्ध

लोकसंस्कृतिक विभिन्न रूप रंगमंचकँ गीत, पात्र, बोली, प्रतीक आ प्रस्तुति-शैली प्रदान करैत अछि। आधुनिक मैथिली रंगकर्म एहि मूल आधारसँ सर्जनात्मक ऊर्जा प्राप्त कऽ सकैत अछि।

परम्पराकँ मंचपर लबैत ओकर समुदाय-सम्बन्ध आ मूल प्रसंगक सम्मान करबाक चाही।

परिशिष्ट (ख). पावन मिथिला धाम

मूल अनुक्रमणिका एहि परिशिष्टकँ ‘डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मक लेल लिखित’ आलेख कहैत अछि। तँ एकर भाषा आ उद्देश्य ऐतिहासिक शोध-निबन्धसँ किछु भिन्न—अधिक परिचयात्मक, सांस्कृतिक आ दृश्य-प्रस्तुतिमुखी—अछि।

ख.१ मिथिलाक सांस्कृतिक परिचय

एहि आलेखमे मिथिलाक पौराणिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक आ सामाजिक प्रतिष्ठाक परिचय अछि। जनक-सीता परम्परा, विद्या, कला, भाषा आ धार्मिक स्थलादिक परस्पर सम्बन्ध उभरैत अछि।

डॉक्यूमेन्ट्रीक भाषामे सांस्कृतिक गौरवक स्वर स्वाभाविक अछि; मुदा ऐतिहासिक प्रमाण आ लोकविश्वासकँ अलग-अलग चिन्हित कयल जाय तँ दर्शक अधिक सुस्पष्ट बोध प्राप्त करैत छथि।

ख.२ विद्या, दर्शन आ साहित्य

मिथिलाक ज्ञानपरम्परा, विद्वान, साहित्यिक विकास आ मैथिलीभाषाक समृद्धिक सन्दर्भ उपस्थित अछि। एतय सांस्कृतिक इतिहासक अनेक सूत्र एकसाथ राखल गेल अछि।

एहि विषयपर विस्तृत इतिहास लिखबाक लेल विशिष्ट तिथि, कृति, अभिलेख आ पाण्डुलिपि-परम्पराक सम्यक् उद्धरण अपेक्षित अछि।

ख.३ मिथिलाक लोकजीवन आ कलात्मक उपलब्धि

संगीत, कला, पर्व, संस्कार आ सामाजिक अभ्यास मिथिलाक स्थानीय विशिष्टताकें दर्शाबैत अछि। डॉक्यूमेन्ट्री आलेख एहि विविध परम्पराकें दृश्य-माध्यमसँ संप्रेषित करबाक प्रयास करैत अछि।

दृश्यलेखन आ नाट्यलेखनमे साम्य छैक—दूनूमे केवल तथ्य नहि, बरु दृश्यक्रम, कथनलय आ प्रेक्षक-अनुभव निर्णायक बनैत अछि।

ख.४ समकालीन भाषा आ सांस्कृतिक अस्मिता

मैथिलीक प्रतिष्ठा, सामाजिक प्रयोग आ सांस्कृतिक संरक्षणक प्रसंग परिशिष्टक आधुनिक सन्दर्भकें जोड़ैत अछि।

भाषिक स्वाभिमानक समुचित विकास लेल शिक्षण, प्रकाशन, संचारमाध्यम आ सक्रिय साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाक सहकार्य आवश्यक अछि।

समेकित विवेचन. नाट्येतिहास, रंगसिद्धान्त आ लोकसंस्कृतिक पारस्परिक सम्बन्ध

मूल पोथीक नौ अध्याय परस्पर असम्बद्ध निबन्ध नहि, बरु मैथिली नाट्यजगतक विभिन्न आयामक अध्ययन अछि। एहि खण्डमे अध्यायसभकें एक संयुक्त आलोचनात्मक तर्कमे पढ़ल जा रहल अछि।

१. नाट्यइतिहासक बहुकेन्द्रीयता

प्राचीन मिथिला, मध्यकालीन मिथिला, नेपाल, आधुनिक मैथिली लेखन आ कलकत्ताक प्रवासी रंगमंच—एहि सभ केन्द्रक उल्लेखसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली नाट्यइतिहासकें एक भाषा-क्षेत्रक सीमित रैखिक कथा मानब अपर्याप्त अछि। कृतिक भाषा, प्रसारक क्षेत्र, संरक्षणक व्यवस्था आ मंचनक सांस्कृतिक स्थान अनेक बेर भिन्न रहैत अछि।

एहि आधारपर भविष्यक शोधमे प्रत्येक कालक लेल चार तरहक साक्ष्य संकलित होयबाक चाही: नाट्यग्रन्थ, पाण्डुलिपि अथवा मुद्रित संस्करण; प्रदर्शनसम्बन्धी प्रमाण; लेखक-समाजक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; आ भाषा-सांस्कृतिक सम्पर्क। एहि चतुर्विध साक्ष्यक बिना रचनाक प्राचीनता अथवा प्रभावक एकरेखीय दावा सावधानी माँगैत अछि।

२. नाटकक पाठ आ रंगप्रयोग

प्रथम अध्यायक इतिहास, द्वितीय अध्यायक एकांकी-चिन्तन आ तृतीय अध्यायक नाट्यालोचन एक संयुक्त प्रश्न उठबैत अछि: कृति जखन मंचपर पहुँचैत अछि, तँ ओकर पाठक अर्थ कोना बदलैत अछि? पाँचम आ छठम अध्याय एहि प्रश्नक व्यावहारिक उत्तर देबाक प्रयत्न करैत अछि। मंचीय सज्जा, अभिनेता, निर्देशक, गति, लय, प्रतीक आ दर्शकक सहयोगसँ लिखित रचना एक नवीन अनुभव बनैत अछि।

रंग-समालोचनक उपयुक्त पद्धतिमे नाटकक पाठ-समीक्षा तथा प्रदर्शन-समीक्षा दूनूकें समाविष्ट करबाक चाही। पाठक अध्ययनमे कथानक, पात्र, संवाद, भाषा आ संरचना प्रमुख रहत; मंचनक अध्ययनमे देहभाषा, ध्वनि, दृश्य-विन्यास, प्रकाश, लय आ दर्शकीय प्रतिक्रिया विचारणीय रहत।

३. एकांकी आ आधुनिक रंगप्रयोग

एकांकीक संरचनाने नाटकीय तनावक संकेन्द्रण महत्वपूर्ण अछि। मैथिली एकांकीक अनेक उदाहरण देखबैत अछि जे सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक आ समकालीन विषय छोट आकारमे सेहो प्रभावशाली होय सकैत अछि। मुदा संक्षिप्तता अपन आपमे गुण नहि—वस्तुक चयन, पात्रगत संघर्ष आ दृश्य-सम्पादन आवश्यक अछि।

एहि प्रकार द्वितीय अध्याय आ महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्पसम्बन्धी अध्याय मिलि एकांकीक व्यावहारिक आलोचनाकें समृद्ध करैत अछि। कोनो एकांकीक सफलताक प्रश्न—की ई पढ़बाक लेल प्रभावकारी अछि, की एकरा मंचपर समान प्रभावसँ देखाओल जा सकैत अछि—पृथक् परीक्षण माँगैत अछि।

४. लोकनाट्य, लोकगीत आ लोकसंगीत

चतुर्थ, अष्टम आ नवम अध्याय लोककलाक तीन निकट सम्बद्ध स्वरूप प्रस्तुत करैत अछि। लोकनाट्य सामूहिक अभिनयक क्षेत्र थिक, लोकगीत लयात्मक वाचिक स्मृतिक क्षेत्र, आ लोकसंगीत स्वर, ताल, धुन आ गायन-शैलीक व्यापक संसार। ई तीनू परम्परा अनेक अवसरपर परस्पर गुंफित रहैत अछि।

लोककलाक आधुनिक मंचनक समय ओकर अनुष्ठानिक आ सामुदायिक सन्दर्भकें ससम्मान समझब आवश्यक अछि। कतेको परम्पराक गीत यथासंभव मूल गायकक स्वरमे, स्थानीय भेद आ गायन-अवसरसहित अभिलेखित करब चाही।

५. प्रवासी रंगमंच आ भाषा-संरक्षण

कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि जे प्रवासी सांस्कृतिक संस्था मैथिली साहित्य आ रंगकर्मक विस्तारमे महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करैत अछि। रंगप्रयोग भाषिक सम्प्रेषणक संग सामूहिक पहिचानक उत्सव सेहो बनैत अछि। संस्था-सूची आ प्रस्तुति-सारणी एहि इतिहासक प्रारम्भिक आधार प्रदान करैत अछि।

भावी शोधमे प्रत्येक संस्थाक आरम्भ, कार्यावधि, प्रमुख कलाकार, मंचित नाटक, दर्शकीय आधार आ सामाजिक योगदानक दस्तावेजीकरण उपयोगी होयत। कलकत्ताक सामग्रीकें पटना, दरभंगा, मधुबनी आ अन्य केन्द्रक रंगइतिहासक संग तुलना कयल जाय तँ अधिक व्यापक निष्कर्ष प्राप्त होयत।

६. नाट्यालोचनक उपयुक्त समेकित प्रतिमान

मैथिली नाटकक मूल्यांकन लेल निम्न सात सूचक विशेष उपयोगी मानल जा सकैत अछि: (क) कथ्यक ऐतिहासिक-सामाजिक प्रामाणिकता; (ख) कथानकक नाटकीय संरचना; (ग) पात्रक जीवन्तता; (घ) संवादक मैथिली स्वाभाविकता; (ङ) रंग-संकेत आ मंचनीयता; (च) अभिनय, निर्देशन आ रंगभाषाक सम्भावना; (छ) दर्शकक सांस्कृतिक अनुभव।

ई सात सूचक सम्पादकीय प्रस्ताव अछि; मूल लेखकक शब्दशः निर्धारित सूची नहि। तथापि ई मूल पोथीक विभिन्न अध्यायमे उपस्थित विचारकेँ एक समेकित आलोचनात्मक पद्धतिमे व्यवस्थित करैत छथि।

७. मूल पोथीक उपलब्धि आ सीमा

पोथीक उपलब्धिमे विषयक व्यापकता, प्राचीनतासँ समकालीनताधरिक ऐतिहासिक क्रम, एकांकीक विशिष्ट उदाहरण, नाट्यालोचनक प्रतिमान, महेन्द्र मलंगियाक रंगभाषाक सूक्ष्म अध्ययन आ कलकत्ताक संस्थागत सामग्री मुख्य अछि। एहि अर्थमे ई कृति मैथिली रंगअध्ययनक एक महत्त्वपूर्ण आधारपाठ अछि।

तथापि एतय उपलब्ध सामग्रीक आधारपर प्रत्येक ऐतिहासिक तिथि अथवा प्रस्तुति-सम्बन्धी विवरणक स्वतन्त्र सत्यापन सम्पन्न भेल अछि, एहन दावा नहि कयल जा सकैत अछि। मूल ग्रन्थक सन्दर्भ-सूची, पाण्डुलिपि-साक्ष्य आ संस्थागत अभिलेखक पुनःजाँच व्यापक शोधक अगिला आवश्यक चरण रहत।

अनुसन्धानक परिणाम : निष्कर्ष, भावी प्रश्न आ आधार-सन्दर्भ

समेकित अध्ययनक अन्तिम भागमे मूल पोथीसँ उभरल दीर्घकालीन शोध-विषय, प्राथमिक स्रोतक सीमा आ विवेकपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत अछि।

मुख्य निष्कर्ष

मैथिली नाटकक इतिहास एकल भूगोल अथवा एकहि नाट्यरूप धरि सीमित नहि; मिथिला, नेपाल आ प्रवासी केन्द्रसभक संयुक्त अध्ययन आवश्यक अछि।

नाटकक लिखित पाठ आ रंगमंचीय प्रस्तुति अलग मुदा परस्पर पूरक कलात्मक प्रक्रिया अछि।

मैथिली एकांकीक अध्ययनमे साहित्यिक संकेन्द्रणक संग वास्तविक मंचनीयता देखब आवश्यक अछि।

महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्प आ रंगभाषाक विवेचन मैथिली नाट्यसमालोचनकेँ अभिनय आ प्रदर्शन-कला केन्द्रित बनबैत अछि।

लोकनाट्य, लोकगीत आ लोकसंगीत मैथिली रंगपरम्पराक सांस्कृतिक आधार अछि; हुनक संरक्षणक लेल सामुदायिक सन्दर्भ महत्वपूर्ण अछि।

कलकत्ताक नाट्यसंस्थासभ प्रवासी सांस्कृतिक इतिहासक एक महत्वपूर्ण क्षेत्र खोलैत अछि।

प्राचीन नाटकक रचनाकाल, स्रोतक भाषा आ वास्तविक मंचनक भिन्न-भिन्न प्रमाणकेँ पृथक् जाँचब शोधक अनिवार्य शर्त थिक।

भावी अनुसन्धानक सम्भावित प्रश्न

प्राचीन मैथिली नाटकक उपलब्ध पाण्डुलिपिसभमे कथानक, गीत आ संवादक कोन-कोन पाठभेद भेटैत अछि?

नेपालक दरबारी नाट्यकृति आ मिथिलाक स्थानीय नाट्यरचनाक भाषिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध कोना स्थापित कयल जा सकैत अछि?

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली नाटकमे सामाजिक परिवर्तनक प्रभाव वास्तविक मंचनक माध्यमसँ कोना व्यक्त भेल?

प्रमुख मैथिली एकांकीसभक रंगनिर्देशनक भिन्न प्रस्तुति पाठक अर्थमे केहन परिवर्तन आनैत अछि?

महेन्द्र मलंगियाक नाटकसभक विविध मंचनमे रंग-संकेत आ दर्शकीय प्रतिक्रियाक की अन्तर भेटैत अछि?

कलकत्ताक मैथिली संस्थासभक मंचन-अभिलेख कतेक उपलब्ध आ सत्यापनयोग्य अछि?

लोकनाट्य-गीतक मौखिक रूपान्तरण आधुनिक मञ्चीकरणसँ केना प्रभावित भेल अछि?

लोकगीतक धुन आ शास्त्रीय स्वर-संरचनाक बीच ऐतिहासिक सम्बन्धक प्रमाण कोन अछि?

अध्याय ५ • वीरेन्द्र मल्लिक साहित्य

प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति

नौ अध्यायक विमर्श • राधा-कृष्ण, रस, शृङ्गार, लोकचेतना आ प्रभाव

ग्रन्थक रचना-विन्यास आ मूल प्रश्न

एहि ग्रन्थक केन्द्रक प्रश्न ई अछि जे विद्यापतिक पदमे प्रेम आ सौन्दर्य किनका-किनका रूपमे अभिव्यक्त होइत अछि, आ ओकर भाषा, रस, नायिका-विधान, लोकजीवन आ साहित्यिक परम्परासँ की सम्बन्ध बनैत अछि। पहिल दू अध्याय अवधारणात्मक आ मनोवैज्ञानिक भूमि बनबैत अछि; तेसर अध्याय राधा-कृष्णक आलम्बन विवेचित करैत अछि; चारिमसँ छठम अध्याय विद्यापतिक प्रेम-सौन्दर्यक काव्यरचना आ शृङ्गार पर केन्द्रित अछि; सातम अध्याय लोक-संस्कृतिक प्रश्न उठबैत अछि; आठम प्रभाव-अध्ययन करैत अछि; नवम उपसंहार अछि।

एहि क्रमक सबल पक्ष विषयक बहुस्तरीयता अछि। सम्भावित दुर्बलता ई जे प्रेमक सामान्य तत्त्वज्ञान सँ पद-विशेष धरि जाएबामे प्रमाणक स्तर बदलैत रहैत अछि। दार्शनिक वाक्यांश मात्रसँ कोनो पदक अर्थ प्रमाणित नहि भऽ सकैत अछि; प्रत्येक निष्कर्ष लेल वक्ता, प्रसङ्ग, सम्बोधन, प्रतीक, छन्द, भाव-व्यञ्जना आ पाठान्तर देखब आवश्यक अछि।

प्रथम अध्याय : प्रेम आ सौन्दर्यक स्वरूप (पृ० ३-१०६)

प्रेमक अर्थ, व्युत्पत्ति आ स्वरूप

ग्रन्थ आरम्भमे प्रेमक व्युत्पत्ति, शब्दार्थ, परिभाषा, मूलस्वरूप, सामान्य लक्षण आ गुण पर विचार करैत अछि। एहि विभाजनसँ स्पष्ट होइत अछि जे ‘प्रेम’ मात्र भावोच्छ्वास नहि, विषय, आश्रय, सम्बन्ध आ मूल्यक एक व्यापक भावात्मक विन्यास अछि। साहित्यिक अर्थमे प्रेमक

अनुभूति तथा ओकर काव्यात्मक अभिव्यक्ति अलग-अलग स्तर अछि; एहि दू स्तरकेँ गड़-मड़ कएलासँ पदावलीक सूक्ष्मता ओझराइत अछि।

प्रेमक भेद

अनुक्रमणिकामे भक्ति, प्रणय अथवा दाम्पत्य, वात्सल्य, प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम, मानव-प्रेम, कौटुम्बिक प्रेम, मैत्री, श्रद्धा, सेव्य-सेवक सम्बन्ध तथा सूक्ष्म आ स्थूलक प्रति प्रेमक चर्चा अछि। एहि वर्गीकरणक लाभ ई जे विद्यापतिक पदसभकेँ केवल देह-आकर्षण तक सीमित करबाक आवश्यकता नहि रहैत अछि। तथापि प्रत्येक प्रेम-प्रकारक प्रमाण अलग-अलग पद, प्रसंग आ भाषिक चिह्नसँ स्थापित होएबाक चाही।

सौन्दर्यक दार्शनिक आधार

ग्रन्थ सौन्दर्यक व्युत्पत्ति आ परिभाषासँ वस्तुपरक/वैज्ञानिक तथा आत्मपरक दृष्टिक अन्तर चिन्हैत अछि। पाश्चात्य आ भारतीय धारणाक संग समन्वयवादी पद्धतिक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि। सौन्दर्य केवल देखल वस्तुमे अवस्थित अछि अथवा दर्शकक अनुभूतिमे— एहि प्रश्नक बीच काव्य तेसर धरातल खोलैत अछि: भाषिक रूपान्तरण।

मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक आ रूपगत सौन्दर्य

सौन्दर्यक सामान्य विशेषता, उदात्त आ कुरूपक भेद, मानवीय तथा प्राकृतिक सौन्दर्य, स्त्री-पुरुष-सौन्दर्य, वस्तुगत एवं कलागत सौन्दर्य ग्रन्थक मुख्य पड़ाव अछि। ‘उदात्त’ आ ‘कुरूप’केँ सौन्दर्यक विलोम मानि छोड़ि देब पर्याप्त नहि; काव्यक भीतर विषमता, वेदना आ विरह सेहो सौन्दर्य-रस उत्पन्न करैत अछि।

प्रकृति-वर्णनक सूक्ष्म कोटि

आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण, अलङ्कार, प्रतीक, रूप-विस्तार, गतिविधि, वर्ण, नाद, गन्ध आ स्पर्श—ई वर्ग सभ साहित्यिक प्रकृति-विवेचनक समृद्ध पद्धति प्रस्तुत करैत अछि।

विद्यापतिक पदावलीमे मौसम आ परिवेशकेँ केवल पृष्ठभूमि नहि, प्रेम-अनुभवक सक्रिय संवाहकक रूपमे पढ़बाक आधार एतय बनैत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

प्रेमकेँ व्युत्पत्ति, संवेदना, सामाजिक सम्बन्ध आ काव्य-भावक स्तर पर रखबाक लाभ व्यापक अवधारणात्मक क्षेत्र अछि। मुदा ई सभ अर्थ परस्पर पर्याय नहि। स्नेह, अनुराग, रति, भक्ति आ करुणा जँ एक्के “प्रेम” श्रेणीमे लेल जाए, तऽ साहित्यिक विशिष्टता अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। विद्वानक लेल आवश्यक अछि जे प्रत्येक पदमे सम्बन्धक स्वरूप, इच्छा, विरह, समर्पण आ अधिकारबोधक अनुपात अलग चिन्हल जाए।

सौन्दर्यक वस्तुगत आ आत्मगत सिद्धान्तक द्वन्द्व कविता भीतर तेसर रूप पबैत अछि: रचनागत सौन्दर्य। वर्णित वस्तु सुन्दर अछि, ई निष्कर्ष मात्र नहि; उपमा, ध्वनि, लय आ दृष्टिकोण ओकर सौन्दर्यक निर्माण करैत अछि। प्रकृतिक रंग-गन्ध-स्पर्शक सूची तखन सार्थक अछि जखन ओ पदक भावगत गतिसँ जोड़ल जाए।

ई अध्याय ग्रन्थक परिभाषात्मक आधार दैत अछि, मुदा सामान्य दर्शन आ विद्यापति-पदक प्रत्यक्ष अन्तःपाठक बीच स्पष्ट सेतु आवश्यक अछि।

प्रेमक विविध सम्बन्ध आ काव्यगत अर्थ

ग्रन्थ प्रेमक शब्दार्थसँ आरम्भ कऽ मानवीय सम्बन्धक अनेक कोटि उपस्थित करैत अछि। वात्सल्यक लक्ष्य पालन-पोषण आ संरक्षण होइछ; दाम्पत्य अथवा प्रणयमे पारस्परिक आकर्षण आ स्वीकारक प्रश्न प्रधान भऽ सकैछ; मैत्रीमे समता, विश्वास आ आत्मीयता; श्रद्धामे मूल्यक स्वीकृति आ सेवक-सेव्य सम्बन्धमे असमान भूमिकाक अनुभव रहैछ। ई सभ अर्थक परस्पर साम्य भावात्मक निकटता अछि, मुदा साहित्यिक कार्यभेद भिन्न अछि। विद्यापतिक प्रणय-पदक विवेचनमे एहि वर्गक केवल गणना नहि, प्रसङ्गानुसार अर्थ-निर्णय आवश्यक अछि। कुनै पदमे अनुराग आत्मसमर्पणक रूप लैत अछि तऽ दोसरा पदमे मान आ

अस्वीकार प्रेमक असमान सम्बन्धकें उधारि सकैछ। एक्के शब्द 'प्रेम' भाव-वृत्तिक समूचा इतिहास नहि कहैछ।

सौन्दर्यक बोध आ काव्यरचना

वस्तुगत सौन्दर्य-विचार ई मानैत अछि जे रूप-रङ्ग, अनुपात अथवा संरचनामे आकर्षणक गुण अछि। आत्मगत व्याख्यामे अनुभवकर्ता ओहि आकर्षणकें अनुभूतिक आधार पर रचैत अछि। मुदा कविता पढ़ैत समय तेसर घटक अनिवार्य भऽ जाइछ—भाषा। उपमा, समानान्तरता, विराम, पुनरुक्ति, पदान्त ध्वनि आ गेयता बिना वर्णित दृश्यक साहित्यिक रूप पूरा नहि होइछ। सौन्दर्य कविता बाहर पहलेसँ ठाढ़ वस्तु नहि, कविता भीतर संवेदनाक विन्यास सेहो अछि। एहि बातकें मनमे रखि प्रकृति-वर्णनक रंग-नाद-गन्ध-स्पर्शक उपशीर्षक सभकें इन्द्रियसम्बन्धी क्रमक रूपमे नहि, कथ्यक संगठनक रूपमे देखल जाएबाक चाही।

उदात्त, कुरूप आ मूल्य-निर्णय

ग्रन्थक प्रथम अध्याय सौन्दर्यक प्रसङ्गमे उदात्त आ कुरूपक चर्चा करैत अछि। एहि बिन्दु पर विश्लेषणक सूक्ष्म प्रश्न ई अछि जे सौन्दर्य आ रमणीयता सर्वदा समान नहि। भय, विस्मय अथवा असामान्यता सेहो कलाक माध्यमसँ सौन्दर्यानुभव उत्पन्न कऽ सकैछ। ताहि प्रकार 'कुरूप' केवळ सौन्दर्यहीन वस्तु नहि, कोनो कलात्मक विरोध वा विडम्बनाक साधन बनि सकैछ। विद्यापतिक कविता भीतर ई सिद्धान्त लागू करबाक लेल विशेष पदक वास्तविक शब्दरचना देखब पड़त; सिद्धान्तक सामान्य उपस्थितिसँ पदक भाव-प्रभाव स्वतः प्रमाणित नहि होइछ।

द्वितीय अध्याय : प्रेम आ सौन्दर्यक मनोवैज्ञानिक अध्ययन (पृ० १०७-१४४)

मानवक प्रेमक प्रति आकर्षण

एहि अध्यायमे काम, सेक्स आ प्रेमक भेद, प्रेमक मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक व्याख्या, तथा देह-मन-आत्माक तादात्म्य उल्लेखित अछि। मनोवैज्ञानिक विवेचनक मुख्य सावधानी ई जे जैविक प्रेरणा, सामाजिक मर्यादा आ काव्यमय भावात्मकता तीनूकेँ एक्के मानदण्डसँ नहि नापल जाय।

प्रेम आ सामाजिक सन्दर्भ

प्रेम-सम्बन्धमे निकटता, इच्छा, प्रतीक्षा, निषेध आ मर्यादाक परस्पर विरोधी दबाव रहैत अछि। ई दृष्टि विद्यापतिक मान, अभिसार, मिलन आ विरह-स्थितिक अध्ययनमे उपयोगी अछि। मनोवैज्ञानिक श्रेणीकेँ ऐतिहासिक मैथिली समाज पर जसक तस आरोपित करबाक बदला पदक भाषिक साक्ष्यसँ जोड़ब अपेक्षित अछि।

सौन्दर्यप्रियता आ कला

मानवक सौन्दर्यप्रियता, कला आ सौन्दर्य, साहित्य आ सौन्दर्य, अभिव्यक्ति-शैलीमे सौन्दर्यक उद्भावना, प्रकृतिक प्रति आत्मीयता आ संवेदनशीलता एहि अध्यायक दोसर महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि। प्राकृतिक वस्तुक प्रति स्नेह आ तकर काव्यात्मक रूपांकनमे अन्तर मानलासँ सौन्दर्य-अध्ययन अधिक सूक्ष्म होइत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

मानवीय प्रेमक जैविक, मानसिक आ सामाजिक पक्षक पृथक्करण उपयोगी अछि। मुदा मध्ययुगीन पदक पात्र आधुनिक मनोविज्ञानक “केस-स्टडी” नहि छथि; ओ गीतक रचित वक्ता आ संवादक संरचना छथि। ताहि कारणेँ मान अथवा अभिसारक अर्थ निकालैत काल

पात्रक स्वभावक अनुमानसँ पहिने भाषिक क्रिया देखल जाए: के कहैत अछि, ककरासँ कहैत अछि, की गोपन करैत अछि?

प्रतीक्षा, मिलनक आकांक्षा, ईर्ष्या, ग्लानि आ विरह भावनामात्र नहि, गीतक कालगठन सेहो करैत अछि। “आइ”, “काल्हि”, “राति”, ऋतु-परिवर्तन आदि समयचिह्न भावक तापमान बदलैत अछि। एहि स्तर पर मनोविश्लेषणकेँ पदक संरचनात्मक विश्लेषणसँ जोड़ला पर अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष निकलत।

स्त्रीपात्रक अनुभवकेँ सदैव पुरुष-दृष्टिक वस्तु बनाओल जाइत अछि अथवा ओकर स्वरमे स्वाधीन प्रतिवाद आ इच्छा सेहो प्रकट होइत अछि? एहि प्रश्नसँ अध्यायक व्याख्या समृद्ध होइत अछि।

काम, आकर्षण आ प्रेमक अन्तर

कामना शरीरक आकांक्षा, प्रेम सम्बन्धक दीर्घकालिक अर्थ आ सौन्दर्यबोध प्रतीति सम्बन्धी अनुभवक रूपमे अलग-अलग विवेचित भऽ सकैत अछि। मुदा वास्तविक गीतमे ई स्तर मिश्रित रहैछ। मनोवैज्ञानिक विमर्शक सफलता ई मिश्रण बुझबामे अछि, नहि कि प्रत्येक भावकेँ पहिले सँ निश्चित नाम देबामे। मिलनक आकांक्षा कखनो सामाजिक निषेधक कारण तीव्र बनैत अछि, कखनो आत्मसम्मान वा मानक कारण रोकायल रहैत अछि। एहिमे पात्रक निजी इच्छा आ सामाजिक विधानक तनाव भिन्न पाठक दृष्टिमे भिन्न अर्थ उत्पन्न करि सकैत अछि।

गीतक वक्ता आ मानसिक अवस्था

काव्यगत ‘हम’ आ ऐतिहासिक कविक ‘हम’ एक नहि। पात्रक उलाहना, विरहिणीक पुकार अथवा सखीक परामर्श पढ़बाक समय साहित्यिक वक्ता चिन्हल जाए। दोसर व्यक्तिक भाषणकेँ सीधा कविक व्यक्तिगत अनुभव मानि लेलासँ मनोवैज्ञानिक अध्ययन भ्रमित होएत। गीतक कथनक भीतर प्रश्नवाचकता, सम्बोधन, निषेध, आश्वासन, आग्रह आ विरामक विशिष्ट काज होइछ। एहि भाषिक संकेतक अध्ययन बिना पात्रक ‘चरित्र’ पर स्थिर टिप्पणी देब जोखिमपूर्ण अछि।

इच्छा आ सामाजिक विधान

मनोवैज्ञानिक अध्यायसँ समाज-समीक्षाक सेतु बनैत अछि। इच्छाक स्वतन्त्रता विवाह, प्रतिष्ठा, परिवार, लोकलाज आ लिङ्गगत मर्यादासँ प्रभावित होइछ। ताहि कारणेँ प्रेमक तीव्रता केवल व्यक्तिक अन्तर्मनक उपज मानब अपर्याप्त अछि। तथापि कविता द्वारा चित्रित लोकलाजक अर्थ ऐतिहासिक समाजक सम्पूर्ण नियम-पुस्तिका नहि। साहित्य सामाजिक अनुभवक सांकेतिक पुनर्रचना करैत अछि। सामाजिक यथार्थ आ साहित्यिक रूढ़िक बीच भेद राखि मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय बनाओल जा सकैछ।

तृतीय अध्याय : राधाकृष्णवाद आ विद्यापतिक राधा-कृष्ण (पृ० १४५-१९३)

कृष्णक स्वरूप-विकास

अनुक्रमणिकामे वैदिक विष्णु, पौराणिक विष्णु आ कृष्णावतार, भागवत आ ब्रह्मवैवर्तपुराण, महाभारत आ अन्य पुराण, आभीरक वासुदेव, कृष्णक दार्शनिक स्वरूप एवं आचार्य परम्पराक विवेचन अछि। एहि स्रोत-परम्पराक विवेचन विद्यापतिक काव्य-नायकक विविध आयामक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

राधाक रूपान्तरण

राधाक ऐतिहासिकता, ज्योतिष-विषयक व्याख्या, शृङ्गारिक रूप, निम्बार्क-विष्णुस्वामी परम्परा आ ब्रह्मवैवर्तपुराणमे दार्शनिक प्रतिष्ठाक प्रसंग उठाओल गेल अछि। एहि दावासभकेँ अलग-अलग काल आ पाठक प्रमाणक संग परखब चाही; धार्मिक आख्यान आ ऐतिहासिक तथ्य एकरूप नहि अछि।

विद्यापतिक कृष्ण

कृष्णक पौराणिक संकेत, यौवन-सौन्दर्यक भोक्ता, बहुवल्लभ, परकीय प्रेमी आ इष्टदेवक रूप ग्रन्थक उपविषय अछि। एतय रसिक नायक आ आराध्य देवता दू भिन्न स्तर पर एक्के व्यक्तित्वमे सहअस्तित्व रखैत छथि।

विद्यापतिक राधा

राधा रूपाधिकारिणी, सुषमाशालिनी, रूपलोभी, लज्जालु, मुग्धा, रस-प्रेरिका आ चिर-विरहिणीक रूपमे विवेचित छथि। ‘भौतिकतासँ स्वर्गारोहण’क सूत्रक अर्थ स्त्री-पात्रक देहात्मक अनुभवकेँ नकारब नहि, ओकर भावात्मक रूपान्तरकेँ देखब सेहो भऽ सकैत अछि।

पाठकीय आलोचनात्मक प्रश्न

राधा-कृष्णक प्रेमकेँ भक्तिमात्र वा लौकिक प्रेममात्र घोषित करब पाठक बहुवाचकता घटबैत अछि। नायिका-स्वर, सखी-संवाद, विरह-वाक्य आ दैवी संकेतक तुलनात्मक परीक्षणसँ अध्याय अधिक ठोस बनैत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

राधा-कृष्ण सम्बन्धकेँ एकमात्र धार्मिक उपमा अथवा एकमात्र सांसारिक प्रणय मानि लेब अर्थक बहुलता घटबैत अछि। काव्यक “राधा” विभिन्न पदमे मानिनी, विरहिणी, प्रगल्भा वा दुविधाग्रस्त वक्ताक रूपमे आबि सकैत छथि। “कृष्ण” सेहो एक स्थिर पुरुषप्रतिमा नहि, प्रियतम, अनुपस्थित आलम्बन वा सांस्कृतिक चिह्नक रूप बदलि सकैत छथि।

सखी-संवाद एहि काव्यविश्वक विशिष्ट मध्यस्थता अछि। सखी सूचना दैत अछि, समझबैत अछि, मिलनक सम्भावना रचैत अछि आ कखनो भावक व्याख्याकार बनैत अछि। तँ केवल राधा-कृष्णक द्विपक्षीय सम्बन्ध देखला सँ तेसर आवाजक काव्यात्मक भूमिका छुटि जाइत अछि।

पुराण, भक्तिधारा आ लौकिक शृङ्गारक सामग्रीक तुलनामे कालक्रम आ पाठ-प्रमाण आवश्यक अछि। प्रभावक दाबी आ सामान्य साम्यक बीच अन्तर राखब चाही।

ऐतिहासिक स्रोत आ काव्यगत पुनर्रचना

राधा-कृष्ण विषयमे पौराणिक परम्परा, भक्तिक व्याख्या आ लौकिक प्रेमगीत एकमात्र पाठ-परम्परा नहि। ग्रन्थक अनुक्रमणिकामे विष्णु, कृष्णावतार, विभिन्न पुराण आ आचार्य-परम्पराक चर्चा देखाइछ। एहि विशाल सामग्रीक आलोचनात्मक प्रयोजन निर्धारित कएल जाय: कोन स्रोत पात्रक दैविक प्रतिष्ठा समझबैत अछि, कोन स्रोत प्रणयक कथानक, आ कोन स्रोत कविता भीतर भावानुभवक रूप? समान नामक उपस्थिति स्वतः प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रभावक प्रमाण नहि। साहित्यिक पुनर्रचना परम्परासँ सामग्री ग्रहण कऽ ओकर अर्थ बदलि सकैछ।

राधाक कथन आ दृष्टिकेन्द्र

राधाकेँ नायिकाभेदक श्रेणीमे राखब सुगम अछि, मुदा ओहि श्रेणीसँ ओकर पूर्ण अनुभव व्याख्यायित नहि होइछ। मान, संकोच आ तीव्र आकर्षणक काव्यमे राधा कखनो देखल गेल पात्र होइछ, कखनो स्वयं बोलैत स्वर। जखन दृश्य बाहरक वर्णनाक माध्यमसँ बनैत अछि, दृष्टिकेन्द्र आ आन्तरिक अनुभवक स्तर अलग रहैत अछि। स्त्रीस्वरक विवेचनमे ई अन्तर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। नायिकाक सौन्दर्यक मूल्याङ्कनक संग ओकर निर्णय-क्षमता आ भाषिक उपस्थिति पर प्रश्न उठेबा सँ पाठ समृद्ध होइछ।

सखीक मध्यस्थता

सखी केवल दूतिका नहि। ओ परिस्थितिक पाठक, दुइ पात्रक भावसम्बन्धक व्याख्याकार आ कखनो सामाजिक विवेकक प्रतिनिधि बनैछ। संवादमे सखीक आगमनसँ निजता आ सार्वजनिकताक सीमा बदलि जाइछ: गुप्त इच्छा सामूहिक भाषा पबैत अछि। ई संरचना प्रेमगीतकेँ एकल आत्मस्वीकारसँ अलग करैत अछि। कवितामे सम्बोधनक स्थल बदललाक संग भावक अर्थ केना बदलैछ, ई तृतीय अध्यायक पाठ-आधारित अनुसन्धान लेल उपयोगी कसौटी अछि।

चतुर्थ अध्याय : प्रेम आ सौन्दर्य-विधायक विद्यापति (पृ० १९३-३०२)

भारतीय प्रेम-परम्परा आ विद्यापति

भारतीय काव्यमे प्रेमभावनाक परम्परा तथा विद्यापतिक स्थान एहि अध्यायक आरम्भिक विमर्श अछि। संस्कृत काव्यशास्त्र, गीतिकाव्य, राधा-कृष्ण आख्यान आ मैथिली लोकानुभवक अन्तःसम्बन्धक पृष्ठभूमिमे विद्यापतिक विशिष्टता खोजल जा सकैत अछि।

विद्यापतिक काव्यमे प्रेमक विविध रूप

अनुक्रमणिका मानवीय प्रेम, प्रेम-विकास, रूपलिप्सा, पूर्वराम, कामप्रधान विरह, परकीय प्रेम, कृष्णक बहुगोपी-रमण आ सामान्य सामाजिक परकीय प्रेमक भेद प्रस्तुत करैत अछि। एहि प्रसंगमे काव्य-पात्रक अनुभूतिक स्तर पर नैतिक निर्णय थोपबाक बदला कथ्यक आन्तरिक मनोभाव आ समय-सन्दर्भ पढ़ब अधिक फलदायी अछि।

नारी-सौन्दर्यक देहात्मक विन्यास

स्त्री-सौन्दर्यमे नेत्र, कटाक्ष, पयोधर, मुख, केश, नितम्ब, रोमावली, अधर, दाँत, हास, कटि, नाभि आ त्रिवलीक विश्लेषण ग्रन्थमे सूचिबद्ध अछि। अङ्ग-उल्लेख केवल सूची नहि; दृष्टि-गति, अनुभूति, अलङ्कार आ रस-स्थितिक रूपमे एकर भूमिका अलग कऽ बुझबाक चाही।

यौवन आ हाव-भाव

हाव, लीला, विलास, विच्छित्ति, किलकिञ्चित, ललित, मोट्टायित, विव्वोक, विहृत, कुट्टमित आ हेला आदि शृङ्गार-शास्त्रीय कोटिक उल्लेख अछि। आधुनिक पाठक लेल ई शास्त्रीय शब्दावली सामाजिक व्यवहारक स्थिर वर्गीकरण नहि, काव्यमे भावना आ अभिनयक रूपविधान अछि।

नारीक मानसिक सौन्दर्य

संयोगमे शालीनता आ हास-परिहास; वियोगमे पूर्वराग, मान, ईर्ष्यामान आ प्रवास; अपरूप, चिरनूतन, सहज, पारस, सूक्ष्म आ चिरन्तन सौन्दर्य—ई उपविषय सौन्दर्यकेँ शारीरिकतासँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि।

पुरुष आ प्रकृतिक सौन्दर्य

पुरुष-सौन्दर्य आ प्रकृतिक आलम्बन—उद्दीपन भूमिका सेहो ग्रन्थमे समाविष्ट अछि। स्त्री-पात्रक विस्तृत अङ्ग-वर्णनक तुलना पुरुष-पात्रक संक्षिप्त वर्णनसँ कयलासँ काव्यदृष्टिक लैङ्गिक असमानता सम्बन्धी नूतन प्रश्न उपस्थित होइत अछि।

सारणीगत अध्ययन

मूल ग्रन्थक अनुक्रमणिकामे नारी-सौन्दर्य तालिका (पृ० २९०–२९३) देल अछि। तालिकाक प्रत्येक प्रविष्टि एहिठाम शब्दशः पुनरुत्पादित नहि कएल गेल अछि; मुदा ग्रन्थक विश्लेषणमे परिमाणात्मक वर्गीकरणक प्रयत्नक रूपमे एकर महत्त्व अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

ई ग्रन्थक केन्द्रीय आलोचनात्मक क्षेत्र अछि। नख-शिख वर्णनक केवल अङ्ग-सूची बनब साहित्यिक अर्थकेँ सीमित करैत अछि; शब्दक क्रम, दृष्टिक संचरण, संकोच, व्यञ्जना आ उपमाक स्थानीय छवि देखल जाए। देह-वर्णनक भीतर प्रेमक अनुभव बनैत अछि अथवा शरीर केवल प्रदर्शनक वस्तु बनैत अछि—ई प्रश्न प्रत्येक उदाहरण पर लागू होइत अछि।

यौवनक चित्रणमे नवत्व, लज्जा, आकर्षण, आत्मबोध आ सामाजिक नियंत्रणक तनाव सम्भव अछि। प्रेमक “संयोग” संग “असुरक्षा” सेहो उपस्थित रहि सकैत अछि। एहि कारणेँ हाव-भावकेँ यान्त्रिक वर्गमे ठेलबाक बदला पदक नाटकीय परिस्थिति आ संबोधनक संग पढ़ब अनिवार्य अछि।

स्त्री आ पुरुषक सौन्दर्य-वर्णनक परिमाण तथा वर्णन-पद्धतिक असमानता एक उपयोगी आलोचनात्मक संकेत अछि। सौन्दर्यकें केवल “देखल गेल देह” नहि, “बोलैत अनुभव” बना कऽ पढ़ब समीक्षा विस्तृत करैत अछि।

देह-वर्णनक अर्थनिर्माण

नख-शिख वर्णनकें केवल देहक क्रमिक अवलोकन मानब बहुत संकुचित दृष्टि होएत। अङ्ग-वर्णनक चयन काव्यगत दृष्टिक दिशा देखबैत अछि: दृष्टि कोन स्थल पर ठहरैत अछि, कोन विशेषणक द्वारा अर्थ विस्तारित होइत अछि, कोन उपमा अलौकिकता अथवा लोकप्रसिद्ध वस्तुक स्मृति जगबैत अछि। देहक उल्लेखक अर्थ प्रेमक निकटता सेहो भऽ सकैछ, दृश्यात्मक शिल्प सेहो, आ सत्ता-सम्बन्धक संकेत सेहो। एकर निर्णय संबंधित पदक पंक्ति आ वक्ता देखिकें करब पड़त।

यौवन आ कालबोध

यौवन-वर्णनमे केवल शारीरिक परिवर्तन नहि, कालक अनुभूति निहित होइछ। नूतन रूपक प्रति विस्मय, आत्मबोधक झिझक, सामाजिक दृष्टिसँ सावधानी आ प्रियक दृष्टिसँ स्वयंकें पहचानबाक प्रक्रिया मिलि कऽ यौवनक नाटकीय गठन करैत अछि। ई विविधता नारीपात्रकें एकरूप छवि मानबाक विरुद्ध अछि। रचनामे जँ मौसम बदलैछ तऽ कालबोधक सामाजिक आ भावात्मक अर्थ सेहो बदलैत अछि; प्रकृति कखनो सम्बन्धक समर्थन, कखनो वियोगक तीव्रता बनैछ।

प्राकृतिक सौन्दर्यक उपस्थिति

फूल, वन, चन्द्र, मेघ, पवन अथवा ऋतुक वर्णनक अर्थ पदक कथ्यसँ तय होइत अछि। प्रसन्न प्रेमक प्रसङ्गमे जे परिवेश उल्लासपूर्ण अछि, विरहक प्रसङ्गमे सेहो परिवेश विषाद जगाबि सकैछ। एहि परिवर्तनक अर्थ ‘प्रकृति संवेदनशील अछि’ एतबे नहि; पात्रक भीतरक स्थिति बाहरक प्रतीक-व्यवस्था बदलि दैत अछि। आलम्बन आ उद्दीपनक आलोचनात्मक प्रयोग करैत काल भावक एहि उलटावकें रेखांकित कएल जाए।

वर्णनसँ संवाद धरि

विद्यापतिक प्रेमगीतक सौन्दर्यक एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे कथात्मक प्रस्तुति आ संवादात्मक उत्कंठा कतेक अनुपातमे रहैत अछि। बहिर्वर्णन अपन अर्थक सीमामे रहैछ; पात्रक सीधा सम्बोधन ओकर भीतर प्रतिक्रिया जोड़ैत अछि। दृष्टि, संकोच, प्रश्न आ उलाहनाक क्रमसँ सौन्दर्य स्थिर चित्र नहि रहि कऽ चलायमान सम्बन्ध बनैत अछि। एहि गतिशीलताक अवलोकन बाह्य रूपसौन्दर्य आ आन्तरिक भावसौन्दर्यक कृत्रिम विभाजन घटा सकैत अछि।

पञ्चम अध्याय : काव्यशास्त्रीय परम्परा आ विद्यापतिक काव्य-सौन्दर्य (पृ० ३०३-४२८)

रसतत्त्व

अनुक्रमणिकामे शृङ्गारक संयोग-वियोग पक्षक संग वीर, हास्य आ शान्त रसक उल्लेख अछि। रसक अध्ययन पात्र-व्यक्तिक निजी भावक समानार्थी नहि; विभाव, अनुभाव आ सञ्चारी भावक कलात्मक संरचनाक अध्ययन अछि।

अलङ्कार-विधान

उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, यमक, अनुप्रास, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, विरोधाभास, व्यतिरेक, दृष्टान्त, निदर्शना, समासोक्ति, पर्यायोक्ति प्रभृति बहुत रास अलङ्कार अनुक्रमणिकामे गनाओल अछि। अध्ययनक श्रेष्ठ कसौटी केवल अलङ्कारक नाम नहि, ओकर काव्यगत कार्य—चित्रात्मकता, ध्वनि, अर्थ-संकेतन आ भावोद्दीपन—अछि।

नायिका-भेद

मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा, गुप्ता, विदग्धा, अभिसारिका, वासकसज्जा, मानिनी, प्रोषितपतिका, विरहोत्कण्ठिता, विप्रलब्धा, खण्डिता, कलहान्तरिता, स्वाधीनपतिका, परकीया, कूटनी आदि

अनेक कोटि प्रस्तुत अछि। एक्के पदमे एकसँ बेसी अवस्थाक छाया भेटि सकैत अछि; वर्गीकरणक लचीलापन स्वीकारब चाही।

उक्ति-वैदग्ध्य आ अर्थ-व्यञ्जना

उक्ति आ वाग्वैदग्ध्य, प्रतीकात्मकता, बिम्ब-विधान, ध्वनिवादिता, अन्योक्ति आ दृष्टकूटक पृथक् उपविषय ग्रन्थक शिल्पमुखी पक्षकें बल दैत अछि। शब्दक सतही अर्थ, संकेतित अर्थ आ सांस्कृतिक आशयक त्रिस्तरीय पठन विशेषतः दृष्टकूटक लेल अपेक्षित अछि।

लोकोक्ति आ मुहावरा

मैथिलीक बोलचाल, कहबी, लोकोक्ति आ मुहावरा विद्यापतिक काव्यभाषाकें जनजीवनसँ जोड़ैत अछि। भाषिक अध्ययनमे स्थानीय अर्थ, ध्वनि-विन्यास, प्रसंगक औचित्य आ पात्रक सामाजिक स्थिति आवश्यक अछि।

अलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

रस-सिद्धान्त पाठकें भाव-उत्पत्तिक एक अनुशासित ढाँचा दैत अछि। मुदा रसक नाम निश्चित कऽ देलासँ काव्यप्रक्रिया समझल नहि जाइत अछि। विभाव, अनुभाव, संचारी-भाव आ स्थायीभावक सम्बन्धकें पदक शब्द-पंक्तिसँ देखेनाइ चाही। एतय रस-श्रेणीक सफलता पाठकक अनुभूतिक जीवित वैविध्यकें समेटबामे अछि।

उपमा, रूपक, अनुप्रास, यमक अथवा श्लेषक उपयोगक अर्थ ओकर संख्या नहि; विशेष प्रसङ्गमे ओकर कार्य अछि। कोनो उपमा प्रेमक दूरी घटबैत अछि, कोनो बढ़बैत अछि; ध्वनि-विन्यास भावक तीव्रता बनेनाइ अथवा विडम्बना उपजेनाइ सकैत अछि।

लोकोक्ति, मुहावरा आ लोक-प्रयुक्त पदसमूह मात्र अलङ्करण नहि, सांस्कृतिक स्मृतिक वाहक अछि। ओहि अभिव्यक्तिसँ लोकभाषाक जीवित बोली काव्यभाषामे प्रवेश करैत अछि। शास्त्रीय आ लोक-स्रोतकें प्रतिपक्ष नहि, परस्पर सक्रिय सम्बन्ध मानब चाही।

रस-निर्णयक पाठाधार

शृङ्गार रसक सामान्य सिद्धान्त स्वीकार कएलाक बाद कठिन काज आरम्भ होइत अछि। कोन घटना आलम्बन होइत अछि, केहन दृश्य उद्घीपन, कोन हाव-भाव अनुभाव, आ कोन क्षणिक प्रतिक्रिया सञ्चारी भाव—ई केवल पारिभाषिक नाम नहि। अलग-अलग पंक्तिमे एक्के वस्तु अर्थ बदलि सकैछ। कविक शब्दचयन रसविधानक निर्णायक आधार अछि। ताहि कारणेँ रस-श्रेणीक गणना मात्र कऽ आलोचना समाप्त मानब उचित नहि।

अलङ्कारक प्रकार बनाम प्रकार्य

उपमा आ रूपकक नाम देला पर पाठक केवल ई बुझैत छथि जे तुलना केना बनल अछि। मुदा तुलना किन बनल अछि, ई अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि। मिलनक प्रसङ्गमे उपमा निकटता बढ़ाबि सकैछ; विरहमे सेहे रूपक दूरीक अनुभूति तीव्र करि सकैछ। अनुप्रासक ध्वनि केहन गति देइत अछि, पुनरुक्ति केहन आग्रह बनबैत अछि, ई देखलासँ अलङ्कार भावनिर्माणक अङ्ग बनैत अछि।

लोकोक्ति, मुहावरा आ गीतक लय

लोकोक्ति बोलीक सामूहिक अनुभव सँ जनमैत अछि। काव्य ओकरा ग्रहण कऽ सामान्य कथनकेँ विशिष्ट भावक अर्थ देइत अछि। मुहावरा शब्दशः अर्थसँ अलग एक सामाजिक स्मृति आ भावमुद्रा रखैत अछि। गेय पदक विराम, दोहराव आ ध्वनिसंयोजन संग ई लोकप्रयुक्ति सह-अस्तित्व बनबैत अछि। तँ लोकभाषा आ अलङ्कारक बीच सरल उच्च-नीच विभाजन स्वीकार कएल नहि जा सकैछ।

षष्ठ अध्याय : शृङ्गारक उन्मुक्त गायक विद्यापति (पृ० ४२९-४७४)

शृङ्गारक महत्त्व

शृङ्गारक मनोवैज्ञानिक आधार, सौन्दर्य आ प्रेमक सम्बन्ध, तथा काम-सौन्दर्य-प्रेमक त्रिविभाजन एहि अध्यायक विचारभूमि अछि। ‘उन्मुक्त’ शब्दकेँ मात्र मर्यादा-भङ्गक अर्थमे नहि, प्रेम-अनुभूतिक मुखर काव्यात्मक प्रस्तुति रूपमे सेहो विचारल जा सकैत अछि।

संयोग-शृङ्गार

मान, मनुहार, अभिसार, मिलन, महामिलन आ सम्भोगक अनुक्रम प्रेमक नाटकीय गति प्रस्तुत करैत अछि। संयोगक सौन्दर्य प्रतीक्षा आ भयक अनुपस्थितिमे नहि, अनेक बेर ओहने मनोदशाक पार भऽ प्राप्त मिलनमे बसैत अछि।

विप्रलम्भ-शृङ्गार

पूर्वराग, स्मरण, गुणकथन, अभिलाष, मूर्च्छा, व्याधि, उद्वेग, प्रलाप, जड़ता, उन्माद आ मरणपर्यन्त दशा; संगहि प्रणयमान, ईर्ष्यामान, प्रवास आ करुण विरहक भेद अनुक्रमणिकामे अछि। एहि अवस्थासभकेँ वास्तविक चिकित्सकीय रोगसूची नहि, काव्य-रसक अनुभावात्मक शृङ्खला बुझब समीचीन अछि।

आलम्बन राधा-कृष्ण

शृङ्गारक आलम्बन राधा-कृष्ण विषयक पृथक् परिच्छेद अध्यायक अन्तिम सूत्र अछि। कृष्ण आ राधाक भावभूमिक एकार्थीकरणसँ बचैत, संयोग आ विरहमे पात्रक दृष्टि आ वाणी कसरी बदलैत अछि, ताहि प्रश्न पर ध्यान अपेक्षित अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

“उन्मुक्त” विशेषणक विवेचन लेल पहिने ओकर अर्थ निर्धारित करब उचित अछि: देहक निर्भीक स्वीकृति, भावक सहज उद्घाटन, अथवा शैलीक निर्बन्धता? ई तीनू समान नहि।

शृङ्गारक संयोग-विप्रलम्भ विभाजनमध्ये मान, अनुरोध, प्रतीक्षा, स्मृति, गोपनता आ मिलनक आशंका भिन्न सूक्ष्म अनुभव अछि।

विरहकें संयोगक अभाव मानब मात्रसँ बात पूरा नहि होइत अछि। स्मृतिक भीतर अनुपस्थित प्रियक मानसिक उपस्थिति बढ़ैत अछि; ऋतु आ परिवेश उत्तेजकसँ कष्टप्रद बनि सकैत अछि। एहि उलटावमे काव्यक भावसौन्दर्य उभरैत अछि।

निष्कर्षः शृङ्गारक मूल्याङ्कनमे नैतिक प्रशंसा वा निन्दाक अपेक्षा काव्यात्मक युक्ति, संवेदनात्मक गहराइ आ स्वर-विन्यासक विवेचन अधिक फलदायक अछि।

मिलनमे अन्तर्निहित अस्थिरता

संयोग-शृङ्गारक प्रत्येक चित्र निश्चिन्त सुखक रूपमे नहि होइछ। प्रतीक्षित मिलनक संग भय, लोकलाज, संकोच अथवा कालक अल्पता रहि सकैछ। एहि कारणेँ संयोगक भावानुभव कएक बेर विरहक आशंकासँ रंगायल रहैत अछि। भावविन्यासक ई मिश्रित स्थिति कठोर वर्गीकरणसँ बाहर पड़ि सकैछ; कविता ओकर कारणेँ अधिक जीवित लगैत अछि।

विरहमे स्मृति आ समय

विप्रलम्भकें अभावक घटना मात्र नहि मानल जाए। स्मृति अनुपस्थित प्रियकें पुनः उपस्थित करैत अछि, मुदा ओ उपस्थिति स्पर्शमात्र नहि, पीड़ाक स्रोत सेहो होइत अछि। दिनक अवधि लम्बा होयबाक अनुभव, रात्रिक निस्तब्धता, ऋतुक परावर्तन—ई सभ विरहक अनुभूत समय निर्मित करैत अछि। पाठक समय-सूचक शब्दक स्थान आ परिवेशगत उलटाव पहिचानथि, तखन विरहक आन्तरिक शिल्प स्पष्ट होइत अछि।

उन्मुक्तताक अर्थ

ग्रन्थक शीर्षकीय आ अध्यायगत मूल्यनिर्णयमे ‘उन्मुक्त’ कहनाइ आकर्षक अछि; तथापि एकर अर्थ आवश्यक रूपसँ अनियन्त्रित भोग नहि। कवितामे देहक निर्भीक उल्लेख, भावक सरल अभिव्यक्ति, लोकगीतक सहज लय आ शास्त्रीय रूपक सभ एकहि समय उपस्थित

रहि सकैछ। उन्मुक्तताकें नैतिक आरोप-प्रत्यारोपसँ हटाक अभिव्यक्तिक संरचनामे देखलासँ सौन्दर्य-विचारक गहराइ बढैत अछि।

सप्तम अध्याय : विद्यापतिक प्रेमकाव्यमे लोक-चेतनाक उन्मेष (पृ० ४७५-५३७)

लोक-चेतना आ लोक-यथार्थ

ग्रन्थ लोकचेतनाक आयाम, साहित्यक सामाजिक मर्यादा, स्वस्थ मनोवृत्ति आ गार्हस्थिक मूल्यक प्रसंग उठबैत अछि। राधा-कृष्णक लोक-पात्र रूपमे प्रस्तुति आ लौकिक जीवनक भाषिक संकेतसँ भक्तिकथा आ जनजीवनक दूरी घटैत अछि।

सामाजिक कुरीति पर व्यङ्ग्य

बाल-विवाहक विरोध, कूटनी नारीक चित्रण, आ सामाजिक विसंगति पर व्यङ्ग्यक उपशीर्षक स्पष्ट सूचित अछि। एहि विवेचनमे काव्यक विशिष्ट पात्रक वक्तव्य आ ऐतिहासिक समाजक सामान्य स्थिति बीच प्रमाणजन्य अन्तर राखब जरूरी अछि।

लोकतत्त्व आ गीत-परम्परा

दृष्टकूट, महेशवाणी आ नचारीकें लोकचेतनाक सन्दर्भमे समाविष्ट कएल गेल अछि। एहि रूपसभमे सामाजिक बोलचाल, आस्था आ प्रदर्शनकारी गायनक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि। मैथिली गीत-पद्धतिक प्रस्तुति-सन्दर्भ पदक अर्थ बदलि सकैत अछि।

विद्यापतिक मिथिला

मिथिलाक राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक अवस्थाक पृथक् विवेचन (पृ० ५०४-५२७) ग्रन्थकें केवल अन्तःपाठीय काव्यालोचनासँ आगाँ लऽ जाइत अछि। ऐतिहासिक घटनाक निष्कर्ष देबाक लेल अलग अभिलेखीय अथवा विश्वसनीय ऐतिहासिक स्रोतसँ मिलान चाही।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

लोकचेतना केवल ग्राम्य शब्दक सूची नहि; लोकजीवनक श्रम, रीत, उत्सव, स्त्री-सम्बन्ध, घर-परिवार, विवाह-व्यवस्था आ सामूहिक स्मृतिक काव्यात्मक उपस्थिति अछि। यदि पदमे समकालीन सामाजिक व्यवहारक झलक भेटैत अछि, तकर इतिहासलेखनमे प्रयोग सावधानीसँ करबाक चाही, किएक तँ कविता प्रत्यक्ष जनगणना नहि।

कुरीति पर व्यङ्ग्यक प्रसङ्गमे वक्ताक स्थिति निर्णायक अछि। व्यङ्ग्य कविक मत अछि, पात्रक शिकायत अछि, वा परम्परागत हास्यक विधान—ई अन्तर बिनु सामाजिक निर्णय अविश्वसनीय भऽ सकैत अछि।

मैथिली मुहावरा, सम्बोधन, स्थानीय ऋतुचक्र आ गायनपरम्परा एहि अध्यायक सबल सम्भावना अछि। भाषा आ समाजक बीच सम्बन्धकेँ केवल सजावट नहि, अर्थ-उत्पादनक माध्यम मानब एहि ग्रन्थक लोकपक्षकेँ गहराइ दैत अछि।

लोकचेतनाक अनेक स्तर

मिथिलाक लोकजीवन सम्बन्धी संकेतकेँ ग्रामीण वस्तुक सूची मात्र नहि बनाओल जाय। सम्बोधन-पद्धति, स्त्री-समुदायक परस्पर वार्ता, ऋतुचक्र, घरक आँगन, परम्परागत संस्कार, हास्य, व्यङ्ग्य आ उत्सव सभ लोक-चेतनाक स्तर अछि। भाषा एतय केवल वस्तुक नाम नहि दैत अछि; सामाजिक सम्बन्धक दूरी आ निकटता सेहो निर्धारित करैत अछि।

कुरीति-विवेचनक पद्धति

कवितामे परिहास अथवा शिकायत देखिकेँ तात्कालिक समाजक संस्थागत इतिहास सीधा लिखब जोखिमपूर्ण अछि। साहित्य सामाजिक तनावकेँ अतिशयोक्ति, लोककथा अथवा पात्रक निजी शिकायतमे प्रकट कऽ सकैछ। कुरीतिक प्रश्न पर गम्भीर शोध करबाक लेल सामाजिक इतिहास, विधि, रीतिगीत आ समकालीन अन्य साहित्यक स्वतंत्र प्रमाणसँ मिलान अपेक्षित अछि।

लोक आ शास्त्रक संगति

लोकधुनक सहज पुनरावृत्ति आ संस्कृत काव्यशास्त्रक बिम्ब एक दोसराक विरोधी होएबाक आवश्यकता नहि। एकहि पदमे स्थानीय सम्बोधन आ परम्परागत अलङ्कार एक संग अर्थ उत्पन्न कऽ सकैत अछि। एहि संगतिक कारण विद्यापतिक काव्यक प्रभाव व्यापक बुझल जा सकैत अछि, मुदा प्रभावक ऐतिहासिक दाबी लेल ठोस अनुक्रमिक साक्ष्य अलगसँ चाही।

अष्टम अध्याय : परवर्ती कविलोकनि पर विद्यापतिक प्रभाव (पृ० ५३९-५६८)

मिथिलाक काव्यानुराग

मिथिलाक काव्यानुराग आ संगीत-नृत्य परम्पराकेँ ग्रन्थ प्रभाव-इतिहासक आरम्भिक भूमिका मानैत अछि। काव्यक परवर्ती जीवन केवल पुस्तकमे नहि, गायन, अनुष्ठान आ सामूहिक स्मृतिमे सेहो विकसित होइत अछि।

मैथिली काव्यक परम्परा

मैथिली काव्य आ विद्यापतिक सम्बन्ध तथा मैथिली कविलोकनि पर प्रभावक विवेचन साहित्यिक उत्तराधिकारक महत्वपूर्ण प्रश्न अछि। ‘प्रभाव’ स्थापित करबाक लेल प्रत्यक्ष उल्लेख, छन्द-भाषा-बिम्बक साम्य आ कालानुक्रमिक सम्भावना तीनू देखबाक चाही।

अन्य भाषाक साहित्य पर प्रभाव

बंगला आ ब्रजबुलि, नेपाली, असमिया, उड़िया आ भोजपुरीक कविलोकनि पर प्रभाव ग्रन्थक स्पष्ट विषय अछि। प्रभावकेँ एकदिशीय प्रसार कहबाक बदला पाठ-परिवर्तन, क्षेत्रीय गायन आ पारस्परिक ग्रहणशीलताक माध्यमँ परखब विशेष उपयोगी अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

प्रभावक अध्ययन लेल साम्य पर्याप्त नहि। पछिला कविक काल, पाठ-प्रसारक माध्यम, छन्द, सम्बोधन-शैली, नायिका-विधान आ साझा पद-विन्यासक ठोस तुलनात्मक साक्ष्य आवश्यक अछि। “विद्यापतिक समान प्रेमगीत” आ “विद्यापति सँ प्रेरित गीत” दू भिन्न प्रस्ताव अछि।

मैथिली आ अन्य भाषाक गीतपरम्परामे प्रत्यक्ष अनुकरण, रचनात्मक रूपान्तरण, लोकगायनद्वारा प्रसार, आ सामान्य सांस्कृतिक परम्परा—ई चार सम्भावनाकेँ अलग करब चाही। एतेक भेदक बादे प्रभावक दाबी ऐतिहासिक रूपसँ ठोस बनत।

मूल्याङ्कन: एहि अध्यायक महत्त्व विद्यापतिक रचनाक दीर्घजीविता देखेबामे अछि; एकर शोधसम्भावना व्यवस्थित समानान्तर पद-पाठ आ पाण्डुलिपि-परम्पराक परीक्षणमे अछि।

अनुकरण, प्रभाव आ समान परम्परा

जँ दू कविक पदमे राधा-कृष्ण, सावन, विरह अथवा सखीक उल्लेख भेटैछ, ताहिसँ अनिवार्य नहि जे परवर्ती कवि विद्यापतिसँ प्रत्यक्ष प्रेरित छथि। ई बिम्ब व्यापक सांस्कृतिक कोशक सेहो भऽ सकैछ। प्रत्यक्ष प्रभावक दावा लेल काल-निर्णय, पाठ-प्रसार, विशिष्ट पदबन्ध, गायनपरम्पराक वाहक आ उपलब्ध पाठान्तरक तुलना महत्त्वपूर्ण अछि।

भाषा-पार प्रसार

मैथिली गीतक प्रभाव अन्य भाषामे देखबाक लेल भाषान्तरित रूप, मूल पदक ध्वन्यात्मक रूप, लयबद्ध पुनर्रचना आ लोकगायकक मौखिक रूपान्तरण अलग-अलग प्रक्रिया अछि। कखनो शब्द यथावत रहैत अछि, कखनो रूपक बदलैत अछि मुदा भाव-संरचना बचल रहैछ। शोधमे एहि प्रकारक परिवर्तन चिह्नित करबाक बादे प्रभावक प्रकृति निर्धारित कएल जाय।

परवर्ती कविक स्वायत्तता

प्रभावक चर्चा जँ केवल पूर्ववर्ती कविक महिमामण्डन बनि जाए तऽ पछिला साहित्यकारक सृजनशीलता ओझरि जाइछ। काव्यपरम्परा ग्रहण आ परिवर्तनक सम्बन्ध अछि। नव भाषा,

नव श्रोता आ बदलल सामाजिक परिस्थितिमे एकहि शृङ्गारिक विधानक अर्थ फेर बनैछ। ई बदलैत अर्थ स्वयं अनुसन्धानक विषय अछि।

नवम अध्याय : उपसंहार (पृ० ५७५-५८९)

समेकित विचार

ग्रन्थक पूरे यात्रा प्रेम आ सौन्दर्यक दार्शनिक आधारसँ शुरू भऽ मनोवैज्ञानिक अन्वेषण, राधाकृष्णीय परम्परा, नायिका-शास्त्र, रस-अलङ्कार, लोकचेतना आ बहुभाषिक प्रभावक पड़ाव पार करैत अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक काव्यक प्रधान वैशिष्ट्य प्रेम-अनुभव आ भाषिक-सौन्दर्यक परस्पर निर्भरता रूपमे उभरैत अछि।

अनुसन्धानक सम्भावित विस्तार

पदवार पाठभेद, गेय-परम्परा, स्त्री-वाणी, स्थानिक उच्चारण, भाषासम्पर्क तथा पाण्डुलिपि-परम्पराक अध्ययन एहि ग्रन्थक विमर्शक उपयोगी अगिला पड़ाव अछि। ई समीक्षक द्वारा सुझाओल शोध-दिशा अछि, मूल उपसंहारक प्रमाणित उद्धरण नहि।

अध्ययनक संरचनात्मक उपलब्धि

नौ अध्यायक विन्यास विषयकें बहुआयामी रूप दैत अछि। तात्त्विक आ मनोवैज्ञानिक आधार, काव्यशास्त्रीय वर्गीकरण, लोकसमाजक सन्दर्भ तथा परवर्ती प्रभावक क्रम एक विस्तृत अध्ययन-पद्धतिक परिचायक अछि।

प्रेम आ सौन्दर्यक अन्तःसम्बन्ध

प्रेम आ सौन्दर्यकें स्वतंत्र शीर्षकमे परिभाषित करितो ग्रन्थक मध्यभाग दुनूकें एक-दोसरक विधायक तत्त्वक रूपमे जोड़ैत अछि। रूपक आकर्षण, भावक परिपाक आ कलात्मक अभिव्यक्ति अलग-अलग तत्त्व रहितहुँ परस्पर प्रभावकारी अछि।

काव्यशास्त्रीय पद्धतिक उपयोगिता आ सीमा

रस, अलङ्कार, नायिका-भेद आ ध्वनिक शब्दावली निकट पाठनमे सहायक अछि; मुदा अत्यधिक वर्गीकरण पदक व्यक्तिगत आवाज, विडम्बना, व्यङ्ग्य आ सामाजिक संघर्षक ओझराओ सकैत अछि। वर्गक संग पाठक स्वायत्तता राखब समीचीन अछि।

स्त्री-पात्रक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

राधाक देह, सौन्दर्य आ चेष्टाक विस्तृत वर्णनक संग हुनक इच्छा, असहमति, वाणी, मान आ विरह सेहो अध्ययनक केन्द्रमे रहबाक चाही। एना नायिका केवल पुरुष-दृष्टिक आलम्बन नहि, अनुभूतिशील वक्ताक रूपमे उभरैत छथि।

लोकजीवन आ भाषा

लोकचेतना, मुहावरा, नचारी आ महेशवाणीक उपस्थिति मैथिली भाषाक सामाजिक जीवनक महत्त्व देखबैत अछि। काव्यरूप आ भाषिक व्यवहारक पारस्परिक अनुसन्धान विद्यापतिक ऐतिहासिक पाठनकें मजबूत करैत अछि।

तुलनात्मक साहित्यिक सम्भावना

अलग-अलग भाषाक परम्पराक प्रसंग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। समान पदरचना, अनुवाद, रूपान्तरण, सुर-परम्परा आ परवर्ती काव्यग्रहणक तुलनात्मक सूची बनाओल जाए तऽ प्रभाव-अध्ययन अधिक प्रमाणाधारित बनि सकैत अछि।

आलोचनात्मक विस्तार आ सूक्ष्म पाठ

ग्रन्थक अवधारणात्मक, मनोवैज्ञानिक, आलम्बनगत, काव्यशास्त्रीय, लोक-सांस्कृतिक आ प्रभावगत भाग परस्पर जोड़ल गेल अछि। समग्र निष्कर्ष इएह नहि होयबाक चाही जे विद्यापति “प्रेम आ सौन्दर्यक कवि” छथि; अपेक्षित ई अछि जे कतेक प्रकारक प्रेम, कोन भाषिक साधनसँ, किन सामाजिक परिस्थिति आ गायनपरम्परामे रूप पबैत अछि।

उपसंहारक मूल्य तभी बढ़ैत अछि जखन ओ मुख्य प्रतिपादन, पाठ-प्रमाण, वैकल्पिक व्याख्या आ निष्कर्षक सीमा चारू अलग रखैत अछि। विद्यापति-पदक पाठान्तरक समस्या, कवित्व-आरोपण, भाषिक ऐतिहासिकता आ स्त्रीस्वरक विमर्श भविष्यक अनुसन्धान लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

समग्रता बनाम विस्तार

ग्रन्थ व्यापक दार्शनिक भूमिका सँ काव्यशास्त्र, सामाजिक पृष्ठभूमि आ परवर्ती प्रभाव धरि जाइत अछि। ई विस्तार विद्यापतिक अध्ययनकेँ एकमात्र ‘शृङ्गारिक कवि’क संकीर्ण परिचयसँ बचबैत अछि। मुदा व्यापकता स्वयं गहराईक पर्याय नहि। जतेक विषय अधिक, ओतेक प्रत्येक निष्कर्षक प्रमाण-अनुशासन जरूरी। एहि कारण अध्यायसभक परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करब उपसंहारक प्रमुख अपेक्षा अछि।

काव्यपाठक नवान्वेषी दिशा

नव अनुसन्धानमे पदक वक्ता-विश्लेषण, नायिकाक इच्छा आ प्रतिवाद, गीतक गेय संरचना, भाषिक पाठान्तर, लोकभाषाक सांस्कृतिक अर्थ आ प्रभावक ऐतिहासिक प्रमाण समान रूपसँ महत्त्वपूर्ण होएत। एतय प्रयुक्त प्रश्न मूल लेखकक निश्चित निष्कर्ष नहि, प्रस्तुत समीक्षाक आलोचनात्मक प्रस्ताव अछि। एहि भेदक स्पष्टता पाठककेँ शोध-परम्परा आ नव मूल्याङ्कनक सीमा बुझबैत अछि।

समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष

ग्रन्थक विशेष उपलब्धि एकरे बहुस्तरीय स्थापत्य अछि। प्रेमक सामान्य सिद्धान्तसँ काव्यरूप, पात्रविधान, शृङ्गार, लोकचेतना आ प्रभावक अध्ययन धरि विस्तारित ढाँचा पाठककेँ विद्यापतिक सम्पूर्ण प्रेमकाव्यक बहुआयामी परिचय दैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ कथन निर्विवाद अछि; विद्वत्ताक जाँच अलग-अलग स्तर पर करब आवश्यक अछि।

काव्य-समीक्षाक प्रमुख कसौटी पाठसाक्ष्य अछि। एतय शब्द, ध्वनि, पदक्रम, वक्ता, आलम्बन, उद्दीपन, सामाजिक रीति आ पाठान्तर एकत्र करब अपेक्षित अछि। लेखकक

वर्गीकरण उपयोगी मानचित्र अछि, मुदा मानचित्र स्वयं मूल भूभाग नहि। प्रत्येक उदाहरण ओकर स्थानीय अर्थसँ व्याख्यायित होयबाक चाही।

प्रेम-सौन्दर्यक पारम्परिक विमर्शक भीतर स्त्रीपात्रक अभिकर्तृत्व, भावनात्मक प्रतिरोध, सामाजिक मर्यादा आ इच्छाक द्वन्द्वक नव पाठ सम्भव अछि। ई प्रस्तुत समीक्षाक आलोचनात्मक प्रस्ताव अछि, लेखकक घोषित मतक प्रत्यक्ष उद्धरण नहि।

पश्चिमी सौन्दर्यशास्त्र आ भारतीय रससिद्धान्तक सैद्धान्तिक मिलान उपयोगी अछि, मुदा ओकर ऐतिहासिक-सांस्कृतिक भिन्नता मेटा देब यथोचित नहि। विद्यापतिक काव्यक स्थानीय शब्दरचना, गायनपरम्परा आ मिथिलाक सांस्कृतिक संकेतक विशिष्टता सर्वदा केन्द्रमे रखबाक चाही।

समेकित उपसंहार

‘अग्नि-शिखा’ आ ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’मे भाषा, समाज आ कविता बीच सम्बन्धक जे सक्रिय तनाव उपस्थित अछि, से ‘प्रथम पुरुष’क आलोचनात्मक निबन्धसभमे विचारगत अनुशासनक रूप पबैत अछि। जन-चेतना केवल घोषणासँ नहि, बिम्ब, शैली, लय आ कथन-स्थितिक संगठनसँ कलात्मक प्रभाव अर्जित करैत अछि। कवि आ समीक्षक मल्लिकक सम्बन्ध एहि द्विविध कार्यमे प्रकट होइत अछि।

‘नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान’ एहि साहित्य-दृष्टिक प्रदर्शनात्मक आयाम खोलैत अछि। मैथिली नाटकक इतिहास लिखबाक लेल नाट्यग्रन्थ पर्याप्त नहि; वास्तविक अभिनय, संस्था, प्रेक्षक, गीत, रंग-निर्देश आ लोकाभिनयक सामाजिक सन्दर्भ सेहो आवश्यक अछि। साहित्य ओहि क्षण सामुदायिक अनुभव बनैत अछि जखन लिखित शब्द मंचपर देह, स्वर आ समय प्राप्त करैत अछि।

विद्यापतिक प्रेम-सौन्दर्यपर मल्लिकक विमर्श मैथिली साहित्यक दीर्घ ऐतिहासिक धरोहर दिस ध्यान लौटबैत अछि। मुदा शृङ्गार, रस, अलङ्कार आ नायिका-भेदक परम्परागत श्रेणी काव्यपाठक अन्तिम निष्कर्ष नहि बनबाक चाही। प्रेमक वक्ता, स्त्री-अनुभव, लोकभाषा, रागात्मक अभिव्यक्ति आ परवर्ती भाषामे रूपान्तरण जकाँ प्रश्न साहित्यिक अर्थकें आरो समृद्ध करैत अछि।

पाँचो कृतिक अध्ययनक साझा निष्कर्ष ई अछि जे मैथिली साहित्यक आलोचनामे सांस्कृतिक सम्मान आ मूल्यांकनक स्वतन्त्रता संग रहबाक चाही। मल्लिकक कविता आ आलोचना दुनू एहन पाठक आमन्त्रण करैत अछि जे समाजक असमानता देखैत हो, रूपसौन्दर्यक विवेक रखैत हो, आ अपन परम्पराक भीतर नूतन प्रश्न उठबैत हो। एही सतत प्रश्नशीलता सँ हुनक साहित्यक नित नवल सम्भावना निर्मित होइत अछि।

विस्तृत सन्दर्भ-ग्रन्थावली

मुख्यतः एहि पुस्तकमे विवेचित मूल कृति, आ विषयगत ग्रन्थ-सन्दर्भ। पुस्तक, संस्करण, प्रकाशक आ प्रकाशन-वर्षक विवरण मात्र; जाल-सन्दर्भ नहि।

क. वीरेन्द्र मल्लिकक विवेचित मूल ग्रन्थ

मल्लिक, वीरेन्द्र। अग्नि-शिखा। कविता-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष, संस्करण आ प्रकाशकक पुष्ट विवरण उपलब्ध नहि।

मल्लिक, वीरेन्द्र। अथातो काव्य जिज्ञासा। कविता-संग्रह। प्रथम संस्करण, २०२३।

गाजियाबाद : अन्तिका प्रकाशन प्रा. लि. ISBN 978-93-91925-69-7।

मल्लिक, वीरेन्द्र। प्रथम पुरुष। आलोचना-संग्रह। २०२३। अंकित प्रकाशन प्रा. लि.।

मल्लिक, डॉ. वीरेन्द्र। नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान। प्रथम संस्करण, २०१८। नई दिल्ली : तीर्थभुक्ति। ISBN 978-81-939529-0-0।

मल्लिक, डॉ. वीरेन्द्र। प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति। २०१६। प्रकाशक आ संस्करणक पुष्ट विवरण उपलब्ध नहि।

ख. काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र आ रामकाव्यक पुस्तक-सन्दर्भ

भरतमुनि। The Nāṭyaśāstra: A Treatise on Hindu Dramaturgy and Histrionics,

Vol. I–II। अनुवाद आ सम्पादन : Manomohan Ghosh। कलकत्ता : The Asiatic

Society (खण्ड I, १९५१; खण्ड II, १९६१)।

विद्यापति ठाकुर। Vidyāpati Padāvalī। अनुवाद : Ananda K. Coomaraswamy आ

Arun Sen। १९९४ संस्करण। नई दिल्ली : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (IGNCA)।

ISBN 81-85120-50-1।

तुलसीदास। श्रीरामचरितमानस। गोरखपुर : गीताप्रेस। (विभिन्न मुद्रित संस्करण उपलब्ध।)

अध्यात्मरामायण। गोरखपुर : गीताप्रेस। (विभिन्न मुद्रित संस्करण उपलब्ध।)

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

कविता, काव्यालोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्श

वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्यक एकटा मुख्य विशेषता ई अछि जे ओ मैथिलीक रचनात्मक भाषाकेँ जनजीवनक अस्थिरता, सामाजिक प्रश्न आ आलोचनात्मक विवेकसँ जोड़ैत छथि।

मल्लिकक साहित्य-चिन्तनमे **रचनात्मक स्वतन्त्रता** आ **ऐतिहासिक उत्तरदायित्व** एक-दोसरक विरोधी नहि।

अग्नि-शिखा

अथातो काव्य जिज्ञासा

प्रथम पुरुष

नाटक आ रंगमंच

प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति

SCAN · VISIT VIDEHA



VIDEHA.CO.IN

<https://www.videha.co.in/>



VIDEHA E-JOURNAL

<https://videha-ejournal.github.io/videha/>